बरवाला की घटना की सच्चाई

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा।
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई धर्म नहीं कोई न्यारा।।

मुद्रक :-
श्री रामकिशन साहू, वार्ड नं. 4 शाहपुर
जिला-बुरहानपुर-450331 (मध्य-प्रदेश)

लेखक :-
प्रोफैसर श्री प्रहलाद सिंह, Z-3
विक्रम युनिवर्सिटी कैम्पस, कोठी
पैलेस के पास, उज्जैन (मध्य-प्रदेश)

विषय सूची

क्रम सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	भूमिका (बल तथा पद का दुरूपयोग न करें)	I-VI
2.	देशद्रोही कौन?	1
	◆ ईशा मसीह जी (इसाई धर्म के प्रवर्तक) के साथ घटना	2
	◆ गुरु अर्जुन देव जी के साथ घटना	3
	◆ गुरु तेग बहादुर जी के साथ घटना	4
	◆ गुरु गोविन्द सिंह जी का बलिदान	5
	◆ श्री ज्ञानेश्वर जी का संघर्षमय जीवन	5
	◆ निकोलस कोपरनिकस नामक व्यक्ति जो पोलैण्ड देश का रहने वाला था, के साथ घटना	6
3.	18 नवम्बर 2014 को बरवाला आश्रम की घटना का बीज किसने बोया?	6
	◆ केस नं. 428 (देशद्रोह) जो बनाया गया है, वह झूठा है	12
	◆ संत रामपाल जी पर दर्ज केस	13
	◆ झूठे मुकदमे नं. 427 दिनाँक 18-11-2014 की सच्चाई	14
	◆ झूठे मुकदमे नं. 429 दिनाँक 19-11-2014 की सच्चाई	14
	◆ देशद्रोह के झूठे मुकदमे नं. 428 की सच्चाई	16
	◆ संत जी पर देशद्रोह का मुकदमा किसी भी सूरत में नहीं बनता	17
	◆ हिसार के I.G. श्री अनिल राव का प्रतिशोध	19
4.	बाबा रामदेव का भारत की जनता पर उपकार	21
5.	जब न्यायधीश ही अन्याई बन जाऐं, तो देश का क्या होगा?	24
6.	यह अन्याय हो रहा है हमारे साथ	26
7.	वर्तमान के बिगड़े हालात कैसे सुधरेंगे?	27
8.	''सूक्ष्म वेद'' क्या है?	28
9.	राजनेताओं की कार्यशैली तथा लक्ष्य	30
10.	अवतार की परिभाषा	37

11. ब्रह्म ''काल'' के अवतारों की जानकारी 37
12. परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् सत्यपुरूष के अवतारों की जानकारी 38
13. सत्यपुरूष का वर्तमान अवतार 40
14. अमेरिका की महिला भविष्यवक्ता फ्लोरेंस की महत्वपूर्ण भविष्यवाणी 40
15. भाई बाले वाली जन्म साखी में प्रमाण 43
16. विश्व विजयेता सन्त 48
- संत रामपाल जी महाराज के विषय में ''नास्त्रेदमस'' की भविष्यवाणी 48
- नास्त्रेदमस के समर्थन में अन्य भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियाँ 55
- संत रामपाल जी महाराज का संक्षिप्त जीवन परिचय 57

''बल तथा पद का दुरूपयोग न करें''

''कुछ डरो परमात्मा से, भक्ति करो तो आत्मा से।
जो बल का दुरुपयोग करते हैं, वे किया अपना भरते हैं।।''

''सत्य कथा''

''जैन धर्म दर्शन'' पुस्तक में भगवान महावीर जी जोकि जैन धर्म के 24वें तीर्थकर हुए हैं, उनके अनेक जन्मों की जानकारी लिखी है। एक समय श्री महावीर जी का जीव धनवान राजा था। राजा को राजकाज की बहुत परेशानियां रहती हैं। उसे नींद भी ठीक से नहीं आती। इस कारण से वह राजा (श्री महावीर जी का जीव) सोने से पहले विशेष प्रकार की तान सुना करता था। कई प्रकार के वाद्य यन्त्रों को वादक बजाया करते थे। राजा ने अपने एक निजी नौकर से बोल रखा था कि जब मुझे निन्द्रा आ जाए तो बाजे को बन्द करा दिया करो। नौकर प्रतिदिन ऐसा ही करता था। एक दिन संगीत की तान सुनकर राजा को नींद आ गई, लेकिन संगीत की तान सुनकर नौकर इतना मस्त हो गया कि संगीत की तान को बन्द कराना भूल गया। राजा की निन्द्रा भंग हो गई। राजा ने नौकर से कहा कि मैंने तेरे से क्या बोल रखा है, संगीत की तान को बंद क्यों नहीं कराया? नौकर बोला हे परवरदिगार! मैं संगीत की धुन सुनने में इतना मस्त हो गया कि मुझे ध्यान ही नहीं रहा कि जनाब को कब नींद आ गई, क्षमा करो माई-बाप, आगे से ऐसी गलती कभी नहीं करूंगा। करबद्ध होकर नौकर ने क्षमा याचना की परन्तु राजा का बल और अहंकार उसके नाश का कारण बनता है। राजा ने वजीर से कहा कि शीशा पिघला कर गर्मा-गर्म इसके दोनों कानों में डाल दो। नौकर गिड़गिड़ाता रहा, रोता रहा परन्तु राज की ताकत को प्राप्त राजा ने एक नहीं सुनी अपितु जब तक उस नौकर के कानों में पिघला हुआ शीशा नहीं डलवा दिया, तब तक उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ। नौकर के कानों में गर्म शीशा डाला तो वह बुरी तरह चिल्लाया, मर गया री माँ, मर गया री माँ, क्षमा करो राजन्! तेरा बच्चा हूँ, भूल हो गई, फिर कभी ऐसी गलती नहीं करूँगा, आप तो माई-बाप हैं। परन्तु पिघला हुआ शीशा कानों में डाल दिया गया। दर्द के कारण कई दिनों तक नौकर चिल्लाता रहा। उसे सुनना बन्द हो गया। एक महीने बाद जख्म ठीक हुए।

मृत्यु उपरान्त उसी राजा (श्री महाबीर जैन जी का जीव) ने किसी जन्म में मनुष्य जन्म प्राप्त किया। युवा होने पर घर त्यागकर जंगल में बैठकर साधना करने लगा। एक भील जाति का व्यक्ति गायों को घास चराने के लिए उसी जंगल में ले जाता था, जिस जंगल में वह राजा का जीव साधना करता था। वह ग्वाला उस साधक को अपने खाने में से खाना खिलाता था तथा गायों का दूध पिलाता था। दोनों में घनिष्ठ मित्रता हो गई। एक दिन ग्वाले को किसी कार्यवश गाँव में जाना पड़ गया। ग्वाले ने तपस्वी से कहा महाराज मैं दो घण्टे के लिए गाँव जा

रहा हूँ। मेरी गायों का ध्यान रखना। मैं निर्धन व्यक्ति हूँ। ये गायें साहूकारों की हैं, यदि गुम हो गई तो साहूकार मेरे से गऊओं का मूल्य वसूल कर लेगा, मैं दे नहीं पाऊँगा तो मुझे मारेगा। तपस्वी ने कहा आप निश्चिन्त रहें, मैं ध्यान रखूंगा। कुछ समय पश्चात् तपस्वी समाधिस्थ हो गया और गऊऐं कहीं चली गई। जब ग्वाला वापिस आया तो देखा गऊऐं नहीं हैं। दूर-२ तक खोज करने पर भी गऊऐं नहीं मिली तो ग्वाले को तपस्वी पर बहुत क्रोध आया। उसने अपनी बाँस की लाठी बीच से तोड़ी, उससे पतली-२ एक अगुंली जितनी मोटी तथा एक फुट लम्बी फट्टी बनाई। उस तपस्वी से पूछा कि मेरी गायों का ध्यान क्यों नहीं रखा? जबकि मैं तेरे से बोल कर गया था। यदि ध्यान नहीं रखना था तो मना कर देता। तपस्वी ने कहा मैं समाधि लगा रहा था। इस कारण से भूल गया। ग्वाला बहुत क्रोध में था। उसने तपस्वी का सिर पकड़ा और एक-२ करके दोनों कानों में बाँस की फट्टी ठोक दी, तपस्वी के कानों के पर्दे फट गए, असहनीय पीड़ा होने लगी, कानों से रक्त बहने लगा, दर्द के मारे तपस्वी बुरी तरह चिल्लाने लगा। वह ग्वाला चला गया, फिर कभी उधर नहीं गया।

एक महीने के पश्चात् अचानक एक वैद्य उस जंगल में जड़ी-बूटियाँ लेने आया। वैद्य को तपस्वी की हालत देखकर दया आ गई। वैद्य ने धीरे-२ पहले एक कान की फट्टी निकाली, निकालते समय भी भयंकर दर्द हुआ। फिर दूसरे कान की फट्टी निकाली। बाँस की फट्टी में सली होती हैं जो बहुत गहरी चुभ जाती हैं। फट्टी निकालते समय वे सली भी लगी। कहने का भावार्थ है कि उस राजा के जीव ने उस गरीब नौकर को जो दण्ड दिया था (शीशा पिघला कर कानों में डाला था) नौकर कितना दुःखी हुआ था। वही नौकर वाला जीव ग्वाला रूप में जन्मा और अपना बदला लिया। जब वह तपस्वी राजा था, उसके पास सेना की ताकत थी, पुलिस थी। राजा ने कभी नहीं सोचा था कि मैं कभी राजा न रहूँगा, तब मेरा क्या होगा। अब वही राजा वाला जीव जंगल में अकेला था, कोई बचाने वाला नहीं था। इसलिए राजा हो चाहे रंक उसको परमात्मा के संविधान का ज्ञान होना अनिवार्य है। कुछ समय के लिए पद की ताकत प्राप्त करके इन्सान परमात्मा के विधान को भूल जाता है।

दिनाँक 18-11-2014 को 6 मासूमों की जान लेकर एक हजार के लगभग श्रद्धालुओं तथा सन्त रामपाल जी को जेल में डालकर, देशद्रोह का झूठा मुकदमा बनाकर श्री मनोहर लाल खट्टर सरकार फूली नहीं समा रही है। राजा प्रजा का पिता होता है। यदि पिता ही अपनी प्रजा रूपी संतान पर ऐसे जुल्म करेगा तो उस सरकार के सर्व अधिकारी तो न्याय पक्ष की बात कर ही नहीं सकते। उनको कीड़े पड़ते हैं तथा उनका अन्त समय बहुत बुरा होता है। भीष्म पितामह ने, जब द्रोपदी को भरी सभा में नंगा किया जा रहा था, उस समय सत्यपक्ष यानि न्यायपक्ष की बात नहीं कही। उसी का परिणाम युद्ध में भोगा, कई दिन तक सर सैय्या पर टँगा रहा, कराह-कराह कर मरा था। यही दशा सरकार के उन

पदाधिकारियों की होगी जो सत्तापक्ष में हैं या विपक्ष में कुछ शक्ति रखते हैं और सन्त रामपाल जी के तथा अनुयाईयों के साथ हो रहे अन्याय-अत्याचार के विषय में नहीं बोलते। सत्संग में यही याद दिलाया जाता है कि :-

मन नेकी कर ले, दो दिन का मेहमान।
मात–पिता तेरा कुटम्ब कबीला, कोए दिन का यह तन–मन का मेला।
अन्त समय उठ चलै अकेला, तज माया अभिमान।।
सर्व सोने की लंका थी, रावण से रणधीरम्।
एक पलक में राज बिराजी, जम के पड़े जंजीरम्।।
मर्द–गर्द में मिल गए, रावण से रणधीर।
कंश केशी चाणूर से, हिरणाकुश बलबीर।।
तेरी क्या बुनियाद है, जीव जन्म धर लेत।
गरीबदास हरि भक्ति बिन, तेरा खाली रह जा खेत।।

भावार्थ है कि मर्द गरद में मिल गए ---------

रावण अपने आपको मर्द अर्थात् शूरवीर मानता था। किसी से नहीं डरता था। परमात्मा से डर कर न रहने के कारण गर्द अर्थात् मिट्टी में मिल गया। स्वर्ण की लंका नगरी का राजा था, सर्व सम्पत्ति त्याग कर खाली हाथ चला गया। न राज रहा, न धन रहा, न काया (शरीर) जिसका बहुत गर्व था।

गरीब दास जी महाराज जी ने कहा है :-

काया तेरी है नहीं, माया कहाँ से होय।
चरण कमल में ध्यान रख, इन दोनों को खोय।।

भावार्थ :- हे भोले जीव! यह शरीर भी तेरा नहीं है। जिस माया (धन-सम्पत्ति) को तू अपनी मान रहा है, वह तेरी कैसे है? यह भूल अध्यात्म ज्ञान के अभाव से लगी है। मनुष्य जन्म का मूल उद्देश्य भक्ति करना है। इसलिए इन दोनों को मिथ्या जानकर परमात्मा के चरण कमलों में ध्यान रख अर्थात् परमेश्वर की भक्ति कर। इसी प्रकार राजा कंस, उसका मित्र केशी राक्षस तथा कंस के राज्य का सबसे शक्तिशाली पहलवान चाणूर (जो चमार जाति से सम्बन्ध रखता था) तथा हिरणाकुश राजा जो बहुत बलवान तथा सिद्धियुक्त था, वह भी अन्याय तथा अत्याचार करके बुरी मौत मरा, निन्दा का पात्र बना।

हे सामान्य जीव! जब ऐसे-ऐसे सम्पन्न राजा, पहलवान आदि भगवान से न डरकर कोरी कुबुद्ध करके मनुष्य जीवन को नष्ट करके खाली हाथ चले गए तो तेरी क्या बुनियाद है अर्थात् तेरा क्या आधार है? तू कर्मों के वश हुआ भिन्न-२ प्राणियों के शरीर में जन्म धर लेता है, वहाँ कष्ट उठाता है। यदि भक्ति नहीं करोगे तो आपका मनुष्य जीवन ऐसे व्यर्थ हो जाएगा जैसे जिस खेत में बीज बोए बिना खेत खाली रह जाता है, किसान बहुत हानि उठाता है। इसलिए दो दिन के राजपाट व सरकारी पद प्राप्त करके हवा में मत उड़, अपनी औकात को पहचान, अपने से दुर्बल को कभी तंग न करना, नहीं तो उस निर्बल की आत्मा की हाय

आपका सर्वनाश कर देगी। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है :-

कबीर दुर्बल को ना सताईए, जाकि मोटी हाय।
बिना जीव की स्वांस से, लोह भस्म हो जाए।।

भावार्थ :- पुराने समय में लुहार (कारीगर) पशु के चर्म की धौंकनी बनवाते थे। जिससे अपने अहरण की आग जलाने व तेज अग्नि प्रज्वलित करने के लिए पंखे की तरह हवा लगाते थे। वह निर्जीव पशु की खाल से निर्मित धौंकनी ऐसे चलती थी जैसे मनुष्य स्वांस लेता और छोड़ता है। उस धौंकनी की आवाज ऐसे निकलती थी जैसे किसी व्यक्ति पर विशेष कष्ट आ गिरा हो ''वह हाय घालता है'' अर्थात् दुःखी होकर अन्दर-२ कष्ट महसूस करके मुख से श्वांस छोड़ता है। वह निर्बल व्यक्ति उस प्रबल व्यक्ति को जुबान से कुछ नहीं कह सकता क्योंकि वह और अधिक कष्ट दे सकता है। इसलिए अन्दर-ही अन्दर परमात्मा से पुकार करता है। उसकी हाय उस प्रबल व्यक्ति का नाश कर देती है। इसलिए सतर्क किया है कि जब बिना जीव की श्वांस (धौंकनी की हाय-हाय) से फौलाद भी पिघल जाता है तो जीवित जीव की श्वांस की हाय से तो और अधिक नाश उस व्यक्ति का हो जाएगा जो दुर्बल को सताता है। इसलिए कहा है कि दुर्बल को दुःखी मत करो, ''जीओ और जीने दो''।

श्री मद्भगवत् गीता अध्याय 9 श्लोक 30 में कहा है कि यदि कोई अतिश्य दुराचारी (परस्त्री गमन करने वाला) है और वह भक्त है तो उससे नफरत नहीं करनी चाहिए। उसको साधु समान समझना चाहिए। वह सुधर कर भक्ति करके मोक्ष प्राप्त कर लेता है। कई व्यक्ति कहते हैं कि सत्संग में सब लफंगे पुरूष तथा लफंगी (चरित्रहीन) स्त्रियाँ जाती हैं। उनसे निवेदन है कि आपके ये विचार सांसारिक हैं, आध्यात्मिक नहीं हैं, मानते हैं कि सत्संग में कुछ बदनाम स्त्री-पुरूष भी जाते हैं। यदि वे सत्संग में नहीं जाऐंगे तो उनको भले-बुरे का ज्ञान कैसे होगा? वे कैसे सुधरेंगे? जैसे मैला कपड़ा यदि साबुन और पानी तथा धोबी के सम्पर्क में ही नहीं आएगा तो स्वच्छ कैसे होगा? यदि सत्संग में जाता है और फिर भी गलती करता है तो वह अपनी ही हानि करता है, वह भक्त नहीं है। यदि कोई कहे कि ऐसे व्यक्ति सत्संग में क्यों जाते हैं? वे सत्संग में जाओ या न जाओ, वे व्यक्ति स्थाई तौर पर तो किसी गाँव या शहर में रहते हैं तो क्या कोई यह कहे कि ये निकम्मे व्यक्ति गाँव में क्यों रहते हैं? सत्संग में तो वे महीने या 15 दिन में जाते होंगे और गाँव या शहर में महीने में 25 दिन रहते हैं। क्या पूरा गांव या शहर बुरा बन गया? नहीं। जैसे गाँव-शहर के व्यक्ति उनसे परीचित होते हैं। उनको मुँह नहीं लगाते, उसी तरह वे स्त्री-पुरूष सत्संग में जाते हैं तो सत्संगियों को पता होता है। वे उनको मुँह नहीं लगाते अपितु अन्य को भी सतर्क करते हैं कि इनसे सावधान रहना।

◆ *एक ऐसी परम्परा-सी बन गई है कि यदि किसी को बदनाम करना है तो उस व्यक्ति का नाम किसी स्त्री से जोड़ दो, बस! फिर कुछ कहने-करने की*

आवश्यकता नहीं। यदि कोई व्यक्ति समाज में प्रतिष्ठावान है तो उसकी उस बुराई पर कोई ध्यान नहीं देता क्योंकि उससे डर लगता है और उससे बहुत से कार्य सिद्ध करने होते हैं।

एक बार भारत के प्रधानमन्त्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी थे। उन्होंने विवाह नहीं कराया था। पत्रकारों ने प्रशंसा करते हुए कहा कि भारतवर्ष का सौभाग्य है कि आप जैसे कुंवारे तथा ब्रह्मचारी प्रधानमन्त्री मिले हैं। श्री अटल जी ने कहा कि मैं कुंवारा तो हूँ परन्तु ब्रह्मचारी नहीं हूँ। यह खबर समाचार पत्रों में छपी।

एक कांग्रेसी व्यक्ति अपने पड़ोसी भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता के पास वह समाचार पत्र लेकर गया और कहा कि ''क्या तुम भी मुँह दिखाने योग्य हो? आपका प्रधानमन्त्री दुराचारी है। चुल्लूभर पानी में डूब कर मर जाओ''। बी. जे.पी. का कार्यकर्ता बड़ा कुशल तथा सहनशील व्यक्ति था। उसको पता था कि यह कांग्रेसी लड़ने के लिए आया है। उसने कहा कि भाई साहब राजनेता तो आज कुछ ब्यान देते हैं, कल खण्डन कर देते हैं। आप यह बताओ कि आप किस परमात्मा को इष्ट मानते हो, मैं भी भक्ति करना चाहता हूँ, मैं तो राजनीति से तंग आ चुका हूँ। कांग्रेसी कार्यकर्ता ने कहा :- मैं श्री कृष्ण भगवान को इष्ट मानता हूँ और प्रत्येक पूर्णमासी को गिरीराज पर्वत की परिक्रमा करके आता हूँ। भारतीय जनता पार्टी वाले ने कहा वाह-वाह आपने इष्ट बड़ा ब्रह्मचारी चुन रखा है। यह बात सुनकर कांग्रेसी पर घड़ों पानी पड़ गया। बी.जे.पी. वाला बोला :- भगवान श्री कृष्ण ने सारे बृज की गोपियों की ऐसी-तैसी (SEX) की, राधा की ऐसी-तैसी की, जिस कारण से श्री कृष्ण जी का उर्फ नाम राधारमण गोपाल अर्थात् राधा गोढ़ कृष्ण भी कहा जाता है। और सुन! एक राजा ने 16 हजार औरतों को अपनी हवस पूर्ति के लिए रखा था। लेकिन उनका उदर भी ठीक से नहीं भरता था। जब श्री कृष्ण जी को पता चला तो उस राजा से युद्ध करके उन सर्व स्त्रियों को अपनी द्वारिका नगरी में ले आया और अपनी पत्नी रूप में रखा।

श्री कृष्ण जी रूकमणी को बलपूर्वक उठाकर लाए थे। जब उसके भाई रूकमण ने विरोध किया तो रथ के पीछे बाँधकर घसीटा। रूकमणी की प्रार्थना पर उसकी जान बख्सी थी। इसके अतिरिक्त 7 विवाह और करा रखे थे। भगवान श्री कृष्ण जी की 16 हजार 8 रानियाँ मानी गई हैं, राधा जी Extra थी। श्री मद्भगवत् सुधासागर को पढ़ें तो और भी अच्छे चरित्र आपके इष्टदेव के पढ़ने को मिलेंगे। जैसे एक बार गोपियाँ नदी में निःवस्त्र होकर स्नान कर रहीं थी। सर्व वस्त्र नदी के किनारे रखे थे। भगवान श्री कृष्ण जी ने उनके वस्त्र उठाये और छिप गये। फिर गोपियों ने प्रार्थना की तो कहा बाहर आओ तब दूँगा। अन्त में गोपियाँ अपने गुप्तागों पर आगे-पीछे हाथ रख कर नदी के पानी से बाहर आई, क्या लिखें कलम काँप जाती है। हे भाई कांग्रेसी! आपके इष्टदेव की महिमा कहाँ तक वर्णन करूं और आप जी हमारे आदरणीय प्रधानमन्त्री जी की झूठी-सच्ची खबर

पढ़ कर इतने खफा हो गए। यदि हम अपने अन्दर झाँक कर देखेंगे तो कोई बुरा नहीं लगता।

सज्जनों! उस समय श्री कृष्ण जी का इसी बात पर विरोध होता था कि वह अच्छे चरित्र का राजा नहीं है। गोपियाँ रात्रि में अपने पतियों को सोता छोड़कर मुरली की धुन सुनकर जंगल में श्री कृष्ण जी के पास चली जाती थी। वर्तमान में करोड़ों व्यक्ति उनको प्रभु मानकर पूज रहे हैं। श्री कृष्ण जी उस समय भी प्रभु थे, आज भी प्रभु हैं। यदि उस समय उनको पहचाना होता तो सब सुदामा की तरह उनसे लाभ ले सकते थे।

भावार्थ है कि महापुरूषों को समय रहते पहचान कर लाभ उठाना चाहिए। सन्त रामपाल जी को पहचानने के लिए Website = www.jagatgururampalji.org में उनके सत्संग सुनें व पुस्तकें पढ़ें।

सज्जनों! सन्त रामपाल जी महाराज को व्यर्थ में झूठी अफवाहों के कारण बदनाम कर रखा है। वे वर्तमान में एक महान सन्त, महान समाज सुधारक तथा चरित्रवान महापुरूष हैं।

फिर भी दूध का धोया कोई नहीं है। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि :-

कबीर बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोए।
जब मन खोजा आपना, मुझ से बुरा न कोय।।

❖ *एक बार एक गाँव के बाहर एक स्त्री को कुछ लोग पीट रहे थे। अन्य गाँव वाले देख रहे थे, कह रहे थे, मारो और मारो यह कुलटा है, बदचलन है। एक सन्त वहाँ से गुजर रहा था। गाँव वाले जानते थे कि यह जिस किसी को शॉप देता है, उसका सर्वनाश हो जाता है। उस सन्त ने पूछा कि आप इस अबला को इतनी बेरहमी से क्यों पीट रहे हो?*

उत्तर मिला कि हे महाराज! यह बदचलन औरत है। सन्त ने कहा ठहरो! इसको मैं बताता हूँ ऐसे मारो। सन्त ने कहा कि सब दर्शक एक-२ पत्थर का टुकड़ा या छोटा डला उठा लो। सब ने एक-२ पत्थर या ईंट का रोड़ा उठा लिया। सन्त ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति इसको पत्थर मारे, परन्तु एक ध्यान रखना, पत्थर वही मारे जिसने कभी ऐसा पाप न किया हो। यदि किसी ऐसे व्यक्ति ने पत्थर मारा जिसने ऐसा दोष कभी भी किया है तो वह यहीं भस्म हो जाएगा। इतनी बात सुनते ही एक-२ करके सबके हाथ से पत्थर पृथ्वी पर गिर गए। एक ने भी पत्थर नहीं मारा। सन्त ने कहा जो व्यक्ति स्वयं बुराई करते हैं, वे अपनी बुराई छुपाने के लिए किसी की सुनी-सुनाई बातें अधिक उछालते हैं। अपने अन्दर झाँककर देखो, तब कोई बुरा नहीं मिलेगा। आप स्वयं ही उन सर्व गल्तियों को कर रहे होते हो।

दिनाँक 18-11-2014 को हुई बरवाला घटना की सच्चाई पढ़ें इसी पुस्तक में:-

"बरवाला की घटना"

"देशद्रोही कौन"

''भ्रष्टाचार के विरूद्ध प्रदर्शनकारियों को देशद्रोही बनाने की कुचेष्टा करना देश का दुर्भाग्य है।''

"पीछे से पछताओगे"

''जब तक सूरज चाँद रहेगा, सन्त रामपाल जी व इसके अनुयायियों तथा भारत का विश्व में नाम रहेगा।''

सन्त रामपाल दास जी ने सर्व धर्मों के सद्ग्रन्थों को पढ़कर उनको ठीक-ठीक जानकर "सार ज्ञान" मानव को दिया है। इसकी शुरूआत अपने भारत देश से की गई है क्योंकि वर्तमान में यदि कहीं कुछ दया शेष है तो वह भारत वर्ष में ही है। सन्त रामपाल दास जी ने भारत वर्ष को सर्व बुराइयों से रहित करने के उद्देश्य से तत्व ज्ञान अर्थात् यथार्थ अध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार हरियाणा प्राँत से शुरू किया। सन्त रामपाल दास जी के सत्संग प्रवचनों का आधार महान सन्त कबीर जी की अमृत वाणी हैं तथा उन्हीं वाणियों के समर्थन में अन्य धर्मों के सद्ग्रन्थों से भी प्रमाण मिला है जो कुल मिलाकर मानव को एक ही संदेश देते हैं। सन्त रामपाल दास जी का उद्देश्य यह है कि :-

1. भारतवर्ष नशा, माँसाहार, भ्रष्टाचार, दहेज प्रथा तथा भ्रूण हत्या आदि-आदि बुराईयों से पूर्ण रूप से मुक्त हो ताकि भारत फिर से सोने की चिड़िया के नाम से विश्व में प्रसिद्ध हो।

जीवित उदाहरण :- परमार्थ करते-करते सन्त रामपाल जी के 940 अनुयायी केन्द्रीय कारागार नं. 1 हिसार में झूठे देशद्रोह के मुकदमे में बन्द हैं। उनमें से कोई भी माँसाहार तथा नशा नहीं करता और न ही भ्रष्टाचार करता है। इसके अतिरिक्त सन्त रामपाल जी के लाखों अनुयायी भारत के अनेकों राज्य में हैं, उनकी जांच करें? वे कितने अच्छे नागरिक हैं, क्या इतने नेक व्यक्ति देशद्रोही हो सकते हैं? कभी नहीं। जिनके प्रवचनों से वे नेक नागरिक बने हैं, क्या वह सन्त देशद्रोही हो सकता है? जो व्यक्ति ऐसे नेक सन्त के साथ रहकर सत्संग में आने वाले देश के नागरिकों की सेवा करते थे तथा सन्त का विशेष सहयोग दे रहे थे, क्या वे देशद्रोही हो सकते हैं? कभी नहीं। एक षड़यंत्र के तहत देश के प्रधानमंत्री जी तथा प्रदेश (हरियाणा) के मुख्यमंत्री जी को सच्चाई से दूर रखा जा रहा है जिसके पीछे किसी शातिर व्यक्ति की योजना कार्य कर रही है।

दूसरा उदाहरण : सन्त रामपाल दास जी ने सत्संग किये हैं। प्रोजेक्टर पर प्रत्येक धर्म के सद्ग्रन्थों को सम्पूर्ण विश्व के श्रोताओं के रुबरू किया है। उनकी Video बनाई गयी तथा "ज्ञान गंगा'', ''गहरी नजर गीता में", ''अध्यात्मिक ज्ञान गंगा'', "भोगेगा अपना किया रे", ''मानवता का ह्रास तथा विकास'' आदि-आदि पुस्तकें बनाई गयी हैं जो Web Site- www. jagatgururampalji.org पर डाली गई

है, जिनको डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त **Internet** पर **"Youtube"** पर भी सत्संग की **Video** देखी जा सकती है। **"Satlok Ashram Barwala Satsang"** लिखकर तथा अन्य लिंक जो इस प्रकार हैं :-

1. अध्यात्मिक ज्ञान चर्चा सर्व शीर्ष शंकराचार्यों बनाम जगत गुरू रामपाल जी महाराज।

2. अध्यात्मिक ज्ञान चर्चा राधास्वामी पंथ के सन्त कुंवर जी महाराज बनाम जगत गुरू रामपाल जी महाराज।

3. अध्यात्मिक ज्ञान चर्चा जय गुरू देव पंथ मथुरा के सन्त तुलसी दास जी बनाम जगत गुरू रामपाल जी महाराज।

4. अध्यात्मिक ज्ञान चर्चा डॉ. जाकिर नाईक मुसलमान बनाम जगत गुरू रामपाल जी महाराज।

5. अध्यात्मिक ज्ञान चर्चा श्री मधु परमहंस जी महाराज रांजडी (जम्मू) बनाम जगत गुरू रामपाल जी महाराज।

6. अध्यात्मिक ज्ञान चर्चा आर्य समाज के प्रधान वक्ताओं बनाम जगत गुरू रामपाल जी महाराज।

7. अध्यात्मिक ज्ञान चर्चा महामण्डलेश्वर गीता मनीषि ज्ञानानन्द जी महाराज वृन्दावन बनाम जगत गुरू रामपाल जी महाराज।

8. अध्यात्मिक ज्ञान चर्चा इस्कॉन प्रमुख श्री महामन्त दास बनाम जगत गुरू रामपाल जी महाराज।

9. अध्यात्मिक ज्ञान चर्चा राधास्वामी आगरा, सच्चा सौदा सिरसा बनाम जगत गुरू रामपाल जी महाराज।

10. अध्यात्मिक ज्ञान चर्चा दामा खेड़ा के महन्त श्री प्रकाश मुनि नाम साहेब बनाम जगत गुरू रामपाल जी महाराज।

11. अध्यात्मिक ज्ञान चर्चा हंसादेश प्रमुख सतपाल जी महाराज बनाम जगत गुरू रामपाल जी महाराज।.....

को लिखकर सर्च करें। आप जी उपरोक्त ज्ञान चर्चा की **Video Download** भी कर सकते हैं। कुछ सज्जन कहते हैं कि अध्यात्मिक चर्चा तो आमने-सामने बैठें, तब मानी जाती है। उनसे निवेदन है कि जैसे मीडिया वाले कश्मीर के मुद्दे पर सब राजनैतिक पार्टियों से प्रश्न करके उनके विचार रिकॉर्ड करके टी.वी. पर चला देते हैं, स्थिति स्पष्ट हो जाती है कि कौन क्या कहता है? इसी प्रकार साधना टी.वी. वालों ने उपरोक्त सब सन्तों तथा सन्त रामपाल जी महाराज के विचार रिकॉर्ड किए और अध्यात्मिक ज्ञान चर्चा नामक प्रोग्राम के तहत टी.वी. पर चला दिए, जिससे हमें पता चल गया कि किसको कितना अध्यात्मिक ज्ञान है, यदि सन्त रामपाल दास जी को वक्त रहते नहीं पहचाना तो भारतवासियों को बाद में बहुत पाश्चाताप होगा।

❖ ईशा मसीह जी के साथ घटना :- जैसे ईसाई धर्म के प्रवर्तक ईशा मसीह जी को लोग उस समय नहीं पहचान पाए, उस समय के धर्मगुरूओं ने उस महान

आत्मा का घोर विरोध किया तथा वहाँ के गवर्नर को सत्य न बताकर सन्त ईशा जी को बदनाम करके तथा धर्म का द्रोही, देश का द्रोही बताया। गवर्नर ने ठीक से जाँच नहीं की। उन दुष्ट धर्मगुरूओं के दबाव में आ गया व अन्य राजकर्मियों तथा अधिकारियों ने भी गवर्नर जी को सन्त की मिथ्या बुराई ही बताई, गवर्नर की आत्मा की पुकार फिर भी निकली, उसने उपस्थित विरोधी जन समुदाय से कहा कि सन्त कभी बुरा नहीं होता। धर्मगुरूओं से भ्रमित भोली जनता भी बहुसँख्या में गवर्नर जी के कार्यालय के सामने खड़ी थी, सर्व ने कहा इस देशद्रोही तथा धर्मद्रोही को क्रश करो-क्रश करो, उस समय ईशा जी की आयु 32 वर्ष थी। वे कहते थे कि मैं परमात्मा का बेटा हूँ, मुझे परमात्मा ने जनता के हित के लिए भेजा है। मैं सत्य आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार कर रहा हूँ जिसका वर्तमान के धर्मगुरूओं को ज्ञान नहीं है। परन्तु उस मसीह की एक नहीं सुनी तथा एक अंग्रेजी के अक्षर टी (T) के आकार की लकड़ी बनाकर ईशा जी को उस पर टाँग दिया और जमीन में गाढ़ दिया। उनके हाथों तथा टाँगों में बड़ी-बड़ी लोहे की कीलें (मेखें) गाढ़ दी, वे मृत्यु के समय तक उसी तरह तड़फते रहे और एक संत की तरह यही कहते रहे कि हे प्रभु! इन भोले इन्सानों को क्षमा करना, इन्हें ज्ञान नहीं है। इस प्रकार उस महापुरूष के शरीर का अन्त किया गया।

वर्तमान में आधे से अधिक विश्व उस महापुरूष का अनुयायी (ईसाई) है। उन दुष्ट जनता के लोगों तथा दुष्ट धर्म गुरूओं तथा विवेकहीन गवर्नर को महापाप लगा। उस समय गवर्नर ही राज्य का मालिक, कर्मचारियों, अधिकारियों का मुखिया तथा बड़ा दण्डाधिकारी होता था। इतिहास गवाह है, उस गवर्नर का बहुत बुरा हाल हुआ। उस क्षेत्र में भूकंप आने प्रारम्भ हो गए, परन्तु किसी की बुद्धि में यह नहीं आया कि यह विनाश किस कारण से हो रहा है क्योंकि सर्व जनता ने यही मान रखा था कि एक बुरे व्यक्ति को मारा है, उसका कारण यह नहीं हो सकता। यही स्थिति आज सन्त रामपाल दास महाराज जी की है। एक दिन ऐसा आएगा कि पूरा विश्व भारत के महान सन्त के ज्ञान तथा भक्ति विधि का अनुसरण करेगा, भारत वास्तव में जगत गुरू सिद्ध तथा मान्य होगा। प्रथम भारत वर्ष की जनता सर्व विकार त्यागकर सन्त रामपाल जी महाराज के बताए मार्ग का अनुसरण करेगी तथा भारत विश्व का समृद्ध देश अर्थात् सोने (स्वर्ण) की चिड़िया होगा।

भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी से निवेदन है कि सन्त रामपाल जी महाराज के अध्यात्मिक ज्ञान की D.V.D सर्व चैनलों पर चलाने की अनुमति प्रदान करने की कृपा करें ताकि जनता स्वयं निर्णय करे कि कौन सन्त है व कौन असन्त है तथा बरवाला जिला (हिसार) में हुई घटना का जिम्मेवार कौन है?

2. ऐसा ही गुरू श्री अर्जुन देव जी के साथ किया :- इसी प्रकार सिक्ख धर्म के पाँचवें गुरू श्री अर्जुन देव के साथ घटना हुई थी :- श्री अर्जुन देव जी के समय सिक्ख धर्म का बहुत प्रचार हुआ। गुरू अर्जुन देव जी ने परमात्मा की महिमा की बहुत वाणी बोली है जो गुरू ग्रन्थ साहेब जी में महला-5 के नाम से

अंकित है। श्री अर्जुन देव जी ने पंजाबी लीपि का आविष्कार किया जिसे गुरू मुखी लीपि कहा जाने लगा। उस महापुरूष के विरूद्ध भी दिल्ली के मुसलमान राजा को भ्रमित करके उन पर अनेकों जुल्म किए गए थे। उनको लोहे की रोटियाँ पकाने वाली लोहे की बड़ी तई (तौवे) को अत्यधिक गर्म करके उस पर बलपूर्वक बैठाया गया, उनकी खाल जल गई। अन्त में गऊ (गाय) को मार कर उनको गाय की खाल में डालकर सीम (सिलाई) कर मरने के लिए मजबूर करने की योजना बनाई गई। अगले दिन यह कार्य करना था। वे महापुरूष रात्रि में चकमा देकर निकल गए तथा दरिया में जल समाधि ले ली।

आज सिक्ख धर्म में उस महापुरूष का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा है तथा वे चुगलखोर व्यक्ति तथा अन्यायी राजा पाप के भागी बनकर अपने कर्म खराब करके चले गए। बाद में अपने बुरे कर्मों के कारण उनके परिवार पर कहर टूटे। बाद में उनको भी तथा अन्य जनता के व्यक्तियों को अहसास हुआ कि इन व्यक्तियों ने एक निर्दोष महापुरूष को सताया था। इसलिए इनका यह हाल हुआ है।

3. श्री गुरू तेग बहादुर जी :- सिक्ख धर्म में गुरू तेगबहादुर जी नौवें सिक्ख गुरू थे। उनके पास कश्मीर के पण्डित आए और बताया कि गुरू जी मुसलमान मुल्ला तथा काजी हम हिन्दुओं को बलपूर्वक मुसलमान बनाकर हमारा धर्म परिवर्तन करा रहे हैं, कृप्या हमारा सहयोग करें, धर्म की रक्षा करें। गुरू तेगबहादुर जी ने उनको आश्वासन दिया कि ऐसा नहीं होने देंगे। आप निश्चिन्त रहो। गुरू जी ने मुसलमान काजियों तथा मुल्लाओं को समझाया कि आप जबरन किसी का धर्म न बदलवाऐं। अपने धर्म का प्रचार करो, यदि आपका धर्म अच्छा लगेगा तो अपने आप जुड़ेंगे जैसे हमारे सिक्ख पंथ में देखते ही देखते लाखों लोग जुड़ गए जो हिन्दू ही हैं। इस नेक राजा को मुल्ला तथा काजियों ने धर्म विरोधी माना। उस समय दिल्ली पर मुसलमान बादशाह का राज्य था, उसको भ्रमित किया कि एक सिक्ख धर्म और पनप रहा है। हमारे धर्म की निन्दा करता है, एक तेगबहादुर नाम का गुरू है, वह हिन्दुओं को मुसलमान धर्म के खिलाफ भड़काता है। इस प्रकार उन चुगलखोर व्यक्तियों ने दिल्ली के राजा को भड़काकर, सिक्ख गुरू श्री तेगबहादुर जी का शत्रु बना दिया। तत्कालीन राजा ने निष्पक्ष जाँच किए बिना ही गुरू जी को दिल्ली बुलाया तथा कहा कि या तो मुसलमान बन जा, नहीं तो तेरा सिर कलम कर देंगे। गुरू तेगबहादुर जी ने राजा के बार-बार कहने पर भी धर्म परिवर्तन करना स्वीकार नहीं किया तो दिल्ली के चौराहे पर उनका सिर काट दिया जहाँ पर वर्तमान में सिक्खों ने शीशगंज गुरूद्वारा बना रखा है। उस महापुरूष जी का नाम सिक्ख इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया है तथा करोड़ों शीश श्रद्धा से उस महापुरूष को नमन करते हैं तथा उन चुगलखोर दुष्ट लोगों तथा उस अन्याई राजा को करोड़ों आत्माऐं बद्दुआ दे रही हैं। वे लोग पाप के भागी बने, पशु-पक्षियों की योनियों को प्राप्त हुए, नरक के भागी बने व निन्दा के पात्र बनकर तथा सदा-सदा के लिए काला इतिहास बना कर चले गए। क्या वे सदा रहे जिन्होंने अपने स्वार्थ वश जुल्म किए तथा करवाए?

4. गुरू श्री गोविन्द सिंह जी का बलिदान :- इसी कड़ी में सिक्ख धर्म के दसवें तथा अंतिम गुरू गोविन्द सिंह जी पुत्र गुरू तेगबहादुर जी हुए। उन्होंने भी हिन्दू धर्म तथा सिक्ख पंथ की रक्षा के लिए अपना पूरा परिवार (चारों पुत्र तथा स्वयं) को कुर्बान कर दिया। वे भी उस समय के दुष्ट लोगों द्वारा फैलाए दुष्प्रचार के ही शिकार हुए थे। उन्होंने पाँच प्यारे तैयार किए थे, वे पाँचो पाँच जातियों के हिन्दू ही थे। उस समय एक विकार रहित जन समुदाय दस गुरूओं द्वारा तैयार किया गया था, जिनको दीक्षा लेना (शिष्य बनना) अनिवार्य था। पंजाबी भाषा में शिष्य को सिक्ख कहते हैं। पहले यह एक पंथ था जिसमें सर्व जातियों के व्यक्ति जुड़े थे। उनको उस पंथ के कुछ नियम पालन करना अनिवार्य था। आज उस महापुरूष श्री गुरू गोविन्द सिंह तथा उसके बहादुर बेटों को करोड़ों शीश नमन करते हैं, उनकी याद में मेले लगते हैं।

"जब तक सूरज चाँद रहेगा, इन महापुरूषों का नाम रहेगा"

5. श्री ज्ञानेश्वर जी का संघर्षमय जीवन :- महाराष्ट्र प्रान्त में ब्राह्मण परिवार में एक ज्ञानेश्वर जी महापुरूष थे। उनके पिता जी पुरोहित का कार्य करते थे। उस क्षेत्र में उनके बहुत से यजमान आचार्य भक्त थे जो उनसे धार्मिक अनुष्ठान कराते थे। ऐसे ही अन्य कई ब्राह्मण परिवार भी यही पुरोहित का कार्य किया करते थे। उन सबके यजमान बँटे हुए थे। उन्हीं से सब ब्राह्मणों की रोजी-रोटी अर्थात् परिवार पोषण चलता था। एक बार सन्त ज्ञानेश्वर जी के मन में परमात्मा प्राप्ति की प्रबल प्रेरणा हुई। वे घर त्याग कर वैराग्य धारण करके कहीं चले गए। पीछे से उनके हिस्से के यजमान अन्य ब्राह्मणों ने बाँट लिए। कुछ वर्षों के पश्चात् श्री ज्ञानेश्वर जी पुनः अपने गाँव लौट आए तथा वहाँ भजन-कीर्तन करने लगे तथा लोगों के धार्मिक अनुष्ठान करने लगे। अन्य ब्राह्मणों को ईर्ष्या हो गई कि यह अपने यजमान वापिस ले लेगा। हमारी आय कम हो जाएगी। इसलिए उन्होनें एक पंचायत करके निर्णय लिया कि इसको कोई यजमान नहीं देना है। वे श्री ज्ञानेश्वर जी को बदनाम करने लगे तथा उन्हें बहुत तिरस्कृत किया। एक दिन ज्ञानेश्वर जी ने तंग आकर आत्महत्या करने की सोची। परमात्मा की दया से उनकी बहन को प्रेरणा हुई कि तेरा भाई बहुत तंग किया जा रहा है, कहीं यह आत्महत्या न कर ले। जिस समय ज्ञानेश्वर जी यह विचार कर ही रहे थे बन्द कमरे में, उनकी बहन ने बाहर खड़ा होकर कहा कि हे भाई! आप आत्मघात न करना। यह महापाप लिखा है शास्त्रों में। जिस परमात्मा ने चौंच दी है, वह चुग्गा भी देता है। आप परमात्मा पर विश्वास रखो, आपने तो जनता के हित में बहुत कुछ करना है। अपनी बहन की बातें सुनकर श्री ज्ञानेश्वर जी ने आत्महत्या का उद्देश्य त्याग दिया। उसके पश्चात् उन्होंने श्री मद्भगवत गीता को सन्त वाणी में मराठी भाषा में लिखा। जैसे महर्षि वाल्मीकी द्वारा लिखी संस्कृत भाषा रामायण को सन्त श्री तुलसी दास जी ने सन्त भाषा (चौपाई-दोहों) में हिन्दी भाषा में लिखा, श्री ज्ञानेश्वर जी द्वारा लिखी मराठी भाषा में गीता को ज्ञानेश्वरी (मराठी भाषा में न्यानेश्वरी) कहते हैं। महाराष्ट्र के लोग इसी न्यानेश्वर अर्थात् ज्ञानेश्वरी

(गीता) का ही पाठ करते हैं। श्री ज्ञानेश्वर जी ने भी गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में यही लिखा है कि "सब धर्मों को छोड़कर मेरी शरण में आजा" सर्व पापों से छुड़ा दूंगा, चिन्ता करने से कोई लाभ नहीं"।

विरोधियों द्वारा फिर भी श्री ज्ञानेश्वर जी का दुष्प्रचार तथा विरोध जारी रहा। कई बार उनको मारने की भी कोशिश की गई। उनको निर्वाह की कठिनाई का अधिक सामना करना पड़ा। दुःखी होकर सन्त ज्ञानेश्वर जी ने धरती में गढ्ढ़ा खोदकर उसमें जीवित समाधि लेकर अपने जीवन का अन्त करना पड़ा। आज महाराष्ट्र में सन्त श्री ज्ञानेश्वर जी का नाम हर बच्चे-बच्चे की जुबान पर है तथा करोड़ों सिर उनकी समाधि पर झुकते हैं। उस महापुरूष की याद में मेले लगते हैं। जो उस महापुरूष की निन्दा करते थे, उनको परेशान तथा बदनाम करते थे, उनका उसी जीवन में बहुत बुरा हाल हुआ, वंश के वंश नष्ट हो गए। यदि वे सब बाँटकर पहले की तरह यजमान रख लेते तो महापाप से बच जाते। अन्त में वे क्या ''धन सिर पर उठा कर ले गये''? पापों का बोझ ही संसार से लेकर गये, निन्दा के पात्र बने, उनका काला इतिहास बना। इसलिए सभ्य मानव समाज से निवेदन है कि सन्त रामपाल जी को पहचानो, पाप के भागी न बनो, नहीं तो पछताओगे।

❖ एक निकोलस कोपरनिकस नामक व्यक्ति जो पोलैण्ड का रहने वाला था, उसको सन् 1543 में फांसी दे दी गई थी। उसने 400 वर्ष पूर्व कहा था कि पृथ्वी घूमती है, सूर्य के चारों ओर तथा अपने अक्ष पर भी घूमती है, जिससे दिन-रात बनते हैं। उस समय उसका घोर विरोध धर्मगुरूओं ने किया। राजा ने फाँसी की सजा सुना दी कि यह झूठा पाखण्डी है, देश के व्यक्तिओं को भ्रमित कर रहा है। अब 400 वर्ष पश्चात् उसकी बात सत्य सिद्ध हुई, अब उसकी आत्मा से क्षमा याचना की गई। इसी प्रकार आज जो सत्य आध्यात्मिक ज्ञान सन्त रामपाल जी महाराज बता रहे हैं, वह वर्तमान के धर्मगुरूओं को ऐसा ही लग रहा है जैसे उस समय पृथ्वी का घूमना असत्य लगता था। जबकी उनका अपना ज्ञान गलत था। इसी प्रकार वर्तमान में विश्व के सर्व धर्मगुरू सन्त रामपाल दास जी महाराज के तत्व ज्ञान को (जो पूर्ण रूप से सत्य हैं) असत्य मान रहे हैं तथा जनता को भ्रमित कर रहें है। इसकी जाँच के लिए पहले भारत की जनता से ही अनुरोध है कि सन्त रामपाल जी महाराज का तत्वज्ञान उनकी पुस्तकों में जो Web Site पर उपलब्ध हैं, स्वयं पढ़ें तथा D.V.D में देखें। उसके लिए पूर्व में लिखी Web Site तथा You Tube पर उपरोक्त लिंक से सर्च करके देखें।

❖ **18 नवम्बर 2014 को बरवाला आश्रम की घटना का बीज किसने बोया?** :- जैसा कि पहले वर्णन किया गया है कि सन्त रामपाल जी महाराज के तत्वज्ञान को सर्व वर्तमान के धर्मगुरू अर्थात् आचार्यजन गलत मानते हैं। जबकि सन्त रामपाल जी महाराज का ज्ञान शास्त्र प्रमाणित है तथा ''पृथ्वी घूमती है'' इस उदाहरण की तरह पूर्णरूपेण सत्य है। इसी के परिणामस्वरूप सन् 2006 में आर्य समाज के आचार्यों ने अपने अनुयायियों को भड़काया कि सन्त रामपाल दास

करौंथा आश्रम वाला महर्षि दयानन्द (जो आर्यसमाज के प्रवर्तक हैं) के सत्यार्थ प्रकाश नामक पुस्तक के ज्ञान को वेद विरूद्ध बता रहा है, वह महर्षि दयानन्द की निन्दा करता है। सन् 2005 में हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा जी बने जो अपने को तीन पीढ़ी से आर्य समाजी बताते हैं, उन झूठे-कपटी आचार्यों ने तत्कालीन मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा को भी भ्रमित करके अपने पक्ष में कर लिया। सबने मिलकर करौंथा आश्रम से सन्त रामपाल जी महाराज को भगाने तथा आश्रम पर कब्जा करने की योजना के तहत 12 जुलाई 2006 को करौंथा आश्रम (जिला-रोहतक) पर आक्रमण कर दिया। लगभग 20 हजार आर्यसमाजियों ने लाठी-डण्डे, जैली तथा हथियार आदि लेकर धावा बोल दिया। पुलिस ने पहले रोकने की कोशिश की, जिसमें एक युवक मारा गया। उसके परिवार को मुख्यमंत्री हरियाणा (तत्कालीन) श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने 5 लाख रूपये की ग्रांट दी तथा परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी दी तथा उसकी हत्या का मुकदमा सन्त रामपाल जी तथा उनके 38 अनुयाईयों पर बना दिया। मुकदमा नं. 198/2006 पुलिस स्टेशन सदर रोहतक, यह झूठा मुकदमा बनाया गया। एस.डी. एम. रोहतक ने करौंथा आश्रम अपने कब्जे में ले लिया तथा आदेश में लिखा कि :- आश्रम के संचालक तथा उपस्थित अनुयाईयों की जान को खतरा था क्योंकि लगभग 8 से 10 हजार लोगों ने आश्रम पर आक्रमण कर दिया। उस समय जिला रोहतक के एस. पी. तथा डी.सी. भी मौके पर थे। हम सबने विचार करके आश्रम को कब्जे में लेकर आश्रम को खाली करा लिया। हमने सैशन जज से प्रार्थना की कि जो धारा 148, 149, 302, लगाई गई है, यह गलत है। हम तो अपने आश्रम में बैठे थे, हमारे ऊपर आक्रमण किया गया है। लेकिन सैशन कोर्ट से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक हमें निराशा ही हाथ लगी। मुख्य गवाह जिसके नाम से F.I.R लिखी थी, स्वयं उसने भी कोर्ट में बयान दे दिये कि मेरे से पुलिस ने कोरे कागज पर दस्तखत करा लिए, मुझे नहीं पता करौंथा में क्या हुआ था, फिर भी सैशन जज ने केस समाप्त नहीं किया।

सैशन जज सुशील कुमार गुप्ता ने केस को समाप्त करने के लिए 30 लाख रूपये की रिश्वत माँगी। हमने असमर्थता जताई तो हमारे ऊपर जुल्म पर जुल्म करने शुरू कर दिए। एक भक्त अन्य मुकदमें में झज्जर जेल में बन्द था। वह तारीख पर नहीं आया। उसके जमानतियों पर एक-एक लाख रूपये का जुर्माना कर दिया। उनको पर्याप्त समय भी नहीं दिया। एक जमानती को तो चलो पाँच दिन का समय दे दिया। लेकिन दूसरे को तो एक दिन का भी समय नहीं दिया। सन्त रामपाल जी की स्थाई हाजरी माफी कर रखी थी। वह बिना किसी कारण के कैन्सिल कर दी तथा 14 जुलाई 2014 को कोर्ट में हाजिर होने के लिए आदेश कर दिए। हमने सुशील कुमार गुप्ता सैशन जज की शिकायत मुख्य न्यायधीश पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट में की तथा 30 लाख रूपये की रिश्वत माँगने की सर्व सत्य घटना लिखी, कोई कार्यवाही नहीं हुई, उल्टा हाईकोर्ट ने हमारे ऊपर सख्त बर्ताव रूख कर लिया। विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें पुस्तक "न्यायालय

की गिरती गरीमा", "सच बनाम झूठ", "भ्रष्ट जज कुमार्ग पर" जो आप "राष्ट्रीय समाज सेवा समीति" की Web Site:- www.rsss.co.in पर देख व डाउनलोड कर सकते हैं। हाईकोर्ट के कुछ भ्रष्ट जजों की आज्ञा से 14.07.2014 को सन्त रामपाल जी तथा अन्य 38 अनुयाईयों को जेल में डालना था। सबके बेल बॉन्ड कैन्सिल करने थे। जब संगत को यह पता चला तो लाखों की सँख्या में अपने गुरू सन्त रामपाल जी महाराज के दर्शन करने के लिए तथा भ्रष्टाचार के विरूद्ध प्रदर्शन करने के लिए हाथों में बैनर तथा ''सत साहेब'' के झण्डे लेकर रोहतक के लिए रवाना हो लिए। दिनाँक 13.07.2014 को शाम तक कई हजारों की संख्या में बस स्टैंड रोहतक के सामने वाले पार्क में इकट्ठे हो गए, रोहतक प्रशासन को पता चला तो एस.पी. रोहतक ने केवल सन्त रामपाल जी की हाजरी Video Confrence द्वारा हिसार कोर्ट में लगवाने के आदेश सैशन कोर्ट रोहतक द्वारा प्राप्त किए। सन्त रामपाल जी महाराज अपनी हाजरी लगवाने के लिए हिसार कोर्ट में सैशन जज रोहतक के आदेशानुसार 14.07.2014 को 10:20 सुबह ही पहुँच कर Video Confrence कक्ष में बैठ गए। उनके दर्शनार्थ हिसार कोर्ट के आस-पास कई हजारों की सँख्या में अनुयाई पहुँच गए। राष्ट्रीय समाज सेवा समीति के सदस्य अपनी काले रंग की पोषाक पहनकर सन्त रामपाल जी की सुरक्षा के लिए उनके साथ कोर्ट परिसर तक गए। वे परिसर के बाहर खड़े रहे। दिनाँक 14.07.2014 को किसी वकील की हत्या हो जाने के कारण हिसार वकील बार एसोसिएशन ने कोर्ट में कार्य न करने का निर्णय ले रखा था। उस दिन वर्क सस्पैंड था। जिस दिन वर्क सस्पैंड होता है, उस दिन कोई भी वकील कोर्ट रूम में नहीं जाता, केवल कुछ वकील जो उस दिन के लिए नियुक्त किए जाते हैं, वे ही जाते हैं। सन्त रामपाल जी सुबह 10:20 पर कोर्ट में गए। उससे पहले सर्व जज साहेबान कोर्ट में पहुँच चुके थे। दो वकील Video Confrence कक्ष में जबरन घुसे। वे आर्यसमाजी थे। उन्होंने पूर्व नियोजित योजना के तहत सन्त रामपाल जी के साथ हाथापाई करनी चाही परन्तु दो सेवादार तथा पुलिस S.P. ने उनको सफल नहीं होने दिया। उन्होंने शेष वकील साहबानों को गुमराह करके वकीलों की हड़ताल करा दी। जिसमें सारे हरियाणा तथा चण्डीगढ़ तक के वकीलों ने हिसार बॉर एसोसिएशन का साथ दिया तथा बहाना बनाया कि कोर्ट की अवमानना सन्त रामपाल के शिष्यों ने की है तथा वकीलों के साथ गलत व्यवहार किया है। हिसार के वकीलों ने एक लिखित शिकायत पत्र पंजाब तथा हरियाणा हाई कोर्ट चण्डीगढ़ के मुख्य न्यायधीश के नाम हिसार के सैशन जज के माध्यम से भिजवाया जिसमें लिखा था कि सन्त रामपाल के शिष्यों ने वकीलों के साथ गलत व्यवहार किया। कोर्ट के कार्य में बाधा डाली, जिस कारण से कोर्ट की अवमानना हुई है। दिनाँक 21.07.2014 को एक लिखित पत्र सैशन जज रोहतक श्री सुशील कुमार गुप्ता ने अपनी तरफ से मुख्य न्यायधीश पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट को भेजा कि सन्त रामपाल के शिष्य बहुत सँख्या में जजों के विरूद्ध बैनर लेकर इकट्ठे हुए तथा मुझे जान से मारने की धमकी दी। दिनाँक

21.07.2014 को सैशन जज रोहतक सुशील कुमार गुप्ता ने पत्र लिखा। दिनाँक 21.07.2014 को ही पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट के रजिस्ट्रार ने उसको रिकमण्ड कर दिया कि यह प्रथम दृष्टा रूप से बाबा रामपाल पर कोर्ट की अवमानना का केस बनता है। दिनाँक 22.07.2014 को हाईकोर्ट की डबल बैंच ने (जिसमें एक जज राजीव भल्ला तथा दूसरा अमोल रत्न सिंह जज थे) अपनी धारणा (Suo moto) से कोर्ट अवमानना का केस Crocp. cr.no. 12/2014 बना दिया कि सन्त रामपाल पर यह कोर्ट अवमानना का केस बनता है।

विचार करें_:-_पहले तो पुलिस झूठे केस सरकार के दबाव से बनाती थी। आशा थी कि कोर्ट में न्याय मिलेगा। अब भ्रष्ट जज भी झूठा मुकदमा बनाकर गरीब-असहाय जनता को प्रताड़ित करने लगे हैं। हम मानते है कि सब जज साहेबान भ्रष्ट नहीं है। कुछ प्रतिशत जज भ्रष्ट हैं। इस अवमानना के नोटिस में पंजाब तथा हरियाणा हाई कोर्ट का आदेश था कि रामपाल बाबा अपना स्पष्टीकरण स्वयं कोर्ट में उपस्थित होकर या अपने वकील के द्वारा कोर्ट में पेश करे। (Suo moto) का उत्तर वकील के माध्यम से कोर्ट में दे दिया। जिसमें कहा था कि सन्त रामपाल जी ने कोर्ट की अवमानना नहीं की, अपितु वे तो कोर्ट के आदेश का पालन करते हुए हिसार कोर्ट में हाजरी लगवाने गए थे। हिसार के वकीलों का पत्र तथा सैशन जज रोहतक का पत्र जिसके आधार से कोर्ट की अवमानना का केस बनाया गया है, भी स्पष्ट करता है कि सन्त रामपाल जी के शिष्यों ने गलती की है। ऐसे में सन्त रामपाल दास जी का कोई दोष नहीं है। हिसार कोर्ट में जो सुरक्षा के लिए काले वस्त्र पहन कर गए थे, वे राष्ट्रीय समाज सेवा समीति के सदस्य थे, जिसके संचालक मास्टर रामकुमार ढाका हैं। पंजाब तथा हरियाणा हाई कोर्ट ने मास्टर रामकुमार ढ़ाका को नोटिस भेजा। उसका उत्तर भी वकील के माध्यम से रामकुमार ढ़ाका नें स्वयं कोर्ट में उपस्थित होकर पेश किया, लिखा कि हिसार कोर्ट में जो कुछ भी किया वह राष्ट्रीय समाज सेवा समीति के सर्व 10 लाख सदस्यों ने मीटिंग करके निर्णय लेकर सर्व सहमति से किया है। फिर भी हमने ऐसा कोई कार्य नहीं किया जिससे माननीय न्यायालय की अवमानना हुई है या कोर्ट के कार्य में बाधा पहुँची हो। राष्ट्रीय समाज सेवा समीति के अधिकतर सदस्य सन्त रामपाल जी के शिष्य हैं, सन्त रामपाल जी ने किसी को नहीं बुलाया था। सब स्वईच्छा से हिसार कोर्ट के पास पहुँचे थे। (सड़क सब खाली थी। भक्त सड़कों के किनारों पर तथा डिवाईडर पर खड़े थे। हिसार पुलिस ने स्वयं ही रोड़ पर यातायात रोक रखा था) कोर्ट ने आदेश पारित किया कि 5 नबम्बर 2014 को सन्त रामपाल दास, मा. रामकुमार ढ़ाका, राष्ट्रीय समाज सेवा समीति के सर्व सदस्य तथा राष्ट्रीय समाज सेवा समिति की कार्यकारिणी के कार्यकर्ता सदस्य तथा डा. ओमप्रकाश हुड्डा कोर्ट में उपस्थित हों। फिर आदेश आया कि जो राष्ट्रीय समाज सेवा समीति के सदस्य दिनाँक 14-07-2014 को हिसार गए थे, उनका नाम व पूरा पता एक सप्ताह के अन्दर पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट में जमा कराऐं। दिनाँक 24-09-2014 के आदेश में कहा कि

कोर्ट में जो अवमानना की है, वे बाबा रामपाल के अनुयाई थे। यदि रामपाल उनको मना करता तो वे हिसार नहीं जाते। इसलिए बाबा रामपाल दोषी हैं।

विचार करें :- यदि बच्चे गलती करें तो क्या पिता को दोषी ठहराया जा सकता है, ऐसे आदेश के पीछे जजों की क्या मनसा है? स्पष्ट है। एक लाख सदस्यों के नाम तथा पते की लिस्ट बनाकर हाईकोर्ट चण्डीगढ़ में पेश करके प्राप्ति रसीद प्राप्त कर ली।

जब माननीय भ्रष्ट जजों को पता चला कि एक लाख सदस्य दिनाँक 05.11.2014 को कोर्ट में आऐंगे। वे इससे भयभीत हो गए तथा दूसरा आदेश कर दिया कि केवल राष्ट्रीय समाज सेवा समीति की कार्यकारिणी के सदस्य ही दिनाँक 05.11.2014 को माननीय पंजाब तथा हरियाणा कोर्ट में उपस्थित हों। उनकी नाम-पते की लिस्ट कोर्ट में पेश करें। इस आदेश में न तो सन्त रामपाल जी को पेश होने का आदेश था, न रामकुमार ढ़ाका को पेश होने का आदेश था। राष्ट्रीय समाज सेवा समीति की कार्यकारिणी के सर्व सदस्य 11 हजार 1 सौ 11 हैं। उनके नाम व पते की लिस्ट पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट में पेश करके प्राप्ति रसीद ले ली।

उसी दौरान यह केस माननीय पंजाब तथा हरियाणा के माननीय भ्रष्ट तथा अनुभवहीन जज श्री एम. जॉयपाल की डबल बैंच में लगा। माननीय भ्रष्ट जजों को पता चला कि 11 हजार 111 सदस्यों की लिस्ट जमा हो गई है, सब कोर्ट में आऐंगे। माननीय भ्रष्ट-अन्याई जज फिर काँप गए। उसने आदेश दिया कि दिनाँक 05-11-2014 को केवल राष्ट्रीय समाज सेवा समीति की कार्यकारिणी के सर्व सदस्य, रामकुमार ढ़ाका तथा बाबा रामपाल जी ही कोर्ट में पेश हों, यह आदेश उसने दिनाँक 03-11-2014 को किया। फिर दिनाँक 04-11-2014 को आदेश किया कि केवल बाबा रामपाल तथा मास्टर रामकुमार ढ़ाका ही दिनाँक 05-11-2014 को कोर्ट में पेश हों।

इसको कह सकते हैं तानाशाही तथा ''घर की बही काका लिखणिया'' अर्थात् सरकारी कागज-स्याही और (**ink**) लिखने वाले माननीय भ्रष्ट जज, कुछ आदेश करो। यह है मनमानी दादागिरी माननीय भ्रष्ट जजों की। अपने आदेश को स्वयं जज महोदय बदल नहीं सकते, चाहे डबल बैंच भी क्यों न हो। दिनाँक 24-09-2014 के आदेश को चार बार बदल कर पाँचवां आदेश किया। वह भी पहले दिन दिनाँक 04-11-2014 को किया, दिनाँक 05-11-2014 को हाजिर हो। सभी तक यह आदेश कैसे पहुँच सकता है, दिनाँक 05-11-2014 को लगभग एक लाख राष्ट्रीय समाज समीति के सदस्य दिनाँक 24-09-2014 के आदेश का पालन करते हुए चण्डीगढ़ पहुँच गए। जिनको पंचकुला में चण्डीगढ़ की सीमा के ऊपर पुलिस ने रोक दिया, कोर्ट में नहीं जाने दिया। दिनाँक 05-11-2014 को सन्त रामपाल जी तथा मा. रामकुमार ढ़ाका के "गिरफ्तारी वारंट" जारी कर दिए। बरवाला आश्रम में पूरे वर्ष के पूर्व के निर्धारित सत्संग कार्यक्रमों का सत्संग दिनाँक 07-11-14 से दिनाँक 09-11-14 तक शुरू हुआ। सन्त रामपाल दास जी को तथा मा. रामकुमार जी को दिनाँक 10-11-2014 को हाजिर होने को आदेश था। मा. रामकुमार ढाका ने दिनाँक 10-11-2014 को हाजिर होकर जमानत करा ली।

परन्तु सन्त रामपाल दास जी दिनाँक 08-11-2014 को शाम 03 बजे अचानक अस्वस्थ हो गए। उनके छाती में बाईं ओर बहुत दर्द होने लगा। बरवाला के डा. अनन्तराम से चैक कराया गया। प्रशासन बरवाला तथा हिसार को भी सूचित किया गया। डी.सी. हिसार ने वास्तविक्ता की जाँच करने के लिए सरकारी हस्पताल हिसार से डॉक्टरों का पैनल गठित किया। जिसने सन्त रामपाल जी के स्वास्थ्य की जाँच सतलोक आश्रम बरवाला में जाकर की तथा उन्होंने भी बैड-रैस्ट तथा यात्रा न करने की लिखित राय दी। उन्होंने 72 घन्टे का बैड-रैस्ट तथा यात्रा न करने की राय दी जिसके अनुसार दिनाँक 11-11-2014 की शाम 5 बजे तक का समय था। चण्डीगढ़ हाईकोर्ट में पेश होने की तारीख 10-11-2014 थी। उस दिन मेडिकल पेश किया गया, परन्तु दुर्भाग्यवश तथा दुर्भावनावश जज श्री M. Joypaul की खण्डपीठ ने उसे स्वीकार नहीं किया। यह मेडिकल हरियाणा के D.G. ने स्वयं माननीय पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट में पेश किया तथा बताया कि वे अस्वस्थ हैं, डॉक्टरों के पैनल ने बैड-रैस्ट तथा यात्रा न करने की राय दी है। परन्तु जज साहेबान ने एक नहीं सुनी तथा दिनाँक 17-11-2014 तक हर हालत में पेश करने का सख्त आदेश कर दिया। उधर सन्त रामपाल दास जी को आई. सी.यू. में ऑक्सीजन पर रखा हुआ था। दिनाँक 12-11-2014 को हॉर्ट के स्पेस्लिस्ट डॉक्टर जो दिल्ली से अनन्त राम हॉस्पिटल बरवाला में कार्यरत था, उसने सन्त रामपाल दास जी की जाँच करके बताया कि इनको पूर्ण स्वस्थ होने के लिए 7 दिन का बैड-रैस्ट, यात्रा न करने, टी.वी. न देखने, समाचार पत्र न पढ़ने की राय दी जाती है। दिनाँक 14-11-2014 को प्रशासन ने आश्रम की बिजली-पानी की लाईन काट दी। दिनाँक 17-11-2014 तक प्रशासन का रवैया ढुलमुल था। सन्त रामपाल जी के स्वास्थ्य के विषय में जानकारी प्रशासनिक अधिकारियों को दी जाती रही। दिनाँक 16-11-2014 को कुछ फोर्स भी आश्रम से हटाकर हिसार ले गए। आश्रम में एक लाख के लगभग अनुयायी सत्संग सुनने आए थे। सन्त के स्वस्थ न होने के कारण वे उनके दर्शन नहीं कर सके, वे कह रहे थे कि हम गुरू जी के दर्शन करके ही वापिस जाऐंगे। डॉक्टर ने दिनाँक 19-11-2014 तक ठीक होने का आश्वासन दे रखा था।

हिसार प्रशासन ने हाईकोर्ट के जजों को दिनाँक 17-11-2014 को बताया कि सतलोक आश्रम में लगभग 70 हजार बच्चे, वृद्ध, स्त्रियों सहित अनुयाई उपस्थित हैं, ऐसी स्थिति में कोर्ट के आदेश की पालना करने से बहुत अधिक जान-माल की हानि हो सकती है। कुछ अधिक समय दिया जाए, परन्तु जजों की हठधर्मी के सामने सरकार ने दिनाँक 18-11-2014 को मासूम बच्चों, वृद्धों, रोगियों को मार-पीटकर भगाकर सन्त रामपाल जी को गिरफ्तार करने की कार्यवाही कर दी, पुलिस तथा CRPF, RAF के द्वारा बेरहमी से लाठीचार्ज किया गया। रॉकेट बम और अश्रु गैस के गोले आवश्यकता से अधिक फैंककर, सर्दी के मौसम में ठण्डे पानी की बौछार लगातार मारकर अत्याचार किया। जिस कारण से 5 स्त्रियों तथा एक बच्चे की मृत्यु हो गई, फिर भी सफलता नहीं मिली।

दिनाँक 19-11-2014 को शाम को डॉक्टर के बताए बैड-रैस्ट का समय पूरा हो गया था। सन्त रामपाल जी ने स्वयं पुलिस को आत्मसमर्पण कर दिया।

❖ विचार करें :- राष्ट्रीय समाज सेवा समीति के सदस्य जो सन्त रामपाल दास जी के शिष्य भी थे, आश्रम के 40 फुट ऊँचे सैड पर खड़े होकर तथा काली पोषाक पहनकर, अपने कबीर पंथ का प्रतीक "सत्य साहेब" लिखा झण्डा एक डण्डे में डालकर शान्तिपूर्वक लिए खड़े थे तथा अपने गुरूजी रामपाल जी की जय तथा परमात्मा की प्रार्थना करके अपने गुरू जी के स्वस्थ होने की मंगल कामना कर रहे थे। उनको पता था कि पुलिस कोई जोर-जबरदस्ती नहीं करेगी। आश्रम के मुख्य द्वार पर तथा सड़क के दोनों ओर राष्ट्रीय समाज सेवा समीति के सदस्य तथा उनका परिवार शान्तिपूर्वक भ्रष्टाचार के विरूद्ध प्रदर्शन कर रहे थे।

❖ दिनाँक 18-11-2014 को लगभग 12.30 P.M. पर पुलिस बल ने अचानक सतलोक आश्रम बरवाला पर आक्रमण कर दिया और कहर ढ़हा दिया। सतलोक आश्रम में कई परिवार अपने बच्चों को यहीं पढ़ाते थे। कई वृद्ध स्त्री-पुरूष भी स्थाई रूप से रह रहे थे तथा बहुत से रोगी व्यक्ति भी सत्संग सुनने आए थे। सबको मार-पीटकर आश्रम से भगा दिया। बाद में सन्त को बदनाम करने के लिए पुलिस ने स्वयं गलत वस्तु रखकर मीडिया में दुष्प्रचार किया। यदि वे वस्तुऐं तथा अफवाऐं सच्ची थी तो चालान के समय कोर्ट में पेश करती। जबकि पुलिस ने बाद में सब भक्तों को मार-पीटकर मनघड़न्त कहानियाँ लिखकर दस्तखत करा लिए और अजब कहानी गढ़ी गई कि गवाह भी भक्त तथा आरोपी भी भक्त और झूठ से ओतप्रोत देशद्रोह का मुकदमा नं. 428/2014 P.S. Barwala बना दिया तथा हमारी जो भक्त बहनें पुलिस कार्यवाई से मरी, उनका मुकदमा 302 PC भी हमारे भक्तों पर बना दिया। इसे कहते हैं जल्लाद कर्म करना तथा अन्याय और अत्याचार कर निष्पाप व निरपराध भक्तों पर बल का दुरूपयोग करके पापों को इकट्ठा करना।

❖ केस नं. 428 जो देशद्रोह का बनाया है यह झूठा है :- दिनाँक 20-11-2014 माननीय पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट ने डी.जी. हरियाणा से शपथ पत्र पेश करने को कहा जिसमें कहा गया कि सरकार बताए कि कितने हथियार आश्रम से बरामद किए गए। दिनाँक 28-11-2014 को डी.जी. पुलिस हरियाणा ने शपथ पत्र (Afidavite) में बताया कि सतलोक आश्रम बरवाला हिसार से जितने हथियार बरामद हुए, सब लाइसैंस वाले हैं। कोई भी अवैध हथियार आश्रम से बरामद नहीं हुआ। फिर माननीय पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट ने सरकार से रिपोर्ट माँगी कि कितने पुलिस तथा फौज के अधिकारी जख्मी हुए। कितने गोलियों से घायल हुए हैं? फोर्स के सब घायलों की मैडिकल जाँच कोर्ट में जमा कराई गई तथा बताया गया कि कोई भी गोली से जख्मी नहीं हुआ है, पत्थरों से घायल हुए हैं। डी.जी. पुलिस हरियाणा ने यह भी हाईकोर्ट में बताया कि कोई अवैध गतिविधि आश्रम में नहीं थी। माननीय पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट ने हरियाणा सरकार पर आरोप लगाया कि हरियाणा सरकार बाबा रामपाल के साथ

मिल चुकी है। इसलिए I. B. (Intelligence Bureau) अर्थात केन्द्र सरकार द्वारा कराई जाने वाली गुप्तचर विभाग की रिपोर्ट जो पूर्ण रूप से सत्य मानी जाती है। वह भी माननीय पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट ने मँगवाई तथा पढ़ा तो उसमें लिखा था कि सन्त रामपाल तथा इनके अनुयाइयों के साथ सरकार के साथ-साथ कुछ जज भी अन्याय कर रहें हैं। 12 जुलाई 2006 से वर्ष 2014 तक इनको कोई न्याय नहीं मिला है। इन्होंने पुस्तक "सच बनाम झूठ, ''न्यायालय की गिरती गरीमा'' तथा ''भ्रष्ट जज कुमार्ग पर" लिखी हैं, उनमें लिखी सर्व घटनाऐं स्वयं प्रमाणित हैं, उनमें सब न्यायालयों के आदेश नं. भी लिख कर फोटो कापी लगाकर प्रमाण दिखाए हैं जिनमें जरा भी झूठ नहीं है। ये पूर्ण रूप से धार्मिक व्यक्ति हैं।

❖ इस I. B. (Intelligence Bureau) की रिपोर्ट को पढ़ने के पश्चात् जज का चेहरा देखने लायक था। उसका गुस्सा गायब था। कुछ खिस्याना सा होकर पूछा कि बाबा रामपाल अपने सब मुकदमें रोहतक कोर्ट से कहाँ बदलवाना चाहता है? पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट की सीमा (Jurisdiction) के अन्दर बदल दिया जाएगा, यह आदेश कर दिया।

अब दिनाँक 18-11-2014 के नए जुल्म ने तो पहले के अत्याचार को भी कम सिद्ध कर दिया। सन्त रामपाल तथा अनुयाईयों पर 7 झूठे मुकदमें बना दिए। सन्त रामपाल को 5 केसों में शामिल किया है। मुकदमा नं. 426, 427, 428, 429, 443

❖ **सन्त रामपाल जी पर दर्ज केस :-** मुकदमा नं. 426/2014 P.S. Barwala की दिनाँक 17-11-2014 को जो F.I.R काटी गई है इसमें लिखा है कि Dt. 17-11-2014 को थाना प्रभारी बरवाला कुछ फोर्स को लेकर सतलोक आश्रम बरवाला से 400 मीटर (1250 फुट = 6.1/2 एकड़) दूर खड़ा होकर फोर्स को ब्रीफ कर रहा था। माननीय पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट के Non Bailable Warrents (गैर जमानती वारन्ट) को सन्त रामपाल से तामिल कराने के लिए जाने लगा तो सन्त रामपाल के अनुयाईयों द्वारा सरकारी ड्यूटी में बाधा डालकर अपराधिक बल का प्रदर्शन करके सैंकड़ों अनुयाईयों को आश्रम के सामने बैठाकर माहौल खराब किया जा रहा है। माननीय माननीय पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट के आदेश की पालना न करने पर जुर्म 332/353/186 किया है।

भारत के बुद्धिजीवी नागरिकों से हम अर्ज करते हैं कि माननीय पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट ने सन्त रामपाल दास जी की गिरफ्तारी के गैर-जमानती वारंट दिनाँक 05-11-2014 को जारी किए थे, इसको तामिल कराने आए दिनाँक 17-11-2014 को। इससे पहले दिनाँक 05-11-2014 से दिनाँक 10-11-2014 तक पेश करने का आदेश हुआ, दिनाँक 10-11-2014 से दिनाँक 17-11-2014 तक पेश करने का।

विचार करें :- पुलिस न तो दिनाँक 5-11-2014 से 10-11-2014 तक आदेश को तामिल कराने आई, न दिनाँक 10-11-2014 से 16-11-2014 तक आदेश तामिल कराने आई। यदि 12 दिन तक थाना प्रभारी बरवाला माननीय पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट के आदेश पालन कराने आया होता और सन्त रामपाल जी के अनुयाईयों ने विरोध किया होता तो उसकी भी F.I.R. कटी होती। इसी प्रकार

दिनाँक 17-11-2014 को भी थाना प्रभारी बरवाला या अन्य कोई भी पुलिसकर्मी सतलोक आश्रम में माननीय पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट के आदेश को तामिल कराने नहीं आया क्योंकि उनको सब स्थिति का पता था। यह F.I.R केवल मनघड़न्त कहानी बनाई है। फिर भी इस F.I.R. में सन्त रामपाल जी का नाम नहीं आना चाहिए था। फिर F.I.R. में लिखा है कि सन्त रामपाल जी के अनुयाईयों ने माननीय पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट के आदेश की पालना में बाधा की, इसलिए उपरोक्त धाराओं के तहत जुर्म बनता है, सन्त रामपाल जी का तो नाम भी नहीं है, फिर उन्होंने बाधा कैसे पहुँचाई? इस मुकदमें में सन्त रामपाल जी को भी दोषी बनाकर फँसा दिया गया। जज श्री प्रतीक जैन जी ने बिना कुछ देखे सन्त रामपाल जी का रिमाण्ड भी दे दिया।

❖ झूठा मुकदमा नं. 427 दिनाँक 18-11-2014 P.S. Barwala जिला हिसार :- इस मुकदमे की F.I.R. में लिखा है कि आज दिनाँक 18-11-2014 को 09:30 AM पर एक टैलीफोन फोन नं. 9050620338 से हिसार पुलिस कन्ट्रोल रूम के टैलीफोन नं. 237-150 पर आया कि मैं सन्त रामपाल महाराज के आश्रम से बोल रहा हूँ और उसका अनुयाई हूँ। मैं तथा काफी व्यक्ति आश्रम से बाहर आना चाहते हैं। लेकिन 30-40 भक्त हमें बाहर नहीं आने देते, बंधक बनाकर रखा है।

विचार करें :- सन्त रामपाल जी का इसमें कहीं नाम नहीं है। फिर भी सन्त रामपाल जी को इसमें भी फँसा रखा है। चालान के साथ पुलिस ने शिकायतकर्ता के फोन नं. की कॉल डिटेल निकलवाकर कोर्ट में पेश की है। उसमें शिकायतकर्ता के फोन से पुलिस के फोन नं. 237-150 पर कोई फोन नहीं किया गया। दिनाँक 18-11-2014 को सुबह 05:30 से शाम 09:30 तक की कॉल डिटेल कोर्ट में चालान के साथ लगाई है, उस दौरान कोई फोन नहीं हुआ है, फिर भी जज श्री प्रतीक जैन जी ने केस को चॉर्ज पर लगा दिया जबकि कानून कहता है कि उसी दिन केस को समाप्त करना चाहिए था, यह निराधार केस है। सन्त रामपाल जी का नाम तो निकालना ही चाहिए था, यह जज का अन्याय है।

❖झूठा मुकदमा नं. 429 दिनाँक 19-11-2014 P.S. Barwala जिला हिसार :- यह F.I.R. एक भक्त शिवपाल के नाम से काटी है जिसकी पत्नी की मृत्यु पुलिस के कहर के कारण हुई थी। पुलिस की बर्बर घिनौनी कार्यवाही से किए गए लाठीचार्ज से, अश्रु गैस व रॉकेट बम के बेशुमार गोले दागने से, सर्दी में 4 घण्टे पानी की अत्यधिक बौछार करने से आश्रम के छः श्रद्धालु (5 स्त्री, एक 1½ (डेढ़) वर्ष का बालक) मारे गए। उनमें एक सरिता पत्नी श्री शिवपाल (दिल्ली) भी मारी गई। श्री शिवपाल ने ऐफिडेविट दिया कि पुलिस ने झूठ बोलकर खाली कागज पर हस्ताक्षर करा लिए कि तेरी पत्नी का शव देना है, इसलिए लिखा-पढ़ी करनी है। बाद में उसी को दरखास्त बनाकर F.I.R No. 429/2014 दिनाँक 19-11-2014 काटकर सन्त रामपाल जी महाराज तथा अन्य भक्त तथा बहनों-माताओं पर झूठा मुकदमा दर्ज कर दिया। जब भक्त शिवपाल जी को पता चला तो उसने शपथ पत्र लिखकर न्यायालय में दे दिया। उसमें लिखा कि

मेरी पत्नी की मृत्यु तथा अन्य पाँचों की मृत्यु दिनाँक 18-11-2014 को पुलिस की क्रूर कार्यवाही से हुई है। हम स्वईच्छा से सत्संग सुनने गए थे तथा दर्शनार्थ रूके थे।

इसी प्रकार F.I.R No. 430 P.S. Barwala दिनाँक 19-11-2014 भी झूठी काटी गई है। यह F.I.R रजनी पत्नी सुरेश की मृत्यु की काटी है, दोनों F.I.R. में लिखा है कि सन्त रामपाल के कहने से उसके अनुयाईयों ने (कुछेक के नाम लिखे हैं) कुछ औरतों और बच्चों को एक हॉल कमरे में बन्द कर दिया। जिस हाल में आश्रम में स्थाई रहने वाली महिलाऐं रहती थीं, जो सन्त रामपाल जी के निवास के साथ है। वे सब औरतें तथा बच्चे आश्रम से बाहर जाना चाहते थे। उनको बाहर जाने से रोकने के लिए उस हॉल कमरे में जबरन रोक दिया। जिस कारण से दम घुटने से 5 औरतों तथा एक बच्चे की मौत हो गई। धारा 302, 120-B आदि-आदि लगाकर सन्त रामपाल जी सहित कई भक्तों तथा भक्त-बहनों को दोषी बना दिया।

विशेष निवेदनः- सज्जन पुरूषों से निवेदन है कि पुलिस ने कितनी मनमानी की है, यदि यह भी मानें कि एक कमरे में इसलिए बन्द कर दिया कि वे भक्त-बहनें आश्रम से बाहर न जाने पाऐं, उनकी मृत्यु दम घुटने से हो गई तो भी उनको मारने का इरादा नहीं बनता। इस कारण भी 302 मुकदमा नहीं बनता। यदि F.I.R. No. 430 में सन्त रामपाल जी 120-B में नहीं आते तो F.I.R. No. 429 में भी नहीं आते। इस झूठे मुकदमे को इसलिए बनाया कि पुलिस अपनी गलती को छिपाना चाहती थी। परन्तु कहते हैंः-

"चोर चुरावै तूम्बड़ी, गाढ़ै पानी मांह।
वह गाढ़ै वो ऊपर आवै, यों सच्चाई छ्यानि नांह।।"

F.I.R No. 429 में पुलिस ने सन्त रामपाल जी को दोषी बताया, F.I.R No. 430 में निर्दोष। यदि जज साहेबान न्याय की नीयत से विचार करेंगें तो इसी तर्क से दोनों F.I.R समाप्त कर देनी चाहियें। दोनों मुकदमे खारिज करने चाहियें। किसी वकील से बहस सुनने की आवश्यकता ही नहीं है। पुलिस ने जिस कमरे में भक्तों को रोकने की मनघड़न्त कहानी घड़ी है, वह लगभग 60 फुट लम्बा तथा 18 फुट चौड़ा है। सामने लगभग 100 फुट लम्बा और 60 फुट चौड़ा आँगन है तथा पीछे 10 फुट की गैलरी तथा खाली खेत हैं, उस हाल में तीन गेट हैं। चार जंगले (5 फुट चौड़े, 5 फुट ऊँचे) एक तरफ तथा चार जंगले इसी साईज के दूसरी तरफ तथा प्रत्येक जंगले तथा गेट के ऊपर 5 फुट चौड़े तथा डेढ़ फुट ऊँचे रोशनदान लगे हैं। एक गेट स्नान घर की ओर जाता है।

भारत की बुद्धिजीवी जनता से हमारा अनुरोध है कि उस हॉल कमरे को आँखों देखें तो आपको पता चलेगा कि उसमें एक रात्रि तो छोड़ो, कितने दिन भी उसको खचाखच भरकर रखें, दम घुटने से व्यक्ति नहीं मर सकता। वास्तव में किसी को उसमें रोका ही नहीं गया था।

मुकदमा नं. 443/2014 पुलिस स्टेशन (P.S.) बरवाला दिनाँक 28-11-2014, इसमें 420 तथा 120-B का मुकदमा बनाया है। सन्त रामपाल जी तथा भक्तों पर,

जिसमें लिखा है कि :- 407 खाली तथा भरे गैस के सिलैन्डर मिले जो भिन्न-भिन्न गैस ऐजैन्सियों के थे। उनके कागज-पत्र नहीं मिले, मुकदमा बना दिया। हम भक्त जन इसके लिए कहना चाहते हैं कि :- आश्रम का लंगर (भोजनालय) भक्तों के दान से चलता है। कोई घी की डोली-पीपी भर कर लाता है, उसको खाली करके दे देते हैं। कोई दूध की डोली लाता है, कोई गैस के सिलैन्डर लाता है, खाली हो जाते हैं, उनको सत्संग के बाद वापिस जाते समय ले जाते थे। उस समय पुलिस ने आश्रम को चारों ओर से घेर रखा था, किसी को कोई सामान बाहर नहीं ले जाने दिया गया। जिस कारण से वे खाली तथा भरे गैस सिलैन्डर आश्रम में भक्तों के रखे थे, उनका भी मुकदमा बना दिया।

कुछ दिन पश्चात् दिनाँक 05-12-2014 को इसी F.I.R. No. 443 में 11 हजार लीटर के लगभग डीजल मिला, यह भी पुलिस ने जोड़ दिया। वास्तव में यह डीजल आश्रम की बसों की टंकियों में भरा था। बसें सँख्या में 30 से ज्यादा हैं। एक बस की टंकी में लगभग दो सौ से पाँच सौ लीटर तक डीजल आता है, कुछ डीजल बसों के चलने में खत्म हो गया, पुलिस ने पीछे से बसों की टंकियों से निकालकर आश्रम में रखे पतीलों, कढ़ाइयों तथा जिन ड्रामों में सत्संग के समय भठ्ठियाँ जलाने के लिए डीजल स्टॉक करते थे, उनमें तथा जिस टैंकर से पैट्रोल पम्प से डीजल लाते थे, झूठा मुकदमा बनाने के लिए उसमें भरकर रख दिया। अभी भी उन बसों की टंकी खाली हैं और वे बसें अभी भी पुलिस के कब्जे में हैं।

इससे स्पष्ट है कि पुलिस ने सन्त रामपाल जी तथा अनुयाईयों पर जितने मुकदमें बनाए हैं, वे सब झूठे हैं।

❖**एक देशद्रोह का झूठा मुकदमा बनाया है:-** F.I.R. No. 428/2014 पुलिस स्टेशन बरवाला (P.S. Barwala) दिनाँक 18-11-2014 में इतनी धाराएं लगा दी जितनी भारत के संविधान यानि I.P.C. (Indian Pannel Code) में हैं, जैसे :-107, 147, 148, 149, 186, 188, 120 B, 224, 225, 307, 332, 342, 353, 436, 121, 121-A, 122, 123, I.P.C. 25/27/30 - 59A/Act Explosive substance Act, PDP-P Act & 16, 18, 20, 22-C, 23 Unlawful activity

इनमें से 121, 121A, 122, 123 आदि-आदि धाराऐं देशद्रोह की हैं जो आतंकी कसाब दुष्ट पर लगी थी, जिसको फाँसी की सजा दी गई जो जायज थी। यही धाराऐं एक समाज सुधारक, आत्म उधारक, मानव कल्याण के लिए कार्यरत एक संत पर लगाई गई हैं जो देश को विकार रहित, शुद्ध, समृद्धिवान बनाकर फिर से सोने की चिड़िया कहलायी जाऐ, ऐसे भारत देश को विश्व में चमकाने के लिए जे.ई. (सिंचाई विभाग हरियाणा) की नौकरी से त्याग पत्र देकर सन् 1994 से दिन-रात एक कर रहा है। सर्व सद्ग्रन्थों को सही अर्थों में समझकर, उनका निष्कर्ष निकालकर, सत्संग करके, अनमोल ज्ञान प्रचार व प्रसार करके भारत की जनता से नशा-माँसाहार, भ्रष्टाचार, भ्रूण हत्या तथा दहेज प्रथा को समाप्त कर रहा है तथा शास्त्रानुकूल सत्य भक्ति गीता-वेदों आदि-आदि सद्ग्रन्थों अनुसार करा रहा है। जो साधना सन्त रामपाल जी महाराज बता रहें हैं, वह

शास्त्रविधि अनुसार है, जिसे उन्होंने वेदों व सद्शास्त्रों से प्रमाणित किया है। सन्त रामपाल जी के अतिरिक्त जो भी भक्ति साधना भारत के भक्तों तथा विश्व के भक्तों में प्रचलित है, वह शास्त्र प्रमाणित नहीं है। जिस कारण से भक्त समाज जो भक्ति कर रहा है, वह भी निरर्थक है क्योंकि गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि "शास्त्र विधि को त्यागकर जो मनमाना आचरण करते हैं अर्थात् नाम मंत्र जाप करते हैं जो गीता तथा वेदों में नहीं है, वह मनमाना आचरण है, उससे उनका न तो कोई कार्य सिद्ध होता है और न ही उनको कोई सुख प्राप्त होता है। वह व्यर्थ है, वह शास्त्रानुकूल भक्ति की विधि तथा तत्व ज्ञान सन्त रामपाल जी के अतिरिक्त विश्व में किसी को प्राप्त नहीं है। इसकी जाँच के लिए कृपया देखें, सुनें "सृष्टि रचना" का सत्संग, D.V.D भी इसी में हैं, आप डाउनलोड भी कर सकते हैं।

❖संत जी पर देशद्रोह का मुकदमा किसी भी सूरत में नहीं बनताः-

आप जी ने पूर्व में पढ़ा कि दिनाँक 05-11-2014 को गिरफ्तारी वारंट हुआ था। दिनाँक 17-11-2014 तक प्रसाशन उसको तामिल कराने भी नहीं आया, यह तो लिखित प्रमाण है। वास्तव में दिनाँक 18-11-2014 तक भी वारंट को तामिल कराने कोई नहीं आया, यदि आया होता और विरोध भक्तों द्वारा किया होता तो जो F.I.R दिनाँक 17-11-2014 को काटी, वह पहले कटती। दिनाँक 17-11-2014 तक तो प्रसाशन स्वयं कहता रहा कि हम केवल औपचारिकता कर रहे हैं ताकि पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट में दिखा दें कि हमने गिरफ्तारी की सब तैयारी कर रखी हैं। वहाँ पर बच्चे-बूढ़े, रोगी तथा स्त्री अधिक हैं और Video Conference द्वारा हाजरी लगा लें तथा सन्त रामपाल जी महाराज बीमार चल रहे हैं।

परन्तु वर्तमान में भ्रष्ट जज तो अंग्रेजों का पर्यायवाची बन चुके हैं, न जनता का डर, न किसी कार्यवाही का भय। कुछ भी आदेश कर दें, कोई बोल नहीं सकता। हम रोए तो हमारी जुबान खींच ली। ऐसा कहर करा दिया इन भ्रष्ट जजों ने (सभी जज भ्रष्ट नहीं है, हमारा मानना है), छः की मौत करा दी। प्रति महिना 25000 (25 हजार) नए श्रद्धालु सब बुराईयाँ छोड़कर सतलोक आश्रम में दीक्षा प्राप्त करने आते थे, धर्म-भण्डारा चलता था। लाखों भक्तों के घर बस गए। शराब, तम्बाकू, रिश्वत लेना त्यागकर नेक इन्सान बन गए। आध्यात्मिक लाभ की कीमत ही नहीं बताई जा सकती। परन्तु भ्रष्ट जजों ने नाक का सवाल बना लिया। हरियाणा के डी.जी. ने पुलिस को कहा कि चाहे कितने ही मर जाऐं, बाबा रामपाल हाजिर होना चाहिए। यही शब्द दिनाँक 17-11-2014 को भ्रष्ट जज ने दोहराए। दिनाँक 18-11-2014 को प्रसाशन ने आगे देखा न पीछे, बेरहमी से जुल्म ढ़हा दिया। 5 भक्त बहनों तथा एक डेढ़ वर्ष के बच्चे को भ्रष्ट जज व जालिम पुलिस वाले खा गए। इनका सर्वनाश होगा, कीड़े पड़ेंगे। झूठे केस पुलिस बनाती है। भ्रष्ट जज न्याय करने को तैयार नहीं, स्वयं झूठे केस पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट के भ्रष्ट जज स्वयं बनाने लगे, ये भारत देश के दुश्मन हैं, ये

हैं देशद्रोही जो भारत की गरीब जनता को सता रहे हैं, मारपीट कर रहे हैं तथा लूट रहे हैं। कोर्ट में जाऐं तो वकीलों की महँगी फीस, वकील अपना पक्ष प्रस्तुत करते रहो, जज आँखें खोले, कान बन्द करके बैठा रहता है। (सभी जज एक जैसे नहीं हैं, हाथ की पाँचों उंगलियाँ एक समान नहीं हैं)। जो कुछ करना है, जज महोदय पहले ही तय करके आता है और अन्याय कर देता है। कोई बोले तो कोर्ट की अवमानना का केस बनाया जाता है, ऐसे जनता का विश्वास न्यायालय के प्रति समाप्त होता जा रहा है। वह दिन दूर नहीं, यदि यह रवैया जजों का रहा तो जनता मजबूर होकर विरोध में कदम उठा सकती है।

❖ हमने 8/2014 को भारत के प्रधानमन्त्री जी को जजों पर कानून बनाने तथा जबाबदेही तय करने के लिए पत्र लिखे थे। लगभग डेढ़ लाख पत्र तो प्रधानमन्त्री के कार्यालय में जमा हैं। प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने दिनाँक 5 अप्रैल 2015 को भारत के मुख्य न्यायधीश तथा सब उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायधीशों से मीटिंग की, उसमें हमारे पत्र में दिए सुझावों को जजों के सामने श्री नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री जी ने रखा कि "जजों से निवेदन है कि वे धारणा आधारित फैसले न दें। कानून को आधार बनाकर फैसले करें, यदि जनता का विश्वास न्यायालयों से उठ गया तो क्या हो जाएगा, अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता। प्रधानमन्त्री जी ने हमारे पत्र की यथावत् भाषा कही कि भगवान के बाद जज को भगवान का छोटा रूप माना जाता है। फिर जज ही ठीक से कार्य नहीं करेंगे तो अनुचित बात है। अभी तक न्यायपालिका आलोचना से बची है। यह दिनाँक 06 अप्रैल 2015 को दैनिक जागरण, राष्ट्रीय सहारा तथा लगभग सभी समाचार पत्रों के मुख्य पृष्ठ पर छपा था। उसके पश्चात् भी जज साहेबानों के रवैये में हमें कोई अन्तर महसूस नहीं हो रहा है। कोर्ट के कारण आज सब सरकारी, गैर-सरकारी संस्था तथा नागरिक डरकर कार्य कर रहे हैं, जब न्यायालयों में कुछ भ्रष्ट व्यक्ति स्थान प्राप्त करके कानून को अनदेखा करके अन्याय करेंगे तो देश का दुर्भाग्य ही होगा। इसका परिणाम हमारे सामने है। सन्त रामपाल जी के अनुयाईयों ने तथा राष्ट्रीय समाज सेवा समीति ने अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाई तो उनका क्या हाल हुआ, सबके सामने है। 940 भक्त देशद्रोह के मुकदमे में फँसाए गए। फिर 800 पर कुछ सामान्य धारा लगाई और उनको जमानत दे दी। कानून के जानकार विद्वान वकील बताते हैं कि इन धाराओं में अधिक से अधिक जमानत की राशि 20 हजार होनी चाहिए थी। इतना ही प्रावधान संविधान में है। परन्तु विद्वान जज साहब ने एक लाख रूपये जमानत की राशि रखी तथा कहा कि जमानती हिसार जिले के ही हों। विचार करें यह कैसे सम्भव हो सकता है कि राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, नेपाल, महाराष्ट्र, चेन्नई के लोगों की जमावत हिसार के व्यक्ति दें। इन धाराओं में जज साहब आरोपी को उसके निजी मुचलके पर छोड़ सकता है। सरकार ने इसका भी विरोध किया तथा हरियाणा प्रशासन पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट में चला गया कि निजी मुचलके पर न छोड़ा जाए, जब कानून में प्रावधान है तो सरकार

को अवरोध पैदा नहीं करना चाहिए। कुछ न्यायधीश न्याय करना चाहते हैं तो स्थानीय पुलिस अफसर सरकार को गुमराह कर देते हैं।

❖ कारण :- हिसार के I.G. श्री अनिल राव ने प्रतिशोध लिया :- हिसार का I.G. श्री अनिल राव सन् 2009 में रोहतक S.P. था। इसने हाईकोर्ट के आदेश की अवहेलना करके हमें सतलोक आश्रम करौंथा नहीं सौंपा तो सन्त रामपाल जी ने इसके ऊपर कोर्ट की अवमानना का केस अनिल राव S.P. के नाम से डाल दिया। वह केस अभी तक लम्बित है, उसका प्रतिशोध यह अनिल राव ले रहा है, झूठे मुकदमें बनवा रहा है, जिसका मुख्य सहयोग S.P. सतेन्द्र गुप्ता हिसार, बरवाला का D.S.P. राजबीर सैनी, S.H.O. बरवाला अनिल कुमार तथा D.S.P. भगवान दास गुज्जर जो उस समय सिवानी D.S.P. था और S.I.T का सदस्य जो बरवाला आश्रम की घटना की जाँच करके ठीक केस बनाने के लिए गठित की गई थी, उन्होंने मिलकर उपरोक्त झूठे मुकदमें बनाए। सरकार के सर्व मन्त्री सीधे-साधे होने के कारण इनकी चाल को नहीं समझ रहे। इन पाँचों अधिकारियों ने सब भक्तों को लूटा-पीटा तथा झूठे मुकदमें बनाए हैं। करोड़ों रूपये (I.G. अनिल राव, S.P. सतेन्द्र गुप्ता, D.S.P. राजबीर सैनी, D.S.P. भगवान दास गुर्जर तथा S.H.O. अनिल कुमार ने) लूटे हैं। फिर हिसार जेल नं. 1 में सुप्रीटेंडेन्ट शमशेर सिंह दहिया जल्लाद आगे तैयार था। उसने सब भक्तों को कसाई की तरह काटा-पीटा, कई-कई बार पीटा, रूपये प्राप्त करने के लिए अत्याचार किया।

शमशेर सिंह दहिया केन्द्रीय कारागार नं. 1 हिसार में जेल सुप्रीटेंडेन्ट था। सन्त रामपाल जी दिनाँक 11-12-2014 को केन्द्रीय जेल नं. 2 हिसार में भेजे, यह व्यक्ति पैसे की हवस में दिनाँक 13-12-2014 को केन्द्रीय कारागार नं. 2 में गया। उसकी वहाँ ड्यूटी भी नहीं थी। उसके साथ वहाँ का सुप्रीटेंडेन्ट श्री सुखराम बिश्नोई तथा डिप्टी सुप्रीटेंडेन्ट श्री ओमप्रकाश जी तथा तीन-चार अन्य जेल नं. -2 के ही मुलाजिम तथा Line Officers थे, सामने सन्त रामपाल जी के साथ दो अन्य मुल्जिम कैदी भी उसी कोठरी में बन्द थे। उन सबके सामने सन्त रामपाल जी से कहा कि मैं तेरा इन्तजार कर रहा था। उस जेल नं. 1 में सब तैयारी कर रखी थी, तुझे बहुत पीटता। तेरे से 50 लाख रू. लेने थे। तूने जनता का बहुत धन लूट रखा है या तो पैसे भिजवा देना अन्यथा मैं इसी जेल में बदली करा कर आऊंगा। तेरे को मौत के घाट उतारूँगा। तुझे भूखा-प्यासा रखकर सताऊँगा, याद रखना मेरा नाम शमशेर सिंह दहिया है। परमात्मा की कृपा से उसकी बदली रेवाड़ी जेल में दिनाँक 18-12-2014 को हो गई। वह दिनाँक 19-02-2015 को जेल नं. 2 हिसार में बदली करा के आ गया। शुक्र है परमात्मा का उसके जेल नं. 2 हिसार में आने से पहले वकीलों ने हरियाणा के C.M. को डी.जी. जेल चण्डीगढ़ को Home Secretary (गृह सचिव) हरियाणा को पत्र लिखकर शिकायत कर दी तो मीडिया में आ गया तथा हिसार कोर्ट में अर्जी लगा दी। इस कारण से यह अब बचाव रहा है। आज तक इसकी जाँच करने भी कोई नहीं आया है। यह जेल में बन्द स्त्रियों को नचाता है, उनके साथ अश्लील हरकतें करता है। यह

चरित्रहीन व्यक्ति है। एक अनिल बंसल नाम का सेठ किसी केस में केन्द्रीय जेल नं. 1 में बन्द था। उससे 2 लाख रू. लिए, जब तक नहीं मिले, उसको लैट्रीन के हाथ साफ करने वाले डिब्बे में खाना दिया। उसने अपनी जेल नं. 2 में बदली कराई, इसकी शिकायत डी.जी. को की। उसकी इन्क्वायरी C.P.O Chandigarh श्री सतेन्द्र गोदारा जी ने की। अनिल बंसल के बयान ले कर गया। शमशेर सिंह दहिया फिर यहीं आ गया, जेल नं. 2 में बदल कर। अभी तक अनिल बन्सल वाली शिकायत पर कोई कार्यवाही इसके खिलाफ नहीं हुई है। हो सकता है अनिल बन्सल पर दबाव बना कर ब्यान बदलवा लिए हों। यदि ऐसे व्यक्तियों पर कोई कार्यवाही नहीं हुई तो देश का बहुत अहित हो जाएगा।

सरकार ने इस शमशेर सिंह दहिया का गनमैन वापिस ले लिया। इसने दो गनमैन ले रखे थे। इसने क्या ड्रामा रचा? दिनाँक 27-04-2015 की रात्रि को अपने किसी जानकार से अपनी कोठी पर फायरिंग करा दी, सुबह खाली कारतूस हिसार पुलिस को दिखाए कि मुझे खतरा है, अपने गनमैन रखने के लिए यह साजिश रची। यह चाल-बाज तथा बदतमीज व्यक्ति है, इसको तुरन्त प्रभाव से बर्खास्त किया जाना चाहिए।

जो भक्त जेल से जमानत पर आए हैं, जेल में बन्द अन्य बन्दियों ने बताया कि शमशेर सिहं दहिया जेलर हिसार जेल नं. 1 से प्रतिमहिना 10 लाख रू. लूटता था। इसलिए उस जेल पर फिर से आने के लिए पैर पीट रहा है।

एक बार शमशेर सिंह दहिया सुप्रीडेन्ट ने सब कैदियों के स्टील के पतीले, गिलास, डोली, चम्मच उठा लिए और दो ट्रक भरकर कबाड़ में बेचकर पैसे खा गया। फिर जेल की कैन्टीन पर घटिया-घटिया पतीले, गिलास, डोली रखवा दी। गरीब कैदीयों को 100 रू. का पतीला 500 रू. में बेचा, ऐसे ही गिलास आदि बेचे। जेल की कैन्टीन से जेल सुप्रीडेन्ट शमशेर सिंह दहिया 4 लाख रूपये महीना लेता था। अन्य बन्दियों से मारपीट करके छः लाख रूपये प्रति महिना लेता था।

इसके अतिरिक्त जेल में बन्दियों के लिए गेहूँ, चावल, दूध, अण्ड़े, सरकार देती है। उसमें से लगभग 2 लाख रू. महीना रखता है या दूसरे तरीके से जेल की कैन्टीन पर 20 रू. की प्याज लाकर 100 रू. की बिकवाता था, यह है गोरखधन्धा सुप्रीडेन्ट जेल श्री समशेर सिंह दहिया का। जैसे तानाशाह होते थे, ऐसे जेल में सुप्रीडेन्ट का हुक्म चलता है। सरकार से अनुरोध है कि जाँच करके इस पर कड़ी कार्यवाही करें।

आज इस महान तथा लोकतांत्रिक देश में यह क्या हो रहा है? गरीब व्यक्तियों को जीने का अधिकार नहीं क्या? अपना दुःख बताने का अधिकार नहीं? अधिकार है, हमारा। यह हम भारतवासियों को भारत का संविधान देता है परन्तु ये मुठ्ठी भर लोग हमें अपने ही देश में गुलाम बनाए हैं। हम भ्रष्टाचार की लड़ाई कानूनी तरीके से, सवैंधानिक तरीके से लड़ रहे थे। हमारी जुबान खींच ली। लेकिन यह संघर्ष बन्द नहीं हो सकता। भारत का बच्चा-बच्चा अपनी आवाज उठाएगा कि हमें न्याय दो, जीयो और जीने दो।

बाबा रामदेव का भारत की जनता पर उपकार

''बाबा रामदेव एक पी.टी.आई (P.T.I) टीचर का कार्य करता है''

योग करने की आवश्यकता :- किसान तथा मजदूर को योग करने की कोई आवश्यक्ता नहीं है। भारत की कुल जनसंख्या का 80 प्रतिशत किसान तथा मजदूर है। शेष 20 प्रतिशत व्यापारी, अधिकारी-कर्मचारी, फैक्ट्री के अधिकारी तथा राजनेता, इनमें से 15 प्रतिशत तो रामदेव जी के जन्म से भी पहले से चले योग क्रिया को करते आ रहे हैं। यह तो योग की पुस्तकों में सरलता तथा विस्तार से लिखा है। भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी के विषय में समाचार पत्रों में छपा था कि वे बचपन से ही योग कर रहे हैं। तब तक तो बाबा रामदेव का कहीं नामोनिशान भी नहीं था। हम मीडिया के आधीन होकर अपना धन लुटवाने के आदि हो गए हैं, बाबा रामदेव एक मैडीसिन मर्चेन्ट है। हम यह नहीं कहना चाहते कि बाबा रामदेव घृणित व्यक्ति है। यह कहना चाहते हैं कि जितना इसको मीडिया ने उठा रखा है, वास्तव में इतना योग्य नहीं है। जैसे बाजीगर पैरों के नीचे बाँस बाँधकर लम्बा पजामा पहनकर ऊँचा बन कर चलता है। वह वास्तव में ऐसा नहीं होता।

1. बाबा रामदेव योग के द्वारा रोग समाप्त करने के लिए शिविर लगाता है। उसकी स्टेज के निकट बैठने वालों की फीस 21 हजार रू.।
उनके पीछे बैठने वालों की फीस 11000/- हजार रू.।
उनके पीछे बैठने वालों की फीस 5100/- रू.।
उनके पीछे बैठने वालों की फीस 2100/- रू.।
उनके पीछे बैठने वालों की फीस 1100/- रू.।
सबसे पीछे बैठने के लिए स्थान गरीबों का होता है, उनकी फीस 500/- रू.।

2. बाबा रामदेव जी अच्छी औषधि बनाकर देश का उपकार कर रहा है।

जो चूर्ण 4 रू. का तैयार होता है, उसे 60/- रू. में बेचकर गरीब जनता का शोषण करता है। चावल, दाल, साबुन आदि-आदि सर्व घर में प्रयोग होने वाली वस्तुऐं बाबा रामदेव के नाम के लेबल लगाकर बेची जा रही हैं क्योंकि खुद का चैनल है। वर्तमान में जनता को टी.वी. चैनलों के माध्यम से लूटा-ठगा जा रहा है। सबसे महँगी वस्तु बाबा रामदेव की बिक रही हैं। बाबा रामदेव की महिमा होने के कारण अन्य औषधि विक्रेताओं की औषधि बिकनी लगभग बन्द हो चुकी हैं, उन्होंने बाबा रामदेव से हिस्सेदारी (Partnership) कर ली है, दवाई अन्य की, नाम बाबा रामदेव वाली एजेन्सी का। इसी प्रकार चावल, आटा, दाल, तेल, साबुन की स्थिति है, केवल नाम पंतजलि व आयुर्वेद हरिद्वार का, माल वही है। यह है योगदान बाबा रामदेव जी का। हरियाणा सरकार इसको हरियाणा ब्राँड अम्बैस्डर बनाकर सिर पर उठाए फिर रही है।

❖ हम बार-बार कहते रहे हैं, अब भी कहना चाहते हैं कि सब जज साहेबान भ्रष्ट तथा अन्याई नहीं हैं। कानून का पालन करने वाले हैं, भगवान से डरने वाले

हैं। परन्तु इनकी सँख्या बहुत कम रह गई है।

◆ हम सन्त रामपाल दास जी महाराज के शिष्य हैं। उनके सत्संग सुनकर हम सब ने सब बुराई त्याग दी है, हम मानव कल्याण के लिए प्रयत्न कर रहे हैं। वर्तमान में समाज में फैली बुराईयों तथा कुरीतियों को समाप्त करके नेक नागरिक बनाना हमारा उद्देश्य है। हम महान भारत बनाने में लगे हैं। यदि सन्त रामपाल जी का सत्संग भारत की जनता सुन लेगी तो अपने आप बुराईयाँ जैसे भ्रष्टाचार, व्याभीचार, नशा-माँस सेवन, आपसी लड़ाई-झगड़ा त्यागकर नेक राह पर आ जाएगी, यह हम दावे के साथ कहते हैं। समाज से भ्रष्टाचार तथा अन्य बुराइयों से भारत की जनता को पूर्ण रुप से मुक्त कराने के लिए सन्त रामपाल दास जी महाराज जी के सत्संग विचार जो सर्व सद्ग्रन्थों पर आधारित हैं, एकमात्र विकल्प हैं। यदि मीडिया भारत की उन्नति तथा जनता की सच्ची भलाई करना चाहता है तो उनके मालिकों तथा प्रवक्ताओं को चाहिए कि वे सन्त रामपाल दास जी महाराज द्वारा किए सत्संगों की Video D.V.D. बना रखी है। उनको Website = www.jagatgururampalji.org से डाउनलोड करके पहले स्वयं जाँचें, फिर टीवी चैनल पर प्रतिदिन एक घण्टा चलाएं। भारत का प्रत्येक नागरिक आपका आभारी रहेगा। हम विश्वास के साथ कहते हैं कि एक वर्ष में भारत विश्व का धार्मिक गुरु तथा विश्व का समृद्ध देश बन जाएगा।

◆ काला धन विदेशों में जमा है, उसकी वापसी के लिए जो प्रयत्न किया जा रहा है, वह अच्छा है, परन्तु अपने भारत देश में जो काला तथा सफेद धन है, जो केवल 10 प्रतिशत व्यक्तियों के पास है। यदि वह बाहर आ जाए तो भारत फिर से सोने की चिड़िया (Golden Sparrow) कहलाने लगेगा। पहले भारत वर्ष सोने की चिड़िया कहलाता था क्योंकि भारत देश सदा से ही भक्ति प्रधान देश रहा है। जहाँ भक्ति है, वहाँ भगवान रहेगा तो किसी वस्तु का अभाव नहीं रहता। वह धरती पवित्र हो जाती है। पहले भारत की सभ्यता तथा नीयत भारतीय थी। वर्तमान में सभ्यता तथा नीयत (Tendency) पश्चिमी देशों वाली हो गई है। धर्म के नाम पर सत्संगकर्ता सन्तों की भरमार है। परन्तु धार्मिकता दिन-प्रतिदिन गिरती जा रही है। जिसका कारण वही है जो गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है ''हे अर्जुन! जो साधक शास्त्रविधि को त्यागकर मनमाना आचरण करते हैं अर्थात् भक्ति के उन मंत्रों का जाप तथा वे क्रियाएं करते हैं जो सद्ग्रन्थों में वर्णित नहीं हैं, उसको मनमाना आचरण अर्थात् शास्त्रविधि रहित साधना कहते हैं। उससे साधक को कोई लाभ नहीं होता, उस साधक को न तो सुख होता है, न सिद्धि प्राप्त होती है, न परम गति को प्राप्त होता है अर्थात् वह साधना व्यर्थ है। (गीता अध्याय 16 श्लोक 23)

◆ इससे तेरे लिए अर्जुन कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में अर्थात् कौन से भक्ति कर्म मन्त्र जाप करने चाहिऐं तथा कौन से नहीं करने चाहिऐं अर्थात् त्यागने चाहिऐं, इसके लिए शास्त्रों को आधार मानना चाहिए। (गीता अध्याय 16 श्लोक 24)

◆ वह शास्त्रानुकूल भक्ति सन्त रामपाल दास जी महाराज सतलोक आश्रम बरवाला के पास है जिसको मानव तक पहुँचाने के लिए वर्तमान में मीडिया अहम भूमिका अदा कर सकता है तथा मानव जाति तथा भारत वर्ष को समृद्ध तथा सुखी करने में सहयोग देकर महान परोपकार करके पुण्यों का भागी बन सकता है। जिस कारण से गीता अनुसार साधक सुखी हो सकता है, सिद्धि प्राप्त कर सकता है। सिद्धि का तात्पर्य है कि भक्ति की वह शक्ति जिससे इस लोक के सर्व आवश्यक पदार्थ परमात्मा प्रदान करता है, जैसे भक्ति युक्त किसान फसल बोएगा तो वह अधिक उपज देगी, सूखा नहीं पड़ेगा। किसी कार्य के लिए जाएगा, वह कार्य जाते ही निर्बाध सफल हो जाएगा। सामने वाला व्यक्ति या अधिकारी एकदम सामान्य होकर तुरन्त कार्य कर देगा। पशुधन स्वस्थ बना रहेगा। कार्यालयों में अधिकारी तथा कर्मचारी भी भक्ति से अच्छे स्वभाव के हो जाएंगे। कर्तव्य जानकर अपनी ड्यूटी करेंगे, उनकी नीयत (**Tendency**) अच्छी हो जाएगी। इसी प्रकार व्यापारी लोग जायज मुनाफा लिया करेंगे क्योंकि उनको परमात्मा के विधान का ज्ञान हो जाएगा। मजदूर अपना कर्तव्य जानकर मालिक का कार्य करेंगे। मालिक उन मजदूरों से अपने घर के सदस्यों जैसा व्यवहार किया करेगा। अधिक लाभ को अपने नौकरों में बाँटा करेगा। किसी प्रकार का मानसिक तनाव नहीं रहेगा। इस के साथ-साथ वह सिद्धि परलोक जाने में भी आत्मा का सहयोग करती है। जैसे भक्त जब संसार त्यागकर चलेगा, उस समय वह सिद्धि विमान उपलब्ध कराएगी। उस पर चढ़कर भक्त सनातन परमधाम (शाश्वतं स्थानं) में चला जाएगा। जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में नहीं आते जो गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है, वह परम गति है। इस प्रकार शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण करने से इन तीनों वस्तुओं (सुख, सिद्धि तथा परम गति) से वंचित रह जाता है, वे तीनों वस्तुएं शास्त्रविधि अनुसार आचरण अर्थात् भक्ति कर्म करने से साधक प्राप्त करके धन्य हो जाता है। वह शास्त्रानुसार भक्ति सन्त रामपाल जी के पास है। इनके अतिरिक्त विश्व में किसी के पास नहीं है। यदि किसी पाठक को शंका होती है तो सन्त रामपाल जी के सत्संगों की **Video** जो **D.V.D.** बनाकर **website : www.jagatgururampalji.org** पर उपलब्ध है, से डाउनलोड करके सुनें। सर्वप्रथम आप जी सुनें ''सृष्टि की रचना'' कैसे हुई? नाम है ''सृष्टि रचना'', यह लगभग 3 घण्टे की है। यह सत्संग आध्यात्म की कुंजी है **(Key of Spritual)**। फिर आप सुनें :-

1. आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा सर्व शीर्ष शंकराचार्यों बनाम जगत् गुरु रामपाल जी महाराज सतलोक आश्रम बरवाला, जिला-हिसार हरियाणा।
2. आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा महामण्डलेश्वर ज्ञानानन्द जी बनाम जगत् गुरु रामपाल जी महाराज सतलोक आश्रम बरवाला, जिला-हिसार हरियाणा।
3. आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा राधास्वामी तथा सच्चा सौदा सिरसा के सन्तों बनाम जगत् गुरु रामपाल जी महाराज सतलोक आश्रम बरवाला, जिला-हिसार हरियाणा।
4. आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा जय गुरुदेव मथुरा बनाम जगत् गुरु रामपाल जी

महाराज सतलोक आश्रम बरवाला, जिला-हिसार हरियाणा।

5. आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा जाकिर नाईक मुसलमान बनाम जगत् गुरु रामपाल जी महाराज सतलोक आश्रम बरवाला, जिला-हिसार हरियाणा।

6. आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा मधु परमहंस रांजड़ी, जम्मू वाले कबीर पंथी बनाम जगत् गुरु रामपाल जी महाराज सतलोक आश्रम बरवाला, जिला-हिसार हरियाणा।

7. आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा प्रकाश मुनि नाम साहेब, दामाखेड़ा वाले कबीर पंथी बनाम जगत् गुरु रामपाल जी महाराज सतलोक आश्रम बरवाला, जिला-हिसार हरियाणा।

8. आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा आर्य समाज प्रमुख बनाम जगत् गुरु रामपाल जी महाराज सतलोक आश्रम बरवाला, जिला-हिसार हरियाणा।

उपरोक्त आध्यात्मिक ज्ञान चर्चा में सन्त रामपाल दास जी ने सबको आध्यात्मिक ज्ञान में पराजित कर रखा है। यदि आप ध्यानपूर्वक निष्पक्ष हो कर सुनेंगे तो आश्चर्य होगा कि विश्व में सन्त रामपाल जी के अतिरिक्त किसी के पास वर्तमान में ज्ञान नहीं है। इनके अतिरिक्त शास्त्रानुसार भक्ति किसी के पास नहीं है। सर्व धर्मों के धर्मग्रन्थ यथार्थ ज्ञान तथा सत्य भक्ति से भरे पड़े हैं। परन्तु उन धर्मग्रन्थों को ठीक से न समझकर सर्व मानव समाज शास्त्रविधि को त्यागकर मनमाना आचरण करके मनुष्य जीवन को व्यर्थ कर रहा है। इसलिए पुनः निवेदन है कि आप जी उपरोक्त ज्ञान चर्चा तथा ''सृष्टि रचना'' की D.V.D. से सत्संग अवश्य सुनें। ज्ञान को सुन तथा समझकर फिर सन्त रामपाल जी से दीक्षा लेकर कल्याण कराएं तथा भारत वर्ष को जगत गुरु तथा सोने की चिड़िया सिद्ध करने में सहयोग दें।

जब न्यायाधीश ही अन्याई बन जाऐं, तो देश का क्या होगा?

हम बार-बार विनय करते हैं कि सब जज अन्याई नहीं हैं। हाथ की सब ऊंगलियाँ एक समान नहीं होती। इसी प्रकार सर्व जज एक समान नहीं हैं। अच्छे नेक व्यक्ति भी जज हैं। परन्तु हमारा सम्पर्क 90 प्रतिशत अन्याई जजों से हुआ। जज को परमात्मा का छोटा रुप माना जाता है जिसकी कलम में मृत्यु तक की सजा देने की शक्ति है। मानव की मृत्यु यदि परमात्मा करता है तो कोई बोलने वाला नहीं होता। इसी प्रकार मानव की मृत्यु का आदेश जज देता है तो कोई बोलने वाला नहीं है। इनके अतिरिक्त यदि कोई मानव की मृत्यु स्वयं करता है या अपने आदेश से मृत्यु कराता है तो वह अपराधी माना जाता है। जज साहेबान अपनी शक्ति को देखते हुए कानून की पटरी से नीचे न उतरें जोकि वर्तमान में अधिक मात्रा में जज साहेबान कानून की पटरी त्यागकर कोसों दूर जा चुके हैं।

इसी प्रकार 99 प्रतिशत राजनेता कानून की आड़ में अपनी शक्ति का दुरूपयोग करते हैं। गरीब जनता पर झूठे मुकदमें बनाकर न्यायालय पर व्यर्थ बोझ डाल देते हैं। गरीब व सामान्य व्यक्ति दबंग जनताजनों तथा अत्याचारी राजनेताओं का सताया हुआ आशा करता है कि न्यायालय में न्यायमूर्ति बैठे हैं, हमें न्याय मिलेगा। परन्तु जिस समय वह व्यक्ति भ्रष्ट-अन्याई जजों के पाटों में

फँस जाता है, उसको कोर्ट के चक्कर काटने के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता। अन्त में सामने वाला बरी होकर गरीब व्यक्ति को चिड़ाता हुआ चला जाता है। उदाहरण दें तो ''हमारे साथी कृष्ण सिंह भक्त ने आर्यप्रतिनिधि सभा हरियाणा के सचिव सत्यवीर शास्त्री पर गलत Statement देने पर मुकदमा किया था जो बाद में जज सविता कुमारी JMIC रोहतक की कोर्ट में चल रहा था। अपने दूसरे मुकदमें के जवाबदावे में सत्यवीर शास्त्री ने माना/ एडमिट किया था कि मैंने यह Statement दिनाँक 22-11-2005 के समाचार पत्र को ठीक मानकर दिया था। दिनाँक 24-11-2005 को अखबार में Statement आई, वह पहले वाले अखबार के आधार पर सच्ची मान कर दी थी। जब सत्यवीर शास्त्री ने अपना जुर्म लिखित में खुद कबूल कर लिया तो फिर और किसी सबूत या गवाही की आवश्यतकता नहीं रहती।

जज सविता कुमारी जी JMIC रोहतक ने अपने फैसले में लिखा कि मुझे ऐसा कोई सबूत नहीं मिला जिससे सिद्ध होता हो कि सत्यवीर शास्त्री ने यह स्टेटमैन्ट दी हो, इसलिए बरी किया जाता है। विचार करें क्या इस बहन जी को न्यायधीश कहा जा सकता है, इसे तो अन्यायधीश कहा जाना चाहिए। कृप्या देखें जज के उस आदेश के पृष्ठ 7 की फोटोकापी।

Krishan Singh v. Satbir Shastri

7

11. Thus, complainant having failed to prove the guilt of the accused beyond shadow of reasonable doubt, accused is hereby acquitted from the offences charged with. Bail bonds and surety bonds furnished stand extended for a further period of six months and in case no appeal is preferred after lapse of six months, same shall stand discharged. File be consigned to record room after due compliance.

Pronounced in Open Court.
Dated: 19.05.2014

Savita kumari
(Savita Kumari)
Judicial Magistrate Ist Class
Rohtak.

public was legitimately interested and it affected the administration of justice. These were fair comments on a matter of public interest and the public in general was loving directly or indirectly involved. The views of the defendant were ~~lovent~~ and relevant. The comments expressed in the news item were fair and were based upon news item dated 22.11.2005 and the FIR recorded in the case. The defendant believes those facts as true while issuing the press statement which was published on 24.11.2005. The defendant has a legal and vested right to comment on acts/deeds of public man which concern him.

❖ हमारे सभी भक्तों पर सन् 2006 में रोड़ जाम का झूठा केस बना था। वह इसी सविता जी की कोर्ट में विचाराधीन है। इसने हमारे से 10 लाख रु. माँगे। इसने कहा कि कोर्ट की स्पेशल फीस लगती है। जिससे आपका फैसला शीघ्र हो जाएगा तथा आपको बरी कर दिया जाएगा। हमने इसकी लिखित शिकायत मुख्य न्यायधीश पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट में की परन्तु आज तक कोई कार्यवाही नहीं की गई।

हमने अपना मुकदमा सविता जज से बदलवाने के लिए अर्जी लगाई, मुकदमा नहीं बदला गया। अब 30 अप्रैल को जज कीर्ति जैन जी की बदली हो गई, उसकी कोर्ट में आश्रम की जमीन का 420 वाला मुकदमा चल रहा था। कीर्ति जैन जी के स्थान पर इस केस को सविता कुमारी को दे दिया।

''यह अन्याय हो रहा है हमारे साथ''

अन्य मुकदमा नं. 198/2006 P.S. सदर रोहतक, सैशन जज रोहतक श्री सुशील कुमार जी गुप्ता की कोर्ट में चल रहा है। अधिक जानकारी आप आगे पढ़ेंगे। इसने भी हमारे से 30 लाख रु. माँगे थे, न्याय करने के। इसकी शिकायत भी पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट में की, परन्तु कोई सुनवाई नहीं हुई। हमने अपना यह मुकदमा सैशन जज सुशील गुप्ता से बदलकर अन्य सैशन जज की कोर्ट में बदलने की अर्जी लगाई थी। जुलाई 2014 से अप्रैल 2015 तक यह मुकदमा अन्य किसी अतिरिक्त सैशन जज की कोर्ट में नहीं बदला गया। अप्रैल 2015 में कुछ जजों के तबादले हुए हैं। एक अतिरिक्त सैशन जज अश्वनी कुमार फतेहाबाद कोर्ट से बदलकर रोहतक कोर्ट में लगा है। उसके विषय में प्रसिद्ध है

कि इसे न्याय शब्द से परहेज है। इसने अन्याय करना परमोधर्म मान रखा है। जो भक्त हिसार जेल नं. 1 से जमानत पर आए हैं, उन्होंने बताया कि जिन व्यक्तियों का फैसला अश्वनी कुमार जज ने दिया, वे सब इसे कोस रहे थे कि सरेआम अन्याय करता है। कोई कानून को आधार नहीं मानता, जो पैसे दे देता है उसको बरी, चाहे कितनी ही गवाही विरोध में आई हों। इस जज का सम्पर्क हाईकोर्ट के भ्रष्ट जजों से है। उन्होंने सुशील कुमार गुप्ता को बचाकर 14 जुलाई 2014 की घटना का दिनाँक 22-07-2014 को सन्त रामपाल जी पर झूठा अवमानना का मुकदमा बनाया है। जिसका परिणाम दिनाँक 18-11-2014 को हमें मिला देशद्रोह तक का झूठा मुकदमा इन्हीं की देन है।

अब मई 2015 को मुकदमा नं. 198/2006 सैशन जज सुशील गुप्ता ने जज अश्वनी कुमार की कोर्ट में दे दिया। यह पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट के अन्याई जजों की चौकड़ी के निर्देश पर हुआ है। रोहतक कोर्ट में और भी तीन अतिरिक्त जज हैं, उनको क्यों नहीं दिया क्योंकि वे उन पंजाब तथा हरियाणा हाईकोर्ट के भ्रष्ट जजों के प्रभाव में नहीं है। विचार करो पाठको! यह न्यायधीशों के कर्म हैं या किसी पार्टीबाज राजनेता के।

गरीब तथा भक्त व्यक्तियों के पीछे पहले तो आर्य समाज के दबंग आचार्य पड़े। तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा आर्यसमाजी को भ्रमित करके अपने पक्ष में करके सन्त रामपाल जी पर झूठे मुकदमें बनवाए, जेल में 21 महीने रहे। जमानत मिली। अब भ्रष्ट जज साहेबान पीछे पड़ गए। हाईकोर्ट के जजों के दबाव में वर्तमान सरकार ने बरवाला आश्रम छीन लिया। झूठे मुकदमें बना दिए, अब यह सरकार भी विरोधी हो गई। ऐसे में हम कहाँ जायें? किसके सामने अपना दुःख रोयें? मीडिया के माध्यम से सन्त रामपाल जी ही को झूठा बदनाम करा करके जनता में भी हमारे प्रति विष घोल दिया। अब तो हमारे साथ वही घटना हो गई जो प्रहलाद भक्त के साथ हुई थी। राजा हिरण्यकशिपु भी अपने पुत्र प्रहलाद का शत्रु बन गया। झूठी अफवायें फैलाकर जनता को भक्त प्रहलाद के विरुद्ध कर दिया। उसका परिणाम आया, वह बहुत भंयकर था।

अब हमारे साथ हो रहे अत्याचार तथा अन्याय का परिणाम देखना है, कैसा होगा? हम परमेश्वर से निवेदन करते हैं कि जज, राजनेता, अधिकारी तथा कर्मचारी व जनता, सन्त का विरोध व अत्याचार करके अपने कर्म खराब न करें। इनको सद्बुद्धि दे भगवान। ये सन्त रामपाल जी को ठीक से समझें। जीयें और जीने दें।

''वर्तमान के बिगड़े हालात कैसे सुधरेंगे?''

भारत वर्ष 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों से आजाद हुआ। उससे पहले लगभग 200 वर्ष तक गुलामी का गम भारतवासियों ने सहा क्योंकि यहाँ के नागरिक ऋषियों जैसे स्वभाव के सहनशील रहे हैं।

पश्चिमी देश जैसे अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि-आदि भूखण्ड़ देश थे। उनकी जलवायु जीवन के अनुकूल नहीं है। इसी कारण से वहाँ जनसंख्या कम रही है। वहाँ पर भारत जैसी ऋतुएं नहीं हैं, यहाँ जैसी उपजाऊ पृथ्वी नहीं है। समतल

जमीन का भी अभाव है। जिस समय अंग्रेज भारत में आए तो उनका तो बुरा हाल हो गया कि यहाँ पर धन-धान्य की कोई कमी नहीं। यहाँ जितना स्वर्ण (Gold) कहीं ओर नहीं। यहाँ पर हीरे भी अनमोल हैं। उन लुटेरे अंग्रेजों ने सर्व सोना, कोहीनूर हीरा तक इंग्लैण्ड में पहुँचा दिया। भारत की जनता साधु-सन्तों जैसी थी, वे अतिथियों का सत्कार करना जानती है। मेहमान कोई भी कीमती वस्तु माँग लेता, तुरन्त उठा कर दे देते थे। इसी नेक स्वभाव का नाजायज लाभ बेईमान अंग्रेजों ने उठाया। भारतवासी उन्हें मेहमान मानते थे। वे चतुर बेईमान खुश थे कि ये लोग तो मूर्ख है, इन्हें कोई पता ही नहीं, हम भारत को खोखला कर रहे हैं। भारतवासी मूर्ख नहीं थे, न हैं, परन्तु ये परमात्मा पर विश्वास करने वाले हैं। जो होता है वह परमात्मा की रजा का हिस्सा मानते हैं। सन्त रामपाल जी अपने सत्संगों में प्रवचन करते हैं, बताते हैं किः- जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा। हिन्दु मुस्लिम सिक्ख ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा।।

भावार्थ है कि पूरे विश्व के मानव तथा अन्य प्राणी एक परमेश्वर के बच्चे हैं। यह पूरी पृथ्वी परमात्मा की सम्पत्ति है। मानव अपने संस्कारवश जन्म लेता है, मरता है। आध्यात्म ज्ञान के न होने के कारण जो अंग्रेज भारत से धन, सोना, हीरे लूटकर इंग्लैण्ड ले गए, खुशी मनाई तथा भारतवासियों को मूर्ख समझा। लेकिन भारत आध्यात्म में जगतगुरु कहलाता है। इसलिए भारतवासियों को ज्ञान था कि यह केवल अपने सिर पर पाप रख रहे हैं। परमात्मा के विधानानुसार जीव जन्मता-मरता है। अपने किए कर्म का फल भी भोगता है। उन अंग्रेजों ने भारत का अन्न खाया। अन्न किसान पैदा करता है। वह अंग्रेज अधिकारी मृत्यु के उपरान्त भारत में जन्मा। बैल की योनि मिली। जिन किसानों का अन्न खाया। उनका कर्ज देने के लिए किसान के खेत में बैल बन कर कार्य किया, अपना कर्ज उतारा।

अब विचार करें:- मूर्ख अंग्रेज हैं या भारतीय। उन मूर्ख अंग्रेजों ने भारत से सोना धन ले जाकर इंग्लैण्ड में जमा कर दिया। खुद भारत में बैल बनकर भारतीयों के लठ्ठ खाऐ। किसी की भैंस बने, किसी के गधे, खच्चर बनकर अपना कर्जा उतारा। अब सिर पर रख ले उस स्वर्ण, धन तथा हीरों को। यह अध्यात्मिक ज्ञान की कमी के कारण है। उदाहरण है कि जो श्रीलंका के राजा रावण का पुत्र मेघनाथ था। उसकी पत्नी सुलोचना वाली आत्मा ही इंग्लैण्ड की रानी एलीजाबेथ थी। इस प्रकार अध्यात्म का ज्ञान होने के पश्चात् मानव कोई ऐसा कार्य नहीं कर सकता जिसका दण्ड भोगना पड़े। इसलिए भारत की गरीमा को गिरने से बचाने के लिए भारतीयों को अपनी प्राचीन सभ्यता तथा आदि सनातन धर्म को अपनाना पड़ेगा। सनातन धर्म का आधार पुराण है। अब हमने आदि सनातन धर्म को अपनाना पड़ेगा, जिसका आधार ''श्रीमदभगवत गीता, चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, साम वेद,अथर्ववेद) तथा सूक्ष्म वेद है।

''सूक्ष्म वेद'' क्या है?

गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में कहा है कि यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का विस्तार पूर्वक ज्ञान स्वयं (ब्रह्मणः मुखे) सच्चिदानन्द घन ब्रह्म ने अपने मुख कमल से बोलकर

बताया जिसे सच्चिदानन्द घन ब्रह्म की वाणी कहते हैं, उसको तत्व ज्ञान भी कहते हैं।

पाठकों से निवेदन : गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में गीता के अनुवादकों ने ''ब्रह्मणः'' का अर्थ गलत किया है। ब्रह्मणः का अर्थ वेद किया है। यह बिल्कुल गलत है। इन्हीं अनुवादकों ने गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में 'ब्रह्मणः' शब्द का अर्थ 'सच्चिदानन्द घन ब्रह्म किया है जो ठीक है। गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि उस तत्व ज्ञान को (जिसे परमेश्वर स्वयं अपने मुख से बोल कर सुनाता है। बाद में सच्चिदानन्द घन ब्रह्म की वाणी लीपिबद्ध की जाती है। वह सूक्ष्म वेद अर्थात् तत्व ज्ञान कहा जाता है।) तू तत्वदर्शी सन्तों के पास जाकर समझ, उनको दण्डवत प्रणाम करने से, सरलतापूर्वक प्रश्न करने से परमात्मा तत्व को भली-भाँति जानने वाले तत्वदर्शी सन्त तुझे तत्वज्ञान अर्थात् सूक्ष्मवेद का उपदेश करेंगे। (गीता अध्याय 4 श्लोक 34) इससे सिद्ध हुआ कि वह सूक्ष्म वेद (तत्वज्ञान) गीता, वेदों तथा पुराणों से बाहर का है क्योंकि वह ज्ञान परमेश्वर अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म (जिसके विषय में गीता अध्याय 8 श्लोक 1 का उत्तर गीता ज्ञान दाता ने इसी अध्याय के श्लोक 3 में कहा है जो गीता दाता से अन्य है, ने दिया है तथा गीता तथा चारों वेदों का ज्ञान ब्रह्म ने दिया है तथा पुराणों का ज्ञान श्री ब्रह्मा जी तथा उसके पश्चात् अन्य ऋषियों ने अपना अनुभव बताया है।

सूक्ष्म वेद में सम्पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान है। इसको स्वयं परम अक्षर ब्रह्म अपने मुख से बोलकर पृथ्वी पर सुनाता है। उसको लिख लिया जाता है। उसको तत्वदर्शी सन्त के बिना कोई नहीं समझ सकता। जिस कारण से धार्मिकता का ह्रास हो जाता है। तत्वदर्शी सन्त पुनः आध्यात्म का उत्थान करता है।

सन्त रामपाल दास जी द्वारा तत्वज्ञान अर्थात् सूक्ष्म वेद के आधार से आदि सनातन धर्म का प्रचार किया जा रहा है। गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में गीता ज्ञान दाता ने अपनी भक्ति का मन्त्र बताया है। गीता अध्याय 8 श्लोक 13 :-

ओम् इति एकाक्षरम् ब्रह्म व्याहरन् माम् अनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन् देहम् सः याति परमाम् गतिम्।।

सरलार्थ : मुझ ब्रह्म का यह एक अक्षर ओम् = ऊँ है, उच्चारण कर के स्मरण करता हुआ जो शरीर त्याग कर जाता है, वह परम गति को प्राप्त होता है अर्थात् जो गति ''ऊँ'' नाम के जाप से ब्रह्म की उपासना से होती है, वह परम गति हो जाती है। ओम् = ''ऊँ'' नाम के जाप से ब्रह्म लोक प्राप्त होता है। (जिसका विशेष प्रमाण श्री देवी पुराण = सचित्र मोटा टाईप गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित के पृष्ठ 562, 563 पर है। श्री देवीजी ने हिमालय राजा को बताया कि आप ओम् = ऊँ का जाप कर 'ब्रह्म' को प्राप्त करने का उद्देश्य रखें। इससे तू ब्रह्म को प्राप्त हो जाएगा। वह ब्रह्म, ब्रह्मलोक रुपी दिव्य आकाश में रहता है। आप ब्रह्मलोक में चले जाओगे।)

गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में कहा है कि ब्रह्म लोक में गए साधक भी पुनरावृति अर्थात् पुनः जन्म-मृत्यु में रहते हैं। गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि हे भारत! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा।

उसकी कृपा से ही तू परम शान्ति तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा।

गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्वदर्शी सन्त की प्राप्ति के पश्चात् तत्वज्ञान के द्वारा अज्ञान को समाप्त करके उसके पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए, जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते। उसी परमेश्वर ने सर्व ब्रह्मण्डों की रचना की है। उसी की भक्ति करनी चाहिए। गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में उस परमेश्वर अर्थात् सचिदानन्द घन ब्रह्म की भक्ति का नाम बताया है।

गीता अध्याय 17 श्लोक 23 :-

ऊँ तत् सत् इति निर्देशः ब्रह्मणः त्रिविधः स्मृतः। ब्राह्मणा तेन वेदाः च यज्ञाः च विहिताः पुरा।।

सरलार्थ : ''ऊँ तत् सत्'' यह तीन सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म का नाम कहा है। इसके स्मरण की विधि तीन प्रकार से है।

ब्रह्मणः अर्थात् विद्वान तत्वदर्शी सन्त सृष्टि की आदि में (तेन वेदाः) उसी तत्वज्ञान अर्थात् सूक्ष्म वेद तथा अन्य चार वेदों के आधार से यज्ञा अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान भक्ति कर्म किया करते थे। वह आदि सनातन धर्म की साधना है।

सनातन धर्म की साधना ओम् (ऊँ) मन्त्र तक ही है। आदि सनातन धर्म की साधना तीन नाम (ऊँ तत् तथा सत्) के जाप से होती है। ऊँ नाम ब्रह्म का जाप है, तत् यह गुप्त नाम और यह सांकेतिक है। यह अक्षर पुरुष अर्थात् अक्षर ब्रह्म का जाप मन्त्र है। 'सत्' यह परम अक्षर ब्रह्म का जाप मन्त्र है। यह सांकेतिक है, वास्तविक नाम है जो दीक्षार्थी को दीक्षा के समय बताया जाता है। तीन पुरुष अर्थात् प्रभुओं की जानकारी गीता अध्याय 15 श्लोक 16, 17 में है। सन्त रामपाल जी ने आदि सनातन धर्म की पुनः स्थापना की है। सर्व मानव समाज से निवेदन है कि ज्ञान समझें तथा दीक्षा लेकर कल्याण करायें।

❖ विशेष : सन् 2009 से सन्त रामपाल जी की आज्ञा से D.V.D. से दीक्षा दी जा रही है। यह परमार्थ अब भी जारी है, उसके लिए किसी भी प्रकार की अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :-08222880541, 08222880542.

''राजनेताओं की कार्यशैली तथा लक्ष्य''

आप जी को पता है कि एक गाँव का सरपंच बनने के लिए 10-20 लाख रु. व्यक्ति खर्च कर देता है। कहाँ से पूरे करेगा? यह बताने की आवश्यकता नहीं। इसी प्रकार M.L.A बनने के लिए लगभग एक करोड़ रु. खर्च किए जाते हैं। M.P बनने के लिए लगभग 4 करोड़ रुपये का खर्च करता है। कहाँ से पूरे करेगा? क्या पूरे ही करेगा या अपना घर भरेगा? लेकिन सब राजनेता घर भरने वाले नहीं हैं, न पहले थे। उनको परमात्मा ने या तो पर्याप्त धन दे रखा है या संतोष। वे केवल परमार्थ के लिए ही पद प्राप्त करते हैं। लेकिन इनकी सँख्या वर्तमान में तो नाममात्र है।

एक व्यक्ति ने बताया कि हमारे गाँव का सरपंच एक सेवानिवृत अध्यापक था जो सर्व सम्मति से चुना गया था। उसको उस क्षेत्र के M.P ने बुलाया। एक अपने एजेन्ट से बात करने को कहा। उस एजेन्ट ने बताया कि आपके गाँव का विकास करने के लिए M.P. साहब अपने कोटे से कुछ राशि ग्रान्ट रुप में देना

चाहते हैं। आप जी को 50 लाख रुपये का चैक दिया जाएगा। 30 लाख M.P. साहब को देने हैं। 10 लाख और अन्य विभाग के अधिकारियों का कमीशन होगा आप को 10 लाख रु. मिलेंगे। आप जितने खर्च करो आप की इच्छा, कुछ खर्च अवश्य करना होगा, बिल 50 लाख का बनाकर खानापूर्ति करनी है। आप चिन्ता मत करना, M.P. साहब ने कहा है। उस सरपंच ने गाँव की पंचायत बुलाई, सर्व बात बताई तथा कहा कि आप बताओ ग्रान्ट लाऊँ या नहीं। मैं तो एक पैसा लूँगा नहीं। सर्व पंचों तथा कुछ गाँव के प्रमुख माननीय व्यक्ति जो पंचायत में बुलाए गए थे, ने कहा कि भागते चोर की लंगोटी ही मिल जाए कुछ हाथ लगेगा। गाँव का कुछ तो कार्य होगा। पंचायत में चर्चा चली कि ये M.P. और M.L.A. लाखों-करोड़ों रु. खर्च करके चुनाव लड़ते हैं, ये तो ऐसा ही कर्म करेंगे। एक M.P. को एक वर्ष में 10 करोड़ रुपये मिलते हैं, अपने हल्के में विकास कराने के लिए। आप अनुमान लगा सकते हैं कि एक M.P. कितना धन पाँच वर्ष में कमा लेता है। इसी प्रकार एक M.L.A. को सरकार की ओर से लगभग 2 करोड़ रु. मिलते हैं।

आप अनुमान लगा सकते हैं कि मन्त्री, मुख्यमंत्री, केन्द्रीय मन्त्री तथा प्रधानमन्त्री जी कितना धन कमाते हैं? आप जी ने बहुत से घोटालों का जिक्र सुना है जिसमें केन्द्रीय मन्त्री ने एक लाख 60 हजार करोड़ का घोटाला किया। समाचारों में पढ़ा तथा सुना था। नेक राजनेताओं का भी कभी अभाव नहीं रहा है।

1. भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री पं. जवाहर लाल नेहरु जी सर्व सम्पन्न परिवार में जन्मे थे। देश के 17 वर्ष तक प्रधानमन्त्री रहे, निःस्वार्थ देश की सेवा की। श्री लाल बहादुर शास्त्री जी एक महान आदर्श और ईमानदार प्रधानमन्त्री थे। श्री मोराजी देशाई जी, श्री चरण सिंह जी जिनका हमें ज्ञान है, श्री अटल बिहारी वॉजपेयी जी, श्री देवीलाल जी उप प्रधानमन्त्री, ये सब बेदाग राजनेता थे।

श्री मनमोहन सिंह जी पूर्ण रुप से ईमानदार थे, परन्तु दागी हो गए। कहते हैं कि एक भैंस कीचड़ में लेट कर निकलकर कई भैंसों को दाग लगा देती है। श्री मनमोहन सिंह जी के विषय में धारणा रही है कि ये अपना फैसला नहीं ले सकते थे, न विशेष बोलते थे। जो पार्टी अध्यक्ष कहते, वही करते थे। उन्हें रबड़ की मोहर तक उपमा दी गई थी। विचार करें:- प्रधानमन्त्री, M.P. (सांसदों) द्वारा चुना जाता है। संसद में 540 सांसद है। प्रधानमन्त्री उसी पार्टी का बनता है जिसका बहुमत (271 सांसद कम से कम) हो। संसद एक महापंचायत होती है। सब सांसद मिलकर देश हित में योजना बनाते हैं। अकेला प्रधानमन्त्री अपना आदेश नहीं थोप सकता। उस योजना को प्रधानमन्त्री जी के श्री मुख से देश की जनता को सुनाया जाता है। समाचारों में कहा जाता है कि प्रधानमन्त्री जी ने अमूक योजना लागू की है। यह निर्णय संसद का सामूहिक होता है, जिसमें प्रधानमन्त्री जी के विचारों को भी ध्यान में रखकर चर्चा होती है। उस निर्णय को चाहे मौखिक सुना दो, चाहे पढ़ कर बात एक ही है। आगे जैसे भी प्रधानमन्त्री जी की कार्य शैली होगी, वह जनता के समक्ष होगी।

हमारी धारणा है कि अच्छा प्रधानमन्त्री, ईमानदार तथा बुद्धिमान प्रधानमन्त्री भारत को सोने की चिड़िया फिर से बना देगा। विचार करें:- पण्डित जवाहरलाल नेहरू जी से लेकर श्री मनमोहन सिंह जी तक भारत के 14 प्रधानमन्त्री पद पर रहे

हैं। क्या ये बुद्धिमान तथा ईमानदार नहीं थे? अधिकतर बुद्धिमान ही थे। सन् 1947 से सन् 2013 तक विकास देखें तो भारत वर्ष की गरीमा चरम पर है। आगे आने वाले प्रधानमन्त्री जी भी ऐसा ही विकास करेंगे। वर्तमान में उन्नत भारत में क्या हो रहा है?

1. भ्रष्टाचार : भ्रष्टाचार देश का सबसे बड़ा शत्रु है। भ्रष्टाचारी व्यक्ति अपने देशवासियों का रक्तपान कर रहे हैं। सबसे बड़े देशद्रोही हैं। वर्तमान में 99 प्रतिशत राजनेता, राजकीय अधिकारी, कर्मचारी भ्रष्ट हैं। 90 प्रतिशत जज भ्रष्ट हैं। यदि कोई मुख्यमंत्री जी तथा प्रधानमन्त्री जी ईमानदार हैं तो ''अकेला चना क्या भाड़ फोड़ेगा?'' सन् 1947 से सन् 1970-75 तक इसके विपरीत स्थिति थी।

क्या कोई नेक ईमानदार प्रधानमन्त्री या मुख्यमंत्री देश या प्रदेश को भ्रष्टाचार मुक्त कर सकता है? कभी नहीं क्योंकि उनके सामने अपनी पार्टी तथा विपक्ष पार्टी के राजनेता सबसे पहले आड़े आऐंगे और सरकार बनाए रखने के लिए ईमानदार प्रधानमन्त्री तथा मुख्यमन्त्री जी को दिल पर पत्थर रखने पड़ते हैं। सब कुछ जानते हुए भी कुछ नहीं कर सकता। हम विदेशों से काला धन लाने की बात सुनते हैं। वह आ गया तो देश के प्रत्येक गरीब नागरिक को लगभग दो लाख रुपये मिल जायेंगे। देश उन्नत हो जाएगा। यदि वह धन आ जाए तो बहुत ही अच्छी बात होगी। परन्तु भ्रष्टाचार फिर भी बना रहेगा। मानव समाज में फैली बुराई देश के नागरिकों को उन्नत नहीं होने देगी।

❖ सन् 1978 में एक रोहतक के रिक्शा चालक की एक लाख रुपये की लॉटरी निकली। उस समय के एक लाख रूपए सन् 2013 के एक करोड़ रूपए के बराबर थे। उस रिक्शा चालक ने एक वर्ष में वह एक लाख रुपया नष्ट कर दिया। दस हजार रूपये की लॉटरी खरीद ली। जिसमें एक रूपया भी नहीं निकला तथा शराब पीने लगा, कीमती पोषाक सिलाई, मोटर साईकिल ले ली। रिश्तेदारियों में गया, एक वर्ष में सर्व धन समाप्त करके फिर रिक्शा चलाने लगा।

❖ इसी प्रकार यदि वर्तमान में एक-एक करोड़ रूपये भी प्रत्येक नागरिक के हिस्से आ जाए तो भी एक वर्ष में वही स्थिति होगी क्योंकि मनुष्यों में बुराई, सन् 1978 की तुलना में बहुत अधिक हो गई है। वर्तमान में दिल्ली के साथ लगते हरियाणा की जमीन सरकार ने इक्वायर की। उन घरों के लड़कों ने मँहगी कारें खरीदी, पिस्टल खरीदा, दिल्ली के रेस्टोरेन्टों में ऐश की तथा एक वर्ष में ही सर्वधन का नाश करके अब अपहरण और डाके मारकर गैरकानूनी तरीके से इच्छाओं की पूर्ति करने की चाह में अब जेलों में पड़े हैं, पुत्र मोहवश माता-पिता उनकी मुलाकात करके उनको रुपये पहुँचा रहे हैं और रो रहे हैं।

प्रश्न :- कैसे हो भ्रष्टाचार समाप्त ताकि पुनः भारत बने सोने की चिड़िया?

उत्तर :- सन्त रामपाल दास जी महाराज के सत्संगों की D.V.D एक वर्ष प्रतिदिन एक घण्टा प्रत्येक चैनलों पर चले। हम दावे के साथ कहते हैं कि भ्रष्टाचार तथा समाज की बुराई तथा कुरीतियाँ एक वर्ष में 99 प्रतिशत समाप्त होकर भारत जगत गुरु तथा सोने की चिड़िया बन जाएगा। यदि ऐसा न हो तो हमें (सन्त रामपाल जी तथा उनके अनुयाइयों का) देशद्रोह या इससे भी अधिक दण्डनीय धारा के तहत चौराहों पर फाँसी पर लटका देना। हमसे शपथ पत्र ले

लेना। सन्त रामपाल जी महाराज के सत्संग का कुछ अंश प्रस्तुत करते हैं :-
कबीर, रामनाम कड़वा लगे मीठे लागें दाम। दुविधा में दोनों गए माया मिली ना राम।।

पंजाब प्रान्त के फिरोजपुर जिले में एक छोटा-सा कस्बा है, जिसका नाम है ''तलवण्डी भाई जी''। उसमें सन्त रामपाल जी के पूज्य गुरुजी सन्त स्वामी रामानन्द जी का आश्रम है। स्वामी जी के सतलोक गमन (देहान्त) के पश्चात् सन्त रामपाल जी वहाँ पर दूसरे रविवार को प्रति महीने सत्संग करने जाते थे। उस कस्बे में स्वामी रामानन्द जी के बहुत शिष्य हैं जो अधिकतर व्यापारी (**Businessmen**) हैं। किसी भक्त की दादी का निधन हो गया। उसका शोक व्यक्त करने एक सेठ तलवण्डी भाई जी में आया। वह शनिवार को शाम 4 बजे जाने लगा, वह चण्डीगढ़ रहता था। भक्त ने अपने रिश्तेदार से कहा कि आप जी कल रविवार को जाना, आज रुक जाओ, कल हमारे गुरुजी के आश्रम में सत्संग होगा, हरियाणा से महात्मा जी आयेंगे, बहुत मार्मिक सत्संग करते हैं। आप सुन कर अचम्भित हो जाओगे। रिश्तेदार सेठ ने कहा कि मैंने बहुत सत्संग सुने हैं। सब महात्मा अच्छा ज्ञान देते हैं। भक्त ने कहा कि यह सत्संग सब महात्माओं से निराला तथा शास्त्र प्रमाणित है। रिश्तेदार ने कहा कि कल रविवार को दिन के ढ़ेड बजे एक पार्टी ने चण्डीगढ़ आना है। उसके साथ मेरा अनुबन्ध होना है। जिसमें मुझे 5 लाख रुपये का लाभ होगा। यह घटना अप्रैल 1997 की है। उस समय के 5 लाख वर्तमान के 4 करोड़ के समान थे। भक्त ने कहा कि सुबह 8 से 10 सत्संग होता है। आप लंगर खाकर 10.30 बजे चल पड़ना। समय पर पहुँच जाआगे। उससे फोन करके कह देना कि आप 2½ P.M पर आना। यह सब-कुछ कहने पर भी वह रिश्तेदार नहीं माना तथा शनिवार को 4 बजे सपरिवार (दो बच्चे लड़का-लड़की, पत्नी) सहित चण्डीगढ़ के लिए रवाना हो गया।

अम्बाला शहर से पहले एक बजरी का भरा ट्रक खराब खड़ा था। उसके पिछले पहिए निकाल रखे थे, जैक लगा रखा था। रिश्तेदार सेठ को 5 लाख के लाभ के अतिरिक्त कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, स्वयं कार चला रहा था। कार उस समय बहुत गति से चल रही थी। यह देखने वालों ने बताया। कार उस ट्रक के नीचे पूरी गति से घुस गई। जैक खिसक गया। बजरी से भरा ट्रक कार पर गिर गया। चारों प्राणियों की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई।

बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि अब उस 5 लाख के लाभ को सिर पर रख ले। भगवान से भी वंचित रहा, माया भी नहीं मिली। जो पहले सारा जीवन में संग्रह की थी, उसको कोई अन्य ही बरतेगा (प्रयोग करेगा)। वह सेठ क्या लेकर गया? केवल पाप जो उस माया का संग्रह करने में किए थे। माया तो रही नहीं पापों को सिर पर उठा कर ले गया। यदि वह सेठ जी रुक जाता तो भगवान की चर्चा सुनता तथा परिवार नाश से भी बचता। इसलिए सन्त रामपाल जी ने बताया है कि आध्यात्म ज्ञान न होने के कारण ही मानव गलतियाँ कर रहा है। भ्रष्टाचार करके धन जोड़कर पाप का भागी बन रहा है। फिर दण्ड भोगता है। मिलावट की है या जिससे रिश्वत ली है या अन्य विधि से गलती करके धन प्राप्त किया है, वह तो लौटाना पड़ेगा। किसी का बैल बनेगा, किसी का गधा

आदि-आदि बनकर कर्ज उतारना पड़ेगा। सन्त रामपाल जी सत्संग में बताते हैं कि जैसे बच्चा जब तक अबोध रहता है, वह बिजली के नंगे तार को भी पकड़ लेता है, मर जाता है। सर्प को पकड़ लेता है, जो डस लेता है। बच्चा मर जाता है।

जब वह बच्चा बड़ा हो जाता है, उसको ज्ञान कराया जाता है कि यह बिजली का तार नंगा है। इसके छूने से आदमी मर जाता है। सर्प का चित्र पुस्तकों में देखकर बच्चा जानना चाहता है कि यह क्या है? उसे बताया जाता है कि यह सर्प है। इसके निकट नहीं जाना चाहिए। यह डस लेता है तो आदमी मर जाता है। यह ज्ञान होने के पश्चात् वह बच्चा कहीं पर सर्प देख लेता है तो स्वयं तो दूर भागता ही है, अन्य को भी सतर्क करता है कि देखो सामने नाग है, यह डस लेता है, व्यक्ति मर जाता है। इसी प्रकार किसी शीशी (**Bottal**) में विष या विषैली (**Medition**) वस्तु रखी हो। बच्चे को बताया गया हो कि इस बोतल में विष है। इसको चखना भी नहीं है। इसके खाने से आदमी मर जाता है तो वह बच्चा उस बोतल के विष को कभी नहीं खाता बल्कि अन्य को भी विष के खाने से होने वाली हानि के बारे में बताता है। सूक्ष्म वेद में कहा है :-

जैसे किरका जहर का रंग होरि हो। कहो, कौन तिस खाय राम रंग होरि हो।।
सन्त का सत्संग कीजिए रंग होरी हो। कटे सकल कलेश राम रंग होरी हो।।

भावार्थ :- यदि कहीं पर विष का किरका (कण) भी गिरा हो तो ज्ञानी व्यक्ति उस जहर के कण को भी नहीं खाता। फिर अधिक विष को खाने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

आध्यात्मिक ज्ञान से ज्ञान होता है कि भ्रष्टाचार, अन्य बुराइयों (नशा, माँस सेवन, परस्त्री गवन, चोरी, डाके) से कितना पाप होता है, वह विष के समान है। उसका ज्ञान सन्त जन सत्संग के माध्यम से कराते हैं। इसलिए कहा है कि सन्तों का सत्संग सुनना चाहिए जिससे सर्वसंकट कट जाते हैं। बुराईयां छूट जाती हैं तथा परमात्मा के रंग में रंगने के पश्चात् आप जी के घर प्रतिदिन होरि अर्थात् जैसे होली के त्यौहार पर हरियाणा में खुशी मनाते हैं, उस समय फाल्गुन मास का सुहावना मौसम होता है, न गर्मी-सर्दी होती है, वह आनन्द भिन्न होता है। इसी प्रकार कहा है कि फिर आपके जीवन में सदा होली रहेगी। वह नाम के जाप का रंग सदा आपकी आत्मा पर बरसेगा। जिससे लोक तथा परलोक दोनों सुखमय हो जाएंगे। तत्वज्ञान के सुनने के पश्चात् प्रत्येक व्यक्ति रिश्वत लेने से ऐसे डरेगा जैसे विष के कण से ज्ञानवान व्यक्ति बचता है। इस प्रकार एक वर्ष में भारत वर्ष भ्रष्टाचार मुक्त, बुराई रहित होकर जगत गुरु तथा सोने की चिड़िया बन जाएगा।

सन्त रामपाल जी अपने सत्संग प्रवचनों में बताते हैं कि जहाँ पर भक्ति नहीं, वह घर, गांव, देश किसी काम का नहीं चाहे कितना ही धनी हो। चाहे राजा रावण की तरह सोने (स्वर्ण) के महल बना रखे हों। व्यर्थ है, परमेश्वर कबीर जी ने सूक्ष्म वेद में कहा है :-

कबीर, राम रटत निर्धन भला, टूटि घर की छान।
कंचन (स्वर्ण) महल किस काम के, जहाँ भक्ति नहीं भगवान।।
कबीर, सब जग निर्धना, धनवन्ता ना कोय।
धनवन्ता सो जानिये, जिस पर रामनाम धन होय।।

जैसे वर्तमान में पश्चिमी देशों (अमेरिका, जापान, इंग्लैण्ड आदि-आदि) को बड़ा महान माना जाता है। कारण क्या है कि वे कारीगर देश हैं। उन्होंने जहाज, कम्प्यूटर, मोबाईल तथा अन्य आधुनिक उपकरण बनाए, उनको बेचते हैं। इससे वे महान हाई टेक्नोलॉजी वाले उन्नत देश कहलाते हैं। परन्तु विचार करें तो भारत देश महान है। जैसे-हलवाई के पास टेक्नोलॉजी है कि वह लड्डू, जलेबी, बर्फी आदि-आदि मिठाई बनाता है और बेचता है, उसको एक किसान तथा मजदूर खरीदता है और खाता है। विचार करें हलवाई महान है या ग्राहक।

दुकानदार तो दुकान पर लिखकर रखता है कि ग्राहक मेरा देवता है। यदि ग्राहक मिठाई खरीदेगा ही नहीं तो हलवाई कंगाल हो जाएगा। इसी प्रकार उपरोक्त पश्चिमी देश तो हलवाई हैं और भारत उसका ग्राहक है। इसलिए भारत देश महान है। दूसरी विशेष बात यह है कि जो टेक्नोलॉजी मानव को चाहिए, वह वर्तमान में भारत में सन्त रामपाल दास जी के पास है।

आध्यात्मिक सम्पूर्ण ज्ञान जिसे तत्व ज्ञान भी कहते हैं। भक्ति के बिना चाहे अरब पति-खरबपति बना है, उसका मानव जीवन व्यर्थ है। जैसे एक मुख्यमन्त्री जी हैलीकॉप्टर से एक स्थान पर झलसा करके दूसरे शहर में जा रहा था। उसके इन्तजार में हजारों व्यक्ति हाथों में फूल मालाएं लिए खड़े थे। रास्ते में दुर्घटना ग्रस्त होकर हेलीकॉप्टर गिर गया, मुख्यमन्त्री मर गया, तीन दिन में शव मिला था, आधा जला सड़ा। भक्ति की नहीं, कर्म का पुण्य समाप्त हुआ। सारी सम्पत्ति छोड़ कर गधा बना। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है -

कहां जन्में, कहां पाले–पोषे, कहाँ लड़ाए लाड।
ना बेरा इस देह के कहां खिण्डैंगे हाड।।

इसलिए ''भजन कर राम दुहाई रे भजन कर राम दुहाई रे।'' शेष जो अभी पद पर विराजमान हैं, वे उसी दौड़ में शामिल हैं जिसमें दिवंगत मुख्यमंत्री जी थे। यह है अबोध बच्चों का कार्य। जब सन्त रामपाल जी के सत्संगों से ज्ञानवान हो जाएंगे, तब तो यह माया तथा भक्ति न करके केवल राज प्राप्ति विष की शीशी (**Bottle**) के तुल्य लगेगा। यदि कोई मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री या अन्य राज अधिकारी, मन्त्री आदि पद प्राप्त करेगा तो कलम परमात्मा के श्री चरणों में रखकर पाप से डर कर चलाएगा। राज्य रहे या न रहे, अपने कर्तव्य से नहीं डिगेगा, वह भगवान से डरेगा।

गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 के अनुसार परमात्मा की सत्य साधना शास्त्रानुकूल करने से सुख, सिद्धि तथा परम गति तीनों प्राप्त होती हैं। इसके विपरीत शास्त्रविधि को त्यागकर मनमाना आचरण करने से न सुख होता है, न सिद्धि तथा न परम गति अर्थात् भक्ति शास्त्र विरुद्ध करके भी मानव जीवन व्यर्थ होता है। सन्त रामपाल जी के पास वह शास्त्रअनुकूल सत्य साधना है जो सर्व को उपरोक्त तीनों पदार्थ प्राप्त कराएंगे तथा पापों से बचाएगी। भ्रष्टाचार, नशा, माँसाहार, दुराचार, चोरी, ठगी, पूर्ण रुप से समाप्त होकर देश भारत महान बन जाएगा। मानव शान्ति से भक्ति करके ''जीओ और जीने दो'' के सिद्धान्त के आधार से अपना जीवन जीएगा।

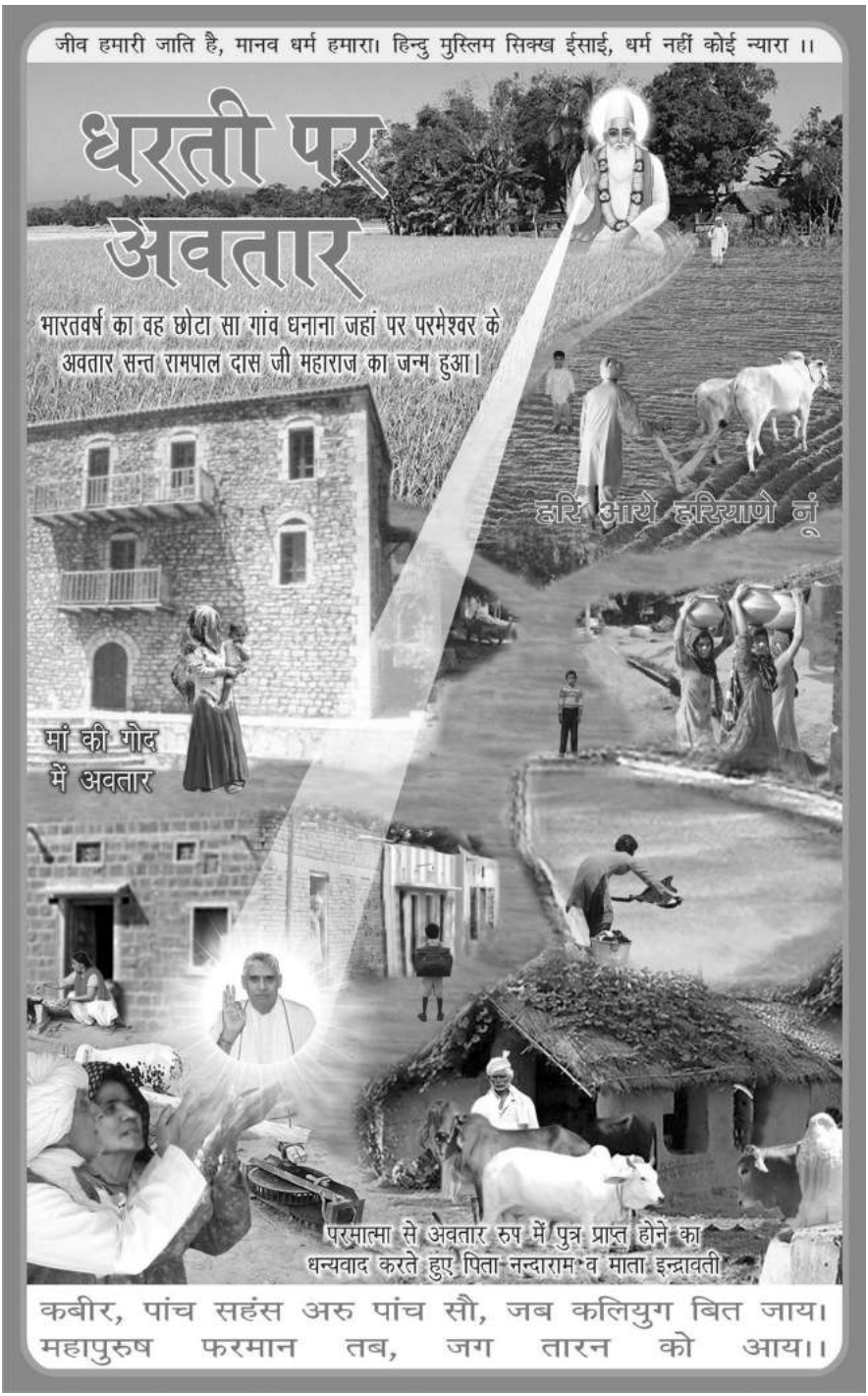
जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा। हिन्दु मुस्लिम सिक्ख ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा ।।
धरती पर अवतार
भारतवर्ष का वह छोटा सा गांव धनाना जहां पर परमेश्वर के अवतार सन्त रामपाल दास जी महाराज का जन्म हुआ।
हरि आये हरियाणे नूं
मां की गोद में अवतार
परमात्मा से अवतार रुप में पुत्र प्राप्त होने का धन्यवाद करते हुए पिता नन्दाराम व माता इन्द्रावती
कबीर, पांच सहंस अरु पांच सौ, जब कलियुग बित जाय।
महापुरुष फरमान तब, जग तारन को आय।।

''अवतार की परिभाषा''

'अवतार' का अर्थ है ऊँचे स्थान से नीचे स्थान पर उतरना। विशेषकर यह शुभ शब्द उन उत्तम आत्माओं के लिए प्रयोग किया जाता है, जो धरती पर कुछ अद्भभुत कार्य करते हैं। जिनको परमात्मा की ओर से भेजा हुआ मानते हैं या स्वयं परमात्मा ही का पृथ्वी पर आगमन मानते हैं।

श्री मद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16-17 में तीन पुरूषों (प्रभुओं) का ज्ञान है।

❑ 1. क्षर पुरूष जिसे ब्रह्म भी कहते हैं। जिसका ॐ नाम साधना का है। जिसका प्रमाण गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में है।

❑ 2. अक्षर पुरूष जिसको परब्रह्म भी कहते हैं। जिसकी साधना का मंत्र तत् जो सांकेतिक है। प्रमाण गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में है।

❑ 3. उत्तम पुरूष तूः अन्यः = श्रेष्ठ पुरूष परमात्मा तो उपरोक्त दोनों पुरूषों (क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष) से अन्य है। वह परम अक्षर पुरूष है जिसे गीता अध्याय 8 श्लोक 1 के उत्तर में अध्याय 8 के श्लोक 3 में कहा है कि वह परम अक्षर ब्रह्म है। इसका जाप सत् है जो सांकेतिक है। इसी परमेश्वर की प्राप्ति से साधक को परम शांति तथा सनातन परमधाम प्राप्त होगा। प्रमाण गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में यह परमेश्वर (परम अक्षर ब्रह्म) गीता ज्ञान दाता से भिन्न है। अधिक ज्ञान प्राप्ति के लिए कृप्या पुस्तक ''धरती पर अवतार'' सतलोक आश्रम बरवाला से प्राप्त करें। अवतार दो प्रकार के होते हैं। जैसे ऊपर कहा गया है। अब आप जी को पता चला कि मुख्य रूप से तीन पुरूष (प्रभु) है। जिनका उल्लेख ऊपर कर दिया गया है। हमारे लिए मुख्य रूप से दो प्रभुओं की भूमिका रहती है।

1. क्षर पुरूष (ब्रह्म) :- जो गीता अध्याय 11 श्लोक 32 में अपने आप को काल कहता है।

2. परम अक्षर पुरूष (परम अक्षर ब्रह्म) :- जिसके विषय में गीता अध्याय 8 श्लोक 3 तथा 8,9,10 में तथा गीता अध्याय 18 श्लोक 62 अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 17 में कहा है।

''ब्रह्म (काल) के अवतारों की जानकारी''

गीता अध्याय 4 का श्लोक 7

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्। ७ ।

यदा, यदा, हि, धर्मस्य, ग्लानिः, भवति, भारत,
अभ्युत्थानम्, अधर्मस्य, तदा, आत्मानम्, सृजामि, अहम्।।7।।

अनुवाद : (भारत) हे भारत! (यदा,यदा) जब-जब (धर्मस्य) धर्मकी (ग्लानिः) हानि और (अधर्मस्य) अधर्मकी (अभ्युत्थानम्) वृद्धि (भवति) होती है (तदा) तब-तब (हि) ही (अहम्) मैं (आत्मानम्) अपना अंश अवतार (सृजामि) रचता हूँ अर्थात् उत्पन्न करता हूँ। (7)

जैसे श्री मद्भगवत् गीता अध्याय 4 श्लोक 7 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि जब-जब धर्म में घृणा उत्पन्न होती है। धर्म की हानि होती है तथा अधर्म की वृद्धि होती है तो मैं (काल = ब्रह्म = क्षर पुरूष) अपने अंश अवतार सृजन करता हूँ अर्थात् उत्पन्न करता हूँ।

जैसे श्री रामचन्द्र जी तथा श्री कृष्ण चन्द्र जी को काल ब्रह्म ने ही पृथ्वी पर उत्पन्न किया था। जो स्वयं श्री विष्णु जी ही माने जाते हैं।

इनके अतिरिक्त 8 अवतार और कहे गये हैं। जो श्री विष्णु जी स्वयं नहीं आते अपितु अपने लोक से अपने कृपा पात्र पवित्र आत्मा को भेजते हैं। वे भी अवतार कहलाते हैं। कहीं-2 पर 25 अवतारों का भी उल्लेख पुराणों में आता है। काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) के भेजे हुए अवतार पृथ्वी पर बढ़े अधर्म का नाश कत्लेआम अर्थात् संहार करके करते हैं।

उदाहरण के रूप में :- श्री रामचंद्र जी तथा श्री कृष्णचंद्र जी, श्री परशुराम जी तथा श्री निःकलंक जी (जो अभी आना शेष है, जो कलयुग के अन्त में आएगा)। ये सर्व अवतार घोर संहार करके ही अधर्म का नाश करते हैं। अधर्मियों को मारकर शांति स्थापित करने की चेष्टा करते हैं। परन्तु शांन्ति की अपेक्षा अशांति ही बढ़ती है। जैसे श्री रामचंद्र जी ने रावण को मारने के लिए युद्ध किया। युद्ध में करोड़ों पुरूष मारे गए। जिन में धर्मी तथा अधर्मी दोनों ही मारे गए। फिर उनकी पत्नियाँ तथा छोटे-बड़े बच्चे शेष रहे उनका जीवन नरक बन गया। विधवाओं को अन्य व्यक्तियों ने अपनी हवस का शिकार बनाया। निर्वाह की समस्या उत्पन्न हुई आदि-२ अनेकों अशांति के कारण खड़े हो गए। यही विधि श्री कृष्ण जी ने अपनाई थी, यही विधि श्री परशुराम जी ने अपनाई थी। इसी विधि से दसवां अवतार काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) द्वारा उत्पन्न किया जाएगा। उसका नाम ''निःकलंक'' होगा। वह कलयुग के अन्तिम समय में उत्पन्न होगा। जो राजा हरिशचन्द्र वाली आत्मा होगी। संभल नगर में श्री विष्णुदत्त शर्मा के घर में जन्म लेगा। उस समय सर्व मानव अत्याचारी - अन्यायी हो जाऐंगे। उन सर्व को मारेगा। उस समय जिन-२ मनुष्यों में परमात्मा का डर होगा। कुछ सदाचारी होंगे उनको छोड़ जाएगा अन्य सर्व को मार डालेगा। यह विधि है ब्रह्म (काल-क्षर पुरूष) के अवतारों की अधर्म का नाश करने तथा शांति स्थापना करने की।

''परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् सत्यपुरूष के अवतारों की जानकारी''

❑ 1. परम अक्षर ब्रह्म स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होता है। वह सशरीर आता है। सशरीर लौट जाता है :- यह लीला वह परमेश्वर दो प्रकार से करता है।

❑ क = प्रत्येक युग में शिशु रूप में किसी सरोवर में कमल के फूल पर वन में प्रकट होता है। वहां से निःसन्तान दम्पति उसे उठा ले जाते हैं। फिर लीला करता हुआ बड़ा होता है तथा आध्यात्मिक ज्ञान प्रचार करके अधर्म का नाश करता है। सरोवर के जल में कमल के फूल पर अवतरित होने के कारण परमेश्वर नारायण कहलाता है (नार=जल, आयण=आने वाला अर्थात् जल पर

निवास करने वाला नारायण कहलाता है।)

❑ ख = जब चाहे साधु सन्त जिन्दा के रूप में अपने सत्यलोक से पृथ्वी पर आ जाते हैं तथा अच्छी आत्माओं को ज्ञान देते हैं। फिर वे पुण्यात्माऐं भी ज्ञान प्रचार करके अधर्म का नाश करते हैं। वे भी परमेश्वर के भेजे हुए अवतार होते हैं।

कलयुग में ज्येष्ठ शुदि पूर्णमासी संवत् 1455 (सन् 1398) को कबीर परमेश्वर सत्यलोक से चलकर आए तथा काशी शहर के लहर तारा नामक सरोवर में कमल के फूल पर शिशु रूप में विराजमान हुए। वहां से नीरू तथा नीमा जो जुलाहा (धाणक) दम्पति थे, उन्हें उठा लाए। शिशु रूपधारी परमेश्वर कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने 25 दिन तक कुछ भी आहार नहीं किया। नीरू तथा नीमा उसी जन्म में ब्राह्मण थे। श्री शिव जी के पुजारी थे। मुसलमानों द्वारा बलपूर्वक मुसलमान बनाए जाने के कारण जुलाहे का कार्य करके निर्वाह करते थे। बच्चे की नाजुक हालत देखकर नीमा ने अपने ईष्ट शिव जी को याद किया। शिव जी साधु वेश में वहां आए तथा बालक रूप में विराजमान कबीर परमेश्वर को देखा। बालक रूप में कबीर साहेब जी ने कहा हे शिव जी इन्हें कहो एक कुँवारी गाय लाऐं वह आप के आशीर्वाद से दूध देगी। ऐसा ही किया गया। कबीर परमेश्वर के आदेशानुसार भगवान शिव जी ने कुँवारी गाय की कमर पर थपकी लगाई। उसी समय बछिया के थनों से दूध की धार बहने लगी। एक कोरा मिट्टी का छोटा घड़ा नीचे रखा। पात्र भर जाने पर दूध बन्द हो गया। फिर प्रतिदिन पात्र थनों के नीचे करते ही बछिया के थनों से दूध निकलता। उसको परमेश्वर कबीर जी पीया करते थे। जुलाहे के घर परवरिश होने के कारण बड़े होकर परमेश्वर कबीर जी भी जुलाहे का कार्य करने लगे तथा अपनी अच्छी आत्माओं को मिले, उनको तत्वज्ञान समझाया तथा स्वयं भी तत्वज्ञान प्रचार करके अधर्म का नाश किया तथा जिन-२ को परमेश्वर जिन्दा महात्मा के रूप में मिले, उनको सच्चखण्ड (सत्यलोक) में ले गए तथा फिर वापिस छोड़ा, उनको आध्यात्मिक ज्ञान दिया तथा अपने से परिचित कराया। वे उस परमेश्वर (सत्य पुरूष) के अवतार थे। उन्होंने भी परमेश्वर से प्राप्त ज्ञान के आधार से अधर्म का नाश किया। वे अवतार कौन-२ हुऐ हैं।

(1.) आदरणीय धर्मदास जी (2.) आदरणीय मलुकदास जी (3.) आदरणीय नानक देव साहेब जी (सिख धर्म के प्रवर्तक)(4.) आदरणीय दादू साहेब जी (5.) आदरणीय गरीबदास साहेब जी गांव छुड़ानी जि. झज्जर (हरियाणा) वाले तथा (6.) आदरणीय घीसा दास साहेब जी गांव खेखड़ा जि. मेरठ (उत्तर प्रदेश) वाले ये उपरोक्त सर्व अवतार परम अक्षर ब्रह्म (सत्य पुरूष) के थे। अपना कार्य करके चले गए। अधर्म का नाश किया। जिस कारण से जनता में बहुत समय तक बुराई नहीं समाई। वर्तमान में सन्तों की कमी नहीं परन्तु शांति का नाम नहीं, कारण यह है कि इन संतों की साधना शास्त्रों के विरूद्ध है। जिस कारण से समाज में अधर्म बढ़ता जा रहा है। इन पंथों और सन्तों को सैकड़ों वर्ष हो गए ज्ञान प्रचार करते हुए परन्तु अधर्म बढ़ता ही जा रहा है।

''सत्यपुरूष का वर्तमान अवतार''

जो सत्य साधना तथा तत्वज्ञान का प्रचार परमेश्वर के पूर्वोक्त परमेश्वर के अवतार सन्त किया करते थे। जिससे आपसी प्रेम था, एक दूसरे के दुःख में दुःखी होते थे, असहाय व्यक्ति की मदद करते थे, वही शास्त्रविधि अनुसार साधना तथा वही आध्यात्मिक यथार्थ ज्ञान संत रामपाल दास जी महाराज को परमेश्वर कबीर साहेब जी ने प्रदान किया है। मार्च 1997 को फाल्गुन मास की शुक्ल प्रथमा को दिन के दस बजे जिन्दा महात्मा के रूप में सत्यलोक से आकर सन्त रामपाल दास जी महाराज को सतनाम तथा सारनाम दान करने का आदेश देकर अन्तर्ध्यान हो गए।

सन्त रामपाल दास जी महाराज भी परमेश्वर (परम अक्षर ब्रह्म) के उन अवतारों में से एक हैं जो आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा अधर्म का नाश करते हैं। अब विश्व में शांति होगी। सर्व धर्म तथा पंथों के व्यक्ति एक होकर आपस में प्रेम से रहा करेंगे। राजनेता भी निर्भिमानी, न्यायकारी तथा परमात्मा से डर कर कार्य करने वाले होंगे। जनता के सेवक बनकर निष्पक्ष कार्य किया करेंगे। धरती पर पुनः सत्ययुग जैसी स्थिति होगी। वर्तमान में धरती पर वह अवतार सन्त रामपाल दास जी हैं। अब घर-२ में परमेश्वर के ज्ञान की चर्चा होगी। जहां गांव व शहरों में तथा पार्कों में बैठकर ताश खेलते है, कोई राजनीतिक बातें करता है, कोई अपने पुत्रों तथा पुत्र वधुओं की अच्छे या निकम्में होने की चर्चा करते हैं वहां परमेश्वर की महिमा की चर्चा होगी तथा ''ज्ञान गंगा'' पुस्तक में लिखे ज्ञान पर विचार हुआ करेगा। परमात्मा की महिमा करने मात्र से भी जीव पुण्य का भागी बनता है। फिर शास्त्रविधि अनुसार साधना करके जीवन सुखी बनाऐंगे तथा आत्म कल्याण करायेंगे। धरती पर कलयुग में सत्ययुग जैसा समय आयेगा। सन्त रामपाल दास जी महाराज ही वर्तमान में वास्तव में धरती पर अवतार हैं अधिक जानकारी के लिए कृप्या पढ़ें पुस्तक ''धरती पर अवतार'' (सम्पूर्ण)।

''अमेरिका की महिला भविष्यवक्ता फ्लोरेंस की महत्वपूर्ण भविष्यवाणी''

अमेरिका की विश्व विख्यात भविष्यवक्ता फ्लोरेंस ने अपनी भविष्यवाणीयों में कई बार भारत का जिक्र किया है। 'द फाल ऑफ सेंशेसनल कल्चर' नाम की अपनी पुस्तक में उन्होंने लिखा है कि सन् 2000 आते-आते प्राकृतिक संतुलन भयावह रूप से बिगड़ेगा। लोगों में आक्रोश की प्रबल भावना होगा। दुराचार पराकाष्ठा पर होगा। पश्चिमी देशों के विलासितापूर्ण जीवन जीने वालों में निराशा, बैचेनी और अशांति होगी। अतृप्त अभिलाषाएं और जोर पकड़ेगी। जिससे उनमें आपसी कटुता बढ़ेगी। चारों ओर हिंसा और बर्बरता का वातावरण होगा। ऐसा वातावरण होगा की चारों ओर हाहाकार मच जाएगा। लेकिन भारत से उठने वाली एक नई विचारधारा इस घातक वातावरण को समाप्त कर देगी। वह विचारधारा वैज्ञानिक दृष्टि से सामंजस्य और भाई चारे का महत्व समझाएगी,

वह यह भी समझाएगी कि धर्म और विज्ञान में आपस में विरोध नहीं है। आध्यात्मिकता की उच्चता और भौतिकता का खोखलापन सबके सामने उजागर करेगी। मध्यमवर्ग उस विचारधारा से बहुत अधिक प्रभावित होगा। यह वर्ग समाज के सभी वर्गों को अच्छे समाज के निर्माण के लिए उत्प्रेरित करेगा। यह विचारधारा पूरे विश्व में चमत्कारी परिवर्तन लाएगी।

मुझे अपनी छठी अतींद्रिय शक्ति से यह एहसास हो रहा है कि इस विचारधारा को जन्म देने वाला वह महान संत भारत में जन्म ले चुका है। उस संत के ओजस्वी व्यक्तित्व का प्रभाव सब को चमत्कृत करेगा। उसकी विचारधारा अध्यात्म के कम होते जा रहे प्रभाव को फिर से नई स्फूर्ति देगी। चारों ओर आध्यात्मिक वातावरण होगा।

संत की विचारधारा से प्रभावित लोग विश्व के कल्याण के लिए पश्चिम की ओर चलेंगे। धीरे-धीरे एशिया, यूरोप और अमेरिका पर पूरी तरह छा जाएगें। उस संत की विचारधारा से पूरा विश्व प्रभावित होगा और उनके चरण चिन्हों पर चलेगा। पश्चिमी देश के लोग उन्हें ईसा, मुसलमान उन्हें एक सच्चा रहनुमा और एशिया के लोग उन्हें भगवान का अवतार मानेंगे।

उस महान संत की विचारधारा से बौद्धिक क्रांति होगी। बुद्धिजीवियों की मान्यताएं बदलेंगी। उनमें ईश्वर के प्रति श्रद्धा और विश्वास की कोंपले फूटेंगी।

फ्लोरेंस के अनुसार वह संत भारत में जन्म ले चुकें हैं। वह इस संत से काफी प्रभावित थी। अपनी एक दूसरी पुस्तक 'गोल्डन लाइट ऑफ न्यू एरा' में भी उन्होंने लिखा है। ''जब मैं ध्यान लगाती हूँ तो अक्सर एक संत को देखती हूँ। गौर वर्ण का है। सफेद बाल हैं। उसके मुख पर न दाढ़ी है, न मूछ है। उस संत के ललाट पर गजब का तेज होता है। उनके ललाट पर आकाश से एक नक्षत्र के प्रकाश की किरणें निरंतर बरसती रहती हैं। मैं देखती हूँ कि वह संत अपनी कल्याणकारी विचारधारा तथा अपने सत् चरित्र प्रबल अनुयायियों की शक्ति से सम्पूर्ण विश्व में नए ज्ञान का प्रकाश फैला रहे हैं।

वह संत अपनी शक्ति निरंतर बढ़ा रहे हैं। उनमें इतनी शक्ति है कि वह प्राकृतिक परिवर्तन भी कर सकते हैं। वह अपना कार्य वैज्ञानिक ढंग से करेंगे। उनकी कृपा और प्रयत्नों से मानवीय सभ्यता में नई जागृति आएगी। विश्व के समस्त जनसमूह में नई चेतना का संचार होगा। लोकशक्ति का एक नया रूप उभर कर सामने आएगा जो सत्ताधारियों की मनमानियों पर अंकुश लगा देगा।''

मनोचिकित्सक तथा सम्मोहन कला के विश्व प्रसिद्धज्ञाता डॉ. मोरे बर्सटीन की फ्लोरेंस से अच्छी दोस्ती थी। एक बार फ्लोरेंस ने उनसे भी कहा था। ''डॉक्टर वह समय बड़ी तेजी से नजदीक आ रहा है जब सत्ता लोलुप राजनेताओं की अपेक्षा आप जैसे समाजसेवकों की बातें समाज अधिक ध्यान से सुनेगा। 21 वीं सदी के आते आते एक नई विचारधारा पूरे विश्व को प्रभावित करेगी। हर राष्ट्र में सच्चरित्र धार्मिक लोगों का संगठन लोगों के दिमाग में बैठी गलत मान्यताओं को बदल देगा। यह विचारधारा भारत से प्रस्फुटित होंगी। वहीं से पूरे

विश्व में फैलेगी। मैं उस पवित्र स्थान पर एक प्रचंड तपस्वी को देख रही हूँ। जिसका तेज बडी तेजी से फैल रहा है। मनुष्य में सोए देवत्व को जगाने तथा धरती का स्वर्ग जैसा बनाने के लिए वह संत दिन रात प्रयत्न कर रहे हैं।

एक पत्रकार ने 1964 में फ्लोरेंस से पूछा था कि क्या वह दुनिया का भविष्य बता सकती है। फ्लोरेंस ने इसके जवाब में कहा था 1970 की शुरूवात व्यापक उथल-पुथल के साथ होगी। 1979-80 के बाद ऐसे-ऐसे भूकंप आऐंगे की न्यूजर्सी का कुछ हिस्सा तथा यूरोप का और एशिया के कई देशों के स्थान भूकंप से विदीर्ण हो जाएंगे। कुछ जलमग्न भी हो जाऐंगे। तृतीय विश्वयुद्ध का आतंक सबके दिमाग में बैठ जाएगा और वे इस युद्ध की तैयारी करेंगे, लेकिन भारतीय राजनेता अपने प्रभाव और बुद्धि से तीसरे विश्वयुद्ध को टालने में सफल हो जाऐंगे। तीसरे विश्वयुद्ध के शुरू होने तक भारत के शासन की बागडोर आध्यात्मिक प्रवृत्ति के लोगों के हाथ में होगी, इसलिए उनके प्रभाव से विश्वयुद्ध टलेगा। वे शासक एक महान संत के ओजस्वी तथा क्रांतिकारी विचारधारा से प्रभावित होंगे। वे उस संत के प्रति उसी तरह समर्पित होंगे जैसे वाशिंगटन स्वतंत्रता एवं मानवता के प्रति समर्पित थे।''

अमेरिका के शहर न्यूजर्सी की रहने वाली फ्लोरेंस सचमुच एक विलक्षण महिला थी। एक बार नेबेल नाम के व्यक्ति ने टी.वी. कार्यक्रम के दौरान उनसे बोला, ''आप भारत में जन्म ले चुके संत के बारे में तो अक्सर बताती रहती हैं। मैं अपने बारे में कुछ जानना चाहता हूँ बताइए।''

फ्लोरेंस ने उसके दाहिने हाथ को थाम लिया और बोली, ''आप बहुत जल्द किसी दूसरे राज्य से प्रसारण करेंगे।'' नेबेल एक प्रसारण सेवा के कर्मचारी थे। फ्लोरेंस की इस बात पर वह हंसने लगे। कुछ क्षण बाद बोले ''आपने मुझसे यह अच्छा मजाक किया। यदि हमारी कंपनी के अधिकारी इस कार्यक्रम को देख रहे होंगे तो मैं दूसरे राज्य में जाऊँ या नहीं, फिलहाल अपनी कंपनी से तुरंत निकाल दिया जाऊंगा।''

कुछ ही मिनटों के बाद टी.वी. के कंट्रोल रूम का फोन घनघना उठा। फोन नेबेल के लिए था। उनकी कंपनी के जनरल मैनेजर उनसे बात करना चाहते थे। नेबेल ने जब फोन उठाया तो उन्होंने कहा हमने न्यूयार्क से प्रसारण करने का काम शुरू करने का निर्णय लिया है वहां तुम्हें ही भेजा जाएगा। अभी यह बात गुप्त रखना इसकी घोषणा कल की जाएगी। मैं टी.वी. पर फ्लोरेंस के साथ तुम्हारी बातचीत देख रहा था। फ्लोरेंस ने तुम्हारे विषय में जो बताया है वह पूरी तरह सच है। आश्चर्य है कि उन्हें यह बात कैसे मालूम हो गई?'' नेबेल फ्लोरेंस का चेहरा देखता रह गया।

कुछ पत्रकारों ने उनसे एक बार पूछा था कि वह भविष्य को कैसे देख लेती हैं तथा गायब व्यक्ति या वस्तुओं का पता कैसे लगा लेती हैं, तो फ्लोरेंस ने बताया,''मुझे स्वयं नहीं मालूम कि ऐसा कैसे सम्भव हो जाता है। मैं भविष्य के विषय में एक बहुत महत्वपूर्ण बात बता रहीं हूँ। 20वीं शताब्दी के अंत में भारतवर्ष

से एक प्रकाश निकलेगा। यह प्रकाश पूरी दुनिया को उन दैवी शक्तियों के विषय में जानकारी देगा, जो अब तक हम सभी के लिए रहस्यमय बनी हुई हैं। एक दिव्य महापुरूष द्वारा यह प्रकाश पूरे विश्व में फैलेगा। वह सभी को सत् मार्ग पर चलने की प्रेरणा देगा। समस्त दुनिया में एक नयी सोच की ज्योति फैलेगी। जब मैं ध्यानावस्था में होती हूँ तो अक्सर यह दिव्य महापुरूष मुझे दिखाई देते हैं।''

फ्लोरेंस ने बार-बार इस संत या दिव्य महापुरूष का जिक्र किया है। साथ ही यह भी बताया है कि उत्तरी भारतवर्ष के एक पवित्र स्थान पर वह मौजूद हैं।

सज्जनों उपरोक्त भविष्यवाणी तथा वर्तमान वाणी है जो परम सन्त रामपाल महाराज जी पर खरी उतरती है तथा इसी का समर्थन अन्य भविष्यवाणीयाँ भी करती है। जो आगे लिखी हैं।

''भाई बाले वाली जन्म साखी में प्रमाण''

''एक महापुरूष के विषय में भाई बाले वाली जन्म साखी में प्रह्लाद भक्त की भविष्यवाणी''

भाई बाले वाली जन्म साखी में लिखा गया विवरण स्पष्ट करता है कि संत रामपाल दास जी महाराज ही वह अवतार है जिन्हें परमेश्वर कबीर जी तथा संत नानक जी के पश्चात् पंजाब की धरती पर अवतरित होना था। सन्त रामपाल दास जी महाराज 8 सितम्बर सन् 1951 को गांव धनाना, जिला सोनीपत, हरियाणा प्रान्त (उस समय पंजाब प्रान्त) भारत की पवित्र धरती पर श्री नन्द राम जाट के घर जाट वर्ण में श्रीमति इन्द्रा देवी की कोख से जन्में।

इस विषय में ''जन्म साखी भाई बाले वाली'' हिन्दी वाली में जिसके प्रकाशक हैं :- भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह एण्ड कम्पनी पुस्तकां वाले, बाजार माई सेवां, अमृतसर (पंजाब) तथा पंजाबी वाली के प्रकाशक है :- भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह पुस्तकां वाले गली-8 बाग रामानन्द अमृतसर (पंजाब)।

इसमें लिखा अमर लेख इस प्रकार है :- एक समय भाई बाला तथा मरदाना को साथ लेकर सतगुरु नानक देव जी भक्त प्रह्लाद जी के लोक में गए। जो पृथ्वी से कई लाख कोस दूर अन्तरिक्ष में है। प्रह्लाद ने कहा कि हे नानक जी! आप को परमात्मा ने दिव्य दृष्टि दी तथा कलयुग में बड़ा भक्त बनाया है। आप का कलयुग में बहुत प्रताप होगा। यहां पर (प्रह्लाद के लोक में) पहले कबीर जी आये थे या आज आप आये हो एक और आयेगा जो आप दोनों जैसा ही महापुरूष होगा। इन तीनों के अतिरिक्त यहां मेरे लोक में कोई नहीं आ सकता। भक्त बहुत हो चुके हैं आगे भी होगें परन्तु यहां मेरे लोक में वही पहुँच सकता है, जो इन जैसी महिमा वाला होगा और कोई नहीं। इसलिए इन तीनों के अतिरिक्त यहां कोई नहीं आ सकता। मरदाने ने पूछा कि हे प्रह्लाद जी! कबीर जी जुलाहा थे, नानक जी खत्री हैं, वह तीसरा किस वर्ण (जाति) से तथा किस धरती पर अवतरित होगा।

प्रह्लाद भक्त ने कहा भाई सुन :- नानक जी के सच्चखण्ड जाने के सैकड़ों वर्ष पश्चात् पंजाब की धरती पर जाट वर्ण में जन्म लेगा तथा उसका प्रचार क्षेत्र शहर बरवाला होगा। (लेख समाप्त)

विवेचन :- संत रामपाल दास जी महाराज वही अवतार हैं जो अन्य प्रमाणों के साथ-२ जन्म साखी में लिखे वर्णन पर खरे उतरते हैं। जन्म साखी में ''सौ वर्ष के पश्चात्'' लिखा है। यहां पर सैकड़ों वर्ष पश्चात् कहा गया था जिसको पंजाबी भाषा में लिखते समय सौ वर्ष ही लिख दिया। क्योंकि मर्दाना ने पूछा था कि वह कौन से युग में नजदीक ही आयेगा? तब भक्त प्रह्लाद ने कहा कि श्री नानक जी के सैकड़ों वर्ष पश्चात् कलयुग में ही वह संत जाट वर्ण में जन्म लेगा। इसी लिए यहां सौ वर्ष के स्थान पर सैकड़ों वर्षों ही न्यायोचित है तथा प्रचार क्षेत्र बरवाला के स्थान पर बटाला लिखा गया है। इसके दो कारण हो सकते हैं कि ''शहर बरवाला'' जिला हिसार हरियाणा (उस समय पंजाब) प्रान्त में सुप्रसिद्ध नहीं था तथा बटाला शहर पंजाब प्रान्त में प्रसिद्ध था। लेखनकर्ता ने इस कारण से ''बरवाला'' के स्थान पर ''बटाला'' लिख दिया दूसरा प्रिन्ट करते समय ''ਵਤਵਾਲੇ'' की जगह ''ਵਟਾਲੇ'' प्रिंट हो गया है। एक और विशेष विचारणीय पहलु है कि पंजाब के बटाला शहर में कोई भी जाट संत नहीं हुआ है। जो इन महापुरूषों (परमेश्वर कबीर देव जी व श्री नानक देव जी) के समान महिमावान तथा इनके समान ज्ञानवान हुआ हो। इस आधार से तथा अन्य प्रमाणों के आधार से तथा इस जन्म साखी के आधार से स्पष्ट है कि वह तीसरे महापुरूष संत रामपाल दास जी महाराज हैं तथा इनका आध्यात्मिक ज्ञान भी इन दोनों महापुरूषों (परमेश्वर कबीर जी तथा श्री नानक देव जी) से मेल खाता है। आप देखेंगे दोनों फोटो कापी जो जन्म साखी भाई बाले वाली जो कि एक पंजाबी भाषा में है तथा दूसरी हिन्दी में है जो कि पंजाबी भाषा से ही अनुवादित है। इसमें कुछ प्रकरण ठीक नहीं लिखा है। जैसे पंजाबी भाषा में लिखा है कि ''जो इस जीहा कोई होवेगा तां एथे पहुँचेगा होर दा एथे पहुँचण दा कम नही**'' परन्तु हिन्दी वाली जन्म साखी में यह विवरण नहीं है जो बहुत महत्वपूर्ण है। इससे सिद्ध है कि लिखते समय कुछ प्रकरण बदल जाता है। फिर भी ढेर सारे प्रमाण जो इस पुस्तक में अन्य महापुरूषों के द्वारा सन्त रामपाल दास जी के विषय में कहे हैं वे भी इसी को प्रमाणित करते हैं।**

विशेष :- यदि कोई यह कहे कि जन्म साखी में लिखी व्याख्या सन्त गरीबदास जी गांव छुड़ानी वाले के लिए हैं। क्योंकि वे भी जाट जाति से थे तथा छुड़ानी गांव भी पहले पंजाब प्रांत के अन्तर्गत आता था। यह भी उचित नहीं लगती क्योंकि संत गरीबदास जी ने अपनी अमृतवाणी ''असुर निकंदन रमैणी'' में कहा है कि ''सतगुरु दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरनी सूम जगायसी'' **भावार्थ है कि संत गरीबदास जी के सतगुरु पूज्य कबीर साहेब जी थे। पुराना रोहतक जिला (सोनीपत, रोहतक तथा झज्जर को मिला कर एक जिला रोहतक था) दिल्ली मण्डल में लगता था। यह किसी राजा के आधीन नहीं था। अग्रेंजो के शासन काल में दिल्ली के आधीन था। सन्त गरीबदास जी ने स्पष्ट किया है कि सतगुरु (परमेश्वर कबीर जी) दिल्ली मण्डल में आऐंगे भक्तिहीन प्राणियों को जगाऐंगे सत्यभक्ति कराऐंगे।** (ध्यान रहे कबीर सागर में काल के दूतों ने मिलावट करके

सत्य को न जानकर अपनी अटकल बाजी से असत्य प्रमाण दिए हैं। उसका नाश करने के लिए परमेश्वर कबीर जी ने अपने अंश अवतार सन्त गरीब दास जी द्वारा यथार्थ ज्ञान प्रचार करवाया है। जो सन्त गरीब दास जी की अमृतवाणी रूप में है। इसी बात की पुष्टि ''कबीर सागर के सम्पादक कबीर पंथी श्री युगलानन्द बिहारी जी की उस टिप्पणी से होती है जो उन्होंने अनुराग सागर तथा ज्ञान सागर की भूमिका में की है कहा है कि कबीर पंथियों ने ही कबीर पंथ के ग्रन्थों का नाश कर रखा है। अपने–२ मते अनुसार फेर बदल करके अपने मत को जोड़ा है। मेरे पास अनुराग सागर तथा ज्ञान सागर की कई–२ प्रतियाँ रखी हैं। जिनमें से एक दूसरे से मेल नहीं खा रही हैं।)

सन्त रामपाल दास जी महाराज का जन्म श्री नन्द राम जाट के घर 8 सितम्बर 1951 को गांव-धनाना जिला सोनीपत (उस समय जिला रोहतक) में हुआ था। जो वर्तमान हरियाणा तथा पंजाब प्रांत मिलकर, उस समय एक ही 'पंजाब' प्रांत था। परमेश्वर कबीर जी ने भी कहा था कि जिस समय कलयुग 5500 वर्ष बीत चुका होगा मैं गरीबदास वाले बारहवें पंथ में आगे स्वयं आऊँगा। सन्त गरीबदास जी द्वारा मेरी (कबीर परमेश्वर की) महिमा की वाणी प्रकट होगी तथा गरीबदास वाले बारहवें पंथ तक के साधक मुझे आधार बनाकर वाणी को समझने की कोशिश करेंगे परन्तु वाणी को न समझ कर सतनाम तथा सारनाम से वंचित रहने के कारण असंख्य जन्म तक सत्यलोक प्राप्ति नहीं कर सकते। उसी बारहवें पंथ (गरीबदास जी वाले पंथ) में मैं (परमेश्वर कबीर जी) ही स्वयं चलकर आऊँगा। तब सन्त गरीबदास जी द्वारा प्रकट की गई वाणी को मैं (कबीर परमेश्वर) प्रकट होकर समझाऊँगा। इस से सिद्ध हुआ कि जन्म साखी में जिस जाट सन्त के विषय में कहा है निरविवाद रूप से वह संत रामपाल दास जी महाराज जी ही हैं। फिर भी हम संत गरीबदास जी का विशेष आदर करते हैं। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर कबीर जी का अमर संदेश सुनाया है।

यदि कोई भ्रम उत्पन्न करे की दस गुरु साहिबानों में से भी किसी की ओर संकेत हो सकता है। इसके लिए स्मरण रहे कि दस सिख गुरु साहिबानों में से कोई भी जाट वर्ण से नहीं थे। दूसरे सिख गुरु श्री अंगद देव जी खत्री थे। तीसरे गुरु जी श्री अमर दास जी भी खत्री थे। चौथे गुरु जी श्री रामदास जी खत्री थे तथा पांचवें गुरु जी श्री अर्जुन देव जी से लेकर दसवें तथा अन्तिम श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी तक श्री गुरु रामदास जी की सन्तान अर्थात् खत्री थे। फिर भी हम सभी सिख गुरु साहिबानों का विशेष आदर करते हैं।

संत रामपाल दास जी महाराज कहते हैं :-

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा।
हिन्दु मुसलिम, सिख, ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा।।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा है :-

जाति ना पूछो संत की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।।

कृप्या प्रमाण के लिए देखें फोटो कापी जन्म साखी पंजाबी गुरुमुखी (पंजाबी

भाषा) वाली तथा हिन्दी वाली दोनों में आप जी सहज में समझ सकते हो कि वास्तविक्ता क्या है। जन्म साखियों के प्रकाशक हैं :- भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह अमृतसर (पंजाब)। कृप्या देखें फोटो कापी जन्म साखी भाई बाले वाली पंजाबी भाषा वाली के पृष्ठ 272 की।

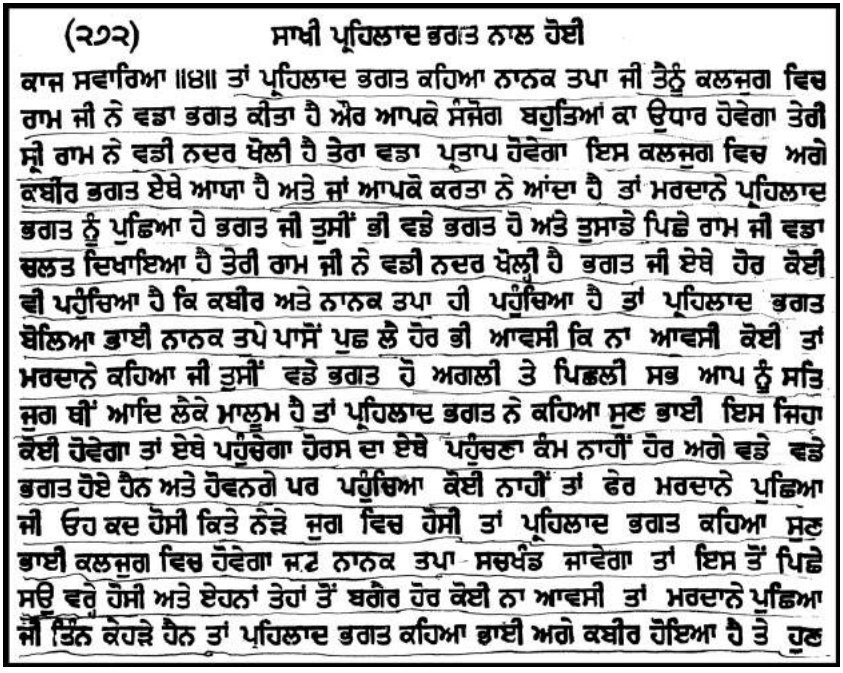

(२७२) ਸਾਖੀ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਨਾਲ ਹੋਈ

ਕਾਜ ਸਵਾਰਿਆ ॥੪॥ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਹਿਆ ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਜੀ ਤੈਨੂੰ ਕਲਜੁਗ ਵਿਚ ਰਾਮ ਜੀ ਨੇ ਵਡਾ ਭਗਤ ਕੀਤਾ ਹੈ ਔਰ ਆਪਕੇ ਸੰਜੋਗ ਬਹੁਤਿਆਂ ਕਾ ਉਧਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਤੇਰੀ ਸ੍ਰੀ ਰਾਮ ਨੇ ਵਡੀ ਨਦਰ ਖੋਲੀ ਹੈ ਤੇਰਾ ਵਡਾ ਪ੍ਰਤਾਪ ਹੋਵੇਗਾ ਇਸ ਕਲਜੁਗ ਵਿਚ ਅਗੇ ਕਬੀਰ ਭਗਤ ਏਥੇ ਆਯਾ ਹੈ ਅਤੇ ਜਾਂ ਆਪਕੋ ਕਰਤਾ ਨੇ ਆਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਨੂੰ ਪੁਛਿਆ ਹੈ ਭਗਤ ਜੀ ਤੁਸੀਂ ਭੀ ਵਡੇ ਭਗਤ ਹੋ ਅਤੇ ਤੁਸਾਡੇ ਪਿਛੇ ਰਾਮ ਜੀ ਵਡਾ ਚਲਤ ਦਿਖਾਇਆ ਹੈ ਤੇਰੀ ਰਾਮ ਜੀ ਨੇ ਵਡੀ ਨਦਰ ਖੋਲ੍ਹੀ ਹੈ ਭਗਤ ਜੀ ਏਥੇ ਹੋਰ ਕੋਈ ਵੀ ਪਹੁੰਚਿਆ ਹੈ ਕਿ ਕਬੀਰ ਅਤੇ ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਹੀ ਪਹੁੰਚਿਆ ਹੈ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਬੋਲਿਆ ਭਾਈ ਨਾਨਕ ਤਪੇ ਪਾਸੋਂ ਪੁਛ ਲੈ ਹੋਰ ਭੀ ਆਵਸੀ ਕਿ ਨਾ ਆਵਸੀ ਕੋਈ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਕਹਿਆ ਜੀ ਤੁਸੀਂ ਵਡੇ ਭਗਤ ਹੋ ਅਗਲੀ ਤੇ ਪਿਛਲੀ ਸਭ ਆਪ ਨੂੰ ਸਤਿ ਜੁਗ ਥੀਂ ਆਦਿ ਲੈਕੇ ਮਾਲੂਮ ਹੈ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਨੇ ਕਹਿਆ ਸੁਣ ਭਾਈ ਇਸ ਜਿਹਾ ਕੋਈ ਹੋਵੇਗਾ ਤਾਂ ਏਥੇ ਪਹੁੰਚੇਗਾ ਹੋਰਸ ਦਾ ਏਥੇ ਪਹੁੰਚਣਾ ਕੰਮ ਨਾਹੀਂ ਹੋਰ ਅਗੇ ਵਡੇ ਵਡੇ ਭਗਤ ਹੋਏ ਹੈਨ ਅਤੇ ਹੋਵਨਗੇ ਪਰ ਪਹੁੰਚਿਆ ਕੋਈ ਨਾਹੀਂ ਤਾਂ ਫੇਰ ਮਰਦਾਨੇ ਪੁਛਿਆ ਜੀ ਓਹ ਕਦ ਹੋਸੀ ਕਿਤੇ ਨੇੜੇ ਜੁਗ ਵਿਚ ਹੋਸੀ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਹਿਆ ਸੁਣ ਭਾਈ ਕਲਜੁਗ ਵਿਚ ਹੋਵੇਗਾ ਜਟ ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਸਚਖੰਡ ਜਾਵੇਗਾ ਤਾਂ ਇਸ ਤੋਂ ਪਿਛੇ ਸਉ ਵਰ੍ਹੇ ਹੋਸੀ ਅਤੇ ਏਹਨਾਂ ਤੇਹਾਂ ਤੋਂ ਬਗੈਰ ਹੋਰ ਕੋਈ ਨਾ ਆਵਸੀ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਪੁਛਿਆ ਜੀ ਤਿੰਨ ਕੇਹੜੇ ਹੈਨ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਹਿਆ ਭਾਈ ਅਗੇ ਕਬੀਰ ਹੋਇਆ ਹੈ ਤੇ ਹੁਣ

कृप्या देखें फोटो कापी जन्म साखी भाई बाले वाली पंजाबी भाषा वाली के पृष्ठ 273 की।

ਸਾਖੀ ਇਕ ਪਹਾੜ ਦੀ ਚਲੀ (२७३)

ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਹੁਆ ਹੈ ਅਤੇ ਫੇਰ ਉਹ ਹੋਸੀ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਪੁਛਿਆ ਜੀ ਕਬੀਰ ਜੁਲਾਹਾ ਹੈਸੀ ਤੇ ਨਾਨਕ ਖਤਰੀ ਹੋਏ ਅਤੇ ਜੀ ਉਹ ਕਿਸ ਵਰਨ ਹੋਵੇਗਾ ਜੀ ਤੇ ਕਿਸ ਧਰਤੀ ਤੇ ਹੋਸੀ ਕੇਹੜੇ ਸ਼ਹਿਰ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਿਹਾ ਭਾਈ ਪੰਜਾਬ ਧਰਤੀ ਤੇ ਵਰਨ ਜਟ ਤੇ ਸ਼ਹਿਰ ਵਟਾਲੇ ਵਿਚ ਹੋਸੀਂ। ਤਾਂ ਮਰਦਾਨਾ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੇ ਚਰਨਾਂ ਤੇ ਢਹਿ ਪਿਆ ਗੁਰੂ

कृप्या देखें फोटो कापी जन्म साखी भाई बाले वाली हिन्दी वाली के पृष्ठ 305 की

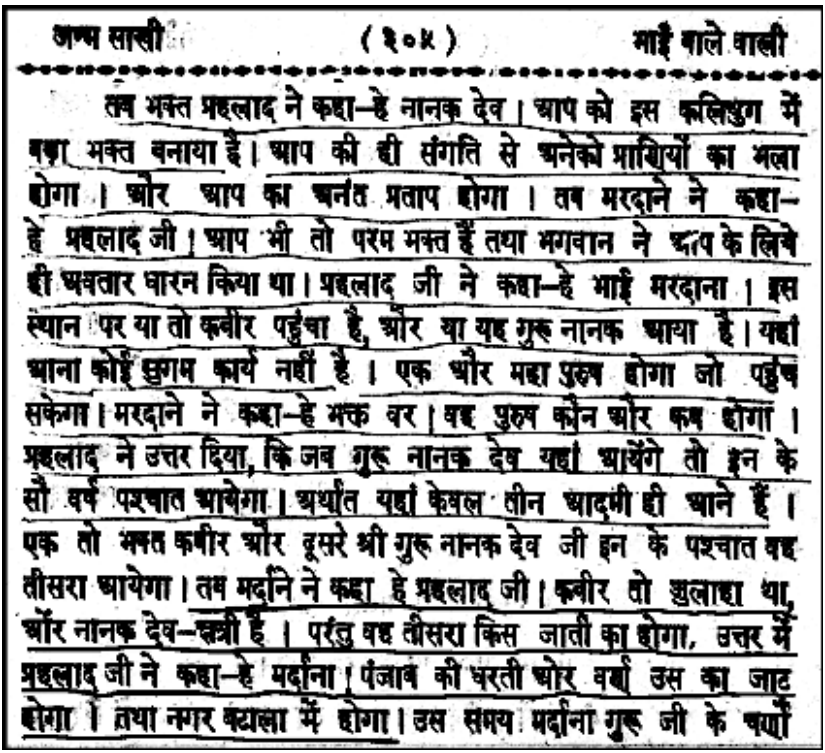

जन्म साखी (३०५) भाई बाले वाली

तब भक्त प्रहलाद ने कहा–हे नानक देव। आप को इस कलियुग में बड़ा भक्त बनाया है। आप की ही संगति से अनेकों प्राणियों का भला होगा। और आप का अनंत प्रताप होगा। तब मरदाने ने कहा– हे प्रहलाद जी। आप भी तो परम भक्त हैं तथा भगवान ने आप के लिये ही अवतार धारन किया था। प्रहलाद जी ने कहा–हे भाई मरदाना। इस स्थान पर या तो कबीर पहुंचा है, और या यह गुरू नानक आया है। यहां आना कोई सुगम कार्य नहीं है। एक और महा पुरुष होगा जो पहुंच सकेगा। मरदाने ने कहा–हे भक्त वर। वह पुरुष कौन और कब होगा। प्रहलाद ने उत्तर दिया, कि जब गुरू नानक देव यहां आयेंगे तो इन के सौ वर्ष पश्चात आयेगा। अर्थात यहां केवल तीन आदमी ही आने हैं। एक तो भक्त कबीर और दूसरे श्री गुरू नानक देव जी इन के पश्चात वह तीसरा आयेगा। तब मर्दाने ने कहा हे प्रहलाद जी। कबीर तो जुलाहा था, और नानक देव–खत्री हैं। परंतु वह तीसरा किस जाती का होगा, उत्तर में प्रहलाद जी ने कहा–हे मर्दाना। पंजाब की धरती और वर्षा उस का जाट होगा। तथा नगर कपाला में होगा। उस समय मर्दाना गुरू जी के चर्णों

प्रश्न : एक संस्कृत के विद्वान शास्त्री ने कहा कि आप के गुरु संत रामपाल दास जी महाराज संस्कृत नहीं पढ़े हैं। आप कहते हो कि उन्होंने श्री मद्भगवत् गीता का यथार्थ अनुवाद करके भक्तों को बताते हैं। यह कभी नहीं हो सकता।

उत्तर : सन्त रामपाल दास जी महाराज के भक्त ने उत्तर दिया शास्त्री जी उसी को परमेश्वर का अवतार कहते हैं। जो भाषा का ज्ञान न होते हुए यथार्थ अनुवाद कर दें। क्योंकि परमेश्वर सर्वज्ञ है। उन्हीं गुणों से युक्त उसका भेजा हुआ अवतार होता है। वह अवतार सन्त रामपाल दास जी महाराज जी हैं। आप तो केवल वेदों और गीता के अनुवाद से अचम्भित हैं। सन्त रामपाल दास जी महाराज ने तो बाईबल तथा कुरान को यथार्थ रूप में बताया है। जिसे ईसाई धर्म के वर्तमान के फादर व पादरी तथा मुसलमान धर्म के मुल्ला व काजी भी नहीं समझ सके।

विश्व विजयेता सन्त

(संत रामपाल जी महाराज की अध्यक्षता में हिन्दुस्तान विश्व धर्मगुरु के रूप में प्रतिष्ठित होगा)

"संत रामपाल जी महाराज के विषय में 'नास्त्रेदमस' की भविष्यवाणी"

फ्रैंच (फ्रांस) देश के नास्त्रेदमस नामक प्रसिद्ध भविष्यवक्ता ने सन् (इ.स.) 1555 में एक हजार श्लोकों में भविष्य की सांकेतिक सत्य भविष्यवाणियां लिखी हैं। सौ-सौ श्लोकों के दस शतक बनाए हैं। जिनमें से अब तक सर्व सिद्ध हो चुकी हैं। हिन्दुस्तान में सत्य हो चुकी भविष्यवाणियों में से :-

1. भारत की प्रथम महिला प्रधानमन्त्री बहुत प्रभावशाली व कुशल होगी (यह संकेत स्व. श्रीमती इन्दिरा गांधी की ओर है) तथा उनकी मृत्यु निकटतम रक्षक द्वारा होना लिखा था, जो सत्य हुई।

2. उसके पश्चात् उन्हीं का पुत्र उनका उत्तराधिकारी होगा और वह बहुत कम समय तक राज्य करेगा तथा आकस्मिक मृत्यु को प्राप्त होगा, जो सत्य सिद्ध हुई। (पूर्व प्रधानमन्त्री स्व. श्री राजीव गांधी जी के विषय में)।

3. संत रामपाल जी महाराज के विषय में भविष्यवाणी नास्त्रेदमस द्वारा जो विस्तार पूर्वक लिखी हैं।

(क) अपनी भविष्यवाणी के शतक पांच के अंत में तथा शतक छः के प्रारम्भ में नास्त्रेदमस जी ने लिखा है कि आज अर्थात् इ.स. (सन्) 1555 से ठीक 450 वर्ष पश्चात् अर्थात् सन् 2006 में एक हिन्दू संत (शायरन) प्रकट होगा अर्थात् सर्व जगत में उसकी चर्चा होगी। उस समय उस हिन्दू धार्मिक संत (शायरन) की आयु 50 व 60 वर्ष के बीच होगी। परमेश्वर ने नास्त्रेदमस को संत रामपाल जी महाराज के अधेड़ उम्र वाले शरीर का साक्षात्कार करवा कर चलचित्र की भांति सारी घटनाओं को दिखाया और समझाया। श्री नास्त्रेदमस जी ने 16 वीं सदी को प्रथम शतक कहा है इस प्रकार पांचवां शतक 20 वीं सदी हुआ। नास्त्रेदमस जी ने कहा है कि वह धार्मिक हिन्दू नेता अर्थात् संत (CHYREN-शायरन) पांचवें शतक के अंत के वर्ष में अर्थात् सन् (ई.सं.) 1999 में घर-घर सत्संग करना त्याग कर अर्थात् चौखटों को लांघ कर बाहर आयेगा तथा अपने अनुयाइयों को शास्त्रविधि अनुसार भक्तिमार्ग बताएगा। उस महान संत के बताए मार्ग से अनुयाइयों को अद्वितीय आध्यात्मिक और भौतिक लाभ होगा। उस तत्वदृष्टा हिन्दू संत के द्वारा बताए शास्त्रप्रमाणित तत्वज्ञान को समझ कर परमात्मा चाहने वाले श्रद्धालु ऐसे अचंभित होगें जैसे कोई गहरी नींद से जागा हो। उस तत्वदृष्टा हिन्दू संत द्वारा सन् 1999 में चलाई आध्यात्मिक क्रांति इ.स. 2006 तक चलेगी। तब तक बहु संख्या में परमात्मा चाहने वाले भक्त तत्व ज्ञान समझ कर अनुयायी बन कर सुखी हो चुके होंगे। उसके पश्चात् उस स्थान की चौखट से भी बाहर लांघेगा। उसके पश्चात् 2006 से स्वर्ण युग का प्रारम्भ होगा।

नोट : प्रिय पाठकजन कृप्या पढ़ें निम्न भविष्यवाणी जो फ्रांस देश के वासी श्री नास्त्रेदमस ने की थी। जिस के विषय में मद्रास के एक ज्योतिशास्त्री के. एस. कृष्णमूर्ति ने कहा है कि श्री नास्त्रेदमस जी द्वारा सन् 1555 में लिखी भविष्यवाणियों का यथार्थ अनुवाद "सन् 1998 में महाराष्ट्र में एक ज्योतिष शास्त्री करेगा। वह ज्योतिष शास्त्री नास्त्रेदमस की भविष्यवाणियों का सांकेतिक भाषा का स्पष्टीकरण कर उसमें लिखित भविष्य घटनाओं का अर्थ देकर अपना भविष्य ग्रंथ प्रकाशित करेगा।" उसी ज्योतिषशास्त्री द्वारा यथार्थ अनुवादित की गई पुस्तक से अनुवादकर्ता के शब्दों में पढ़ें।

1. (पृष्ठ 32, 33 पर) :-- ठहरो स्वर्ण युग (रामराज्य) आ रहा है। एक अधेड़ उम्र का औदार्य (उदार) अजोड़ महासत्ता अधिकारी भारत ही नहीं सारी पृथ्वी पर स्वर्ण युग लाएगा और अपने सनातन धर्म का पुनरूत्थान करके यथार्थ भक्ति मार्ग बताकर सर्वश्रेष्ठ हिन्दू राष्ट्र बनाएगा। तत्पश्चात् ब्रह्मदेश पाकिस्तान, बांगला, श्रीलंका, नेपाल, तिब्बत (तिबेत), अफगानिस्तान, मलाया आदि देशों में वही सार्वभौम धार्मिक नेता होगा। सत्ताधारी चांडाल चौकड़ियों पर उसकी सत्ता होगी। वह नेता (शायरन) दुनिया को अधाप मालूम होना है, बस देखते रहो।

2. (पृष्ठ 40 पर फिर लिखा है) :-- ठहरो रामराज्य (स्वर्ण युग) आ रहा है। जून इ.स. 1999 से इ.स. 2006 तक चलने वाली उत्क्रांति में स्वर्णयुग का उत्थान होगा। हिन्दुस्तान में उदयन होने वाला तारणहार शायरन दुनिया में सुख समृद्धि व शान्ति प्रदान करेगा। नास्त्रेदमस जी ने निःसंदेह कहा है कि प्रकट होने वाला शायरन (CHYREN) अभी ज्ञात नहीं है लेकिन वह क्रिश्चन अथवा मुस्लमान हरगिज नहीं है। वह हिन्दू ही होगा और मैं नास्त्रेदमस उसका अभी छाती ठोक कर गर्व करता हूं क्योंकि उस दिव्य स्वतंत्र सूर्य शायरन का उदय होते ही सारे पहले वाले विद्वान कहलाने वाले महान नेताओं को निष्प्रभ होकर उसके सामने नम्र बनना पड़ेगा। वह हिन्दुस्तानी महान तत्वदृष्टा संत सभी को अभूतपूर्व राज्य प्रदान करेगा। वह समान कायदा, समान नियम बनाएगा, स्त्री-पुरुष में, अमीर-गरीब में, जाति और धर्म में कोई भेद-भाव नहीं रखेगा, किसी पर अन्याय नहीं होने देगा। उस तत्व दर्शी संत का सर्व जनता विशेष सम्मान करेगी। माता-पिता तो आदरणीय होते ही हैं परन्तु अध्यात्मिकता व पवित्रता के आधार पर उस शायरन (तत्वदर्शी संत) का माता-पिता से भी अलग श्रद्धा स्थान होगा। नास्त्रेदमस स्वयं ज्यू वंश का था तथा फ्रांस देश का नागरिक था। उसने क्रिश्चन धर्म स्वीकार कर रखा था, फिर भी नास्त्रेदमस ने निःसंदेह कहा है कि प्रगट होने वाला शायरन केवल हिन्दू ही होगा।

3. (पृष्ठ 41 पर) :-- सभी को समान कायदा, नियम, अनुशासन पालन करवा कर सत्य पथ पर लाएगा। मैं (नास्त्रेदमस) एक बात निर्विवाद सिद्ध करता हूं वह शायरन (धार्मिक नेता) नया ज्ञान आविष्कार करेगा। वह सत्य मार्ग दर्शन करवाने वाला तारणहार एशिया खण्ड में जिस देश के नाम महासागर (हिन्द

महासागर) है। उसी नाम वाले (हिन्दुस्तान) देश में जन्म लेगा। वह ना क्रिश्चन, ना मुस्लमान, ना ज्यू होगा वह निःसंदेह हिन्दू होगा। अन्य भूतपूर्व धार्मिक नेताओं से महतर बुद्धिमान होगा और अजिंकय होगा। (नास्त्रेदमस भविष्यवाणी के शतक 6 श्लोक 70 में महत्वपूर्ण संकेत संदेश बता रहा है) उस से सभी प्रेम करेगें। उसका बोल बाला रहेगा। उसका भय भी रहेगा। कोई भी अपकृत्य करना नहीं सोचेगा। उसका नाम व कीर्ती त्रिखण्ड में गुंजेगी अर्थात् आसमानों के पार उसकी महिमा का बोल-बाला होगा। अब तक अज्ञान निंद्रा में गाढ़े सोए हुए समाज को तत्व ज्ञान की रोशनी से जगाएगा। सर्व मानव समाज हड़बड़ा कर जागेगा। उसके तत्व ज्ञान के आधार से भक्ति साधना करेगा। सर्व समाज से सत्य साधना करवाएगा। जिस कारण सर्व साधकों को अपने आदि अनादि स्थान (सत्यलोक) में अपने पूर्वजों के पास ले जा कर वहां स्थाई स्थान प्राप्त करवाएगा (वारिस बनाएगा)। इस क्रुर भूमि (काल लोक) से मुक्त करवाएगा, यह शब्द बोल उठेगा।

4. (पृष्ठ 42, 43) :-- यह हिंसक क्रुरचन्द्र (महाकाल) कौन है, कहाँ है, यह बात शायरन (तत्वदर्शी संत) ही बताएगा। उस क्रुरचन्द्र से वह **CHYREN** - शायरन ही मुक्त करवाएगा। शायरन (तत्वदर्शी संत) के कारकिर्द में इस भूतल की पवित्र भूमि पर (हिन्दुस्तान में) स्वर्णयुग का अवतरण होगा, फिर वह पूरे विश्व में फैलेगा। उस विश्व नेता और उसके सद्गुणों की, उसके बाद भी महिमा गाई जाएगी। उसके मन की शालीनता, विनम्रता, उदारता का इतना रेल-पेल बोल बाला होगा कि इससे पहले नमूद किए हुए शतक 6 श्लोक 70 के आखिरी पंक्ति में किया हुआ उल्लेख कि अपना शब्द खुद ही बोल उठता है और शायरन कि ही जुबान बोल रही है कि ''शायरन अपने बारे में बस तीन ही शब्द बोलता है '' एक विजयी ज्ञाता'' इसके साथ और विशेषण न चिपकाएं मूझे मंजूर नहीं होगा। (यह पृष्ठ 42 वाला 4 उल्लेख वाणी शतक 6 श्लोक 71 है) हिन्दू शायरन अपने ज्ञान से दैदिप्यमान उतुंग ऊंचा स्वरूप का विधान (तत्वज्ञान) फिर से बिना शर्त उजागर करवाएगा। (**Chyren will be chief of the world, Loved feared and unchallanged**) और मानवी संस्कृती निर्धोक संवारेगा, इसमें संदेह नहीं। अभी किसी को मालूम नहीं, लेकिन अपने समय पर जैसे नरसिंह अचानक प्रगट हुआ था ऐसे ही वह विश्व महान नेता (**Great Chyren**) अपने तर्कशुद्ध, अचूक आध्यात्मिक ज्ञान और भक्ति तेज से विख्यात होगा। मैं (नास्त्रेदमस) अचंभित हूँ। मैं ना उसके देश (जहां से अवतरित होगा अर्थात् सतलोक देश) को तथा ना उसको जानता हूँ, मैं उसे सामने देख भी रहा हूँ, उसकी महिमा का शब्द बद्ध में कोई मिसाल नहीं कर सकता। बस उसे **Great Chyren** (महान धार्मिक नेता) कहता हूँ अपने धर्म बंधुओं की सद्द कालीन समस्या से दयनीय अवस्था से बैचेन होता हुआ स्वतंत्र ज्ञान सूर्य का उदय करता हुआ अपने भक्ति तेज से जग का तारणहार 5वें शतक (20 वीं सदी के अंतिम वर्ष में) के अंत में ई.स. 1999 अधेड़ उम्र का विश्व का महान नेता जैसे तेजस्वी सिंह मानव (**Great Chyren**) उदिवग्न

अवस्था से चोखट लांघता हुआ मेरे (नास्त्रेदमस के) मन का भेद ले रहा है और मैं उसका स्वागत करता हुआ आश्चर्य चकित हो रहा हूँ, उदास भी हो रहा हूं, क्योंकि उसका दुनिया को ज्ञान न होने से मेरा शायरन (तत्वदर्शी संत) उपेक्षा का पात्र बन रहा है।

मेरी (नास्त्रेदमस की) चितभेदक भविष्यवाणी की और उस वैश्विक सिंह मानव की उपेक्षा ना करें। उसके प्रकट होने पर तथा उसके तेजस्वी तत्व ज्ञान रूपी सूर्य उदय होने से आदर्शवादी श्रेष्ठ व्यक्तियों का पुनर्उत्थान तथा स्वर्ण युग का प्रभात शतक 6 में आज ई.स. 1555 से 450 वर्ष बाद अर्थात् 2006 में (1555+450=2005 के पश्चात् अर्थात् 2006 में) शुरूआत होगी। इस कृतार्थ शुरूवात का मैं (नास्त्रेदमस) दृष्टा हो रहा हूँ।

5. (पृष्ठ 44, 45, 46) :-- (नास्त्रेदमस शतक 1 श्लोक 50 में फिर प्रमाणित कर रहा है) तीन ओर से सागर से घिरे द्वीप (हिन्दुस्तान देश) में उस महान संत का जन्म होगा उस समय तत्व ज्ञान के अभाव से अज्ञान अंधेरा होगा। नैतिकता का पतन होकर हाहाकार मचा होगा। वह शायरन (धार्मिक नेता) गुरुवर अर्थात् गुरुजी को वर (श्रेष्ठ) मान कर अपनी साधना करेगा तथा करवाएगा। वह धार्मिक नेता (तत्वदर्शी सन्त) अपने धर्म बल अर्थात् भक्ति की शक्ति से तथा तत्वज्ञान द्वारा सर्व राष्ट्रों को नतमस्तक करेगा। एशिया में उसे रोकना अर्थात् उस के प्रचार में बाधा करना पागलपन होगा। (शतक 1 श्लोक 50)

(नोटः- नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी फ्रांस देश की भाषा में लिखी गई थी। बाद में एक पाल ब्रन्टन नामक अंग्रेज ने इस नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी ''सैन्चयुरी ग्रंथ'' को फ्रांस में कुछ वर्ष रह कर समझा, फिर इंग्लिश भाषा में लिखा। उसने गुरुवर शब्द को (बृहस्पति) गुरुवार अर्थात् थ्रस्डे जान कर लिख दिया कि वह अपनी पूजा का आधार बृहस्पत्तिवार को बनाएगा। वास्तव में गुरुवर शब्द है जिसका अर्थ है सर्व गुरुओं में जो एक तत्वज्ञाता श्रेष्ठ है तथा गुरु को मुख्य मानकर साधना करना होता है। वेद भाषा में बृहस्पति का भावार्थ सर्वोच्च स्वामी अर्थात् परमेश्वर, दूसरा अर्थ बृहस्पति का जगतगुरु भी होता है। जगत गुरु तथा परमेश्वर भी बृहस्पति का बोध है।)

वह अधेड़ उम्र में तत्वज्ञान का ज्ञाता तथा ज्ञेय होकर त्रिखंड में कीर्ति मान होगा। मुझ (नास्त्रेदमस) को उसका नया उपाय साधना मंत्र ऐसा जालिम मालूम हो रहा है जैसे सर्प को वश करने वाला गारडू मंत्र से महाविषैले सर्प को वश कर लेता है। वह नया उपाय, नया कायदा बनाने वाला तत्ववेता दुनिया के सामने उजागर होगा उसी को मैं (नास्त्रेदमस) अचंभित होकर ''ग्रेट शायरन'' बता रहा हूं उसके ज्ञान के दिव्य तेज के प्रभाव से उस द्वीपकल्प (भारतवर्ष) में आक्रामक तूफान, खलबली मचेगी अर्थात् अज्ञानी संतों द्वारा विद्रोह किया जाएगा। उसको शांत करने का उपाय भी उसी को मालूम होगा। जैसे जालिम सर्पनी को वश किया जाता है। वह सिंह के समान शक्तिशाली व तेजपूंज व्यक्तित्व का होगा।

यह मैं नास्त्रेदमस स्पष्ट शब्दों में बता रहा हूं कि वह कुण्डलीनी शक्ति धारण किए हुए है। आगे स्पष्ट शब्द यह है कि जिस समय वह शायरन जिस महासागर में द्वीपकल्प है उसी देश के नाम पर महासागर का भी नाम है (हिन्दमहासागर)। विशेषता यह होगी की उस देश की भुजंग सर्पिनी शक्ति (कुण्डलनी शक्ति) का पूर्ण परिचित **True Master** होगा। वह **Chyren**(महान धार्मिक नेता) उदारमत वाला, कृपालु,दयालु, दैदिप्यमान, सनातन साम्राज्य अधिकारी, आदि पुरूष (सत्यपुरूष) का अनुयाई होगा। उसकी सत्ता सार्वभौम होगी उसकी महिमा, उपाय गुरु श्रद्धा, गुरु भक्ति अर्थात् गुरु बिना कोई साधना सफल नहीं होती, इस सिद्धांत को दृढ़ करेगा। तत्वज्ञान का सत्संग करके प्रथम अज्ञान निंद्रा में सोए अपने धर्म बंधुओं (हिन्दुओं) को जागृत करके अंधविश्वास के आधार पर साधना कर रहे श्रद्धालुओं को शास्त्रविधि रहित साधना का बुरका फाड़ कर गूढ़ गहरे ज्ञान (तत्वज्ञान) का प्रकाश करेगा। अपने सनातन धर्म का पालन करवा कर समृद्ध शांति का अधिकारी बनाएगा। तत् पश्चात् उसका तत्वज्ञान सम्पूर्ण विश्व में फैलेगा, उस (महान तत्वदर्शी संत) के ज्ञान की कोई भी बराबरी नहीं कर सकेगा अर्थात् उसका कोई भी सानी नहीं होगा। उसके गूढ़ ज्ञान (तत्वज्ञान) के सामने सूर्य का तेज भी कम पड़ेगा। इसलिए मैं (नास्त्रेदमस) वैश्विक सिंह महामानव इतना महान होगा कि मैं उसकी महिमा को शब्दों में नहीं बाँध पाऊँगा। मैं (नास्त्रेदमस) उस ग्रेट शायरन को देख रहा हूँ।

उपरोक्त विवरण का भावार्थ है कि "उस विश्व नेता को 50 वर्ष की आयु में तत्वज्ञान शास्त्रों में प्रमाणित होगा अर्थात् वह 50 वर्ष की आयु में सन् 2001 में सर्व धर्मो के शास्त्रों को पढ़ कर उनका ज्ञाता (तत्वज्ञानी) होगा तथा उसके पश्चात् उस तत्वज्ञान का ज्ञेय (जानने योग्य परमेश्वर का ज्ञान अन्य को प्रदान करने वाला) होगा तथा उसका अध्यात्मिक जन्म अमावस्या को होगा। उस समय वह प्रौढ़ होगा तथा जब वह प्रसिद्ध होगा तब उसकी आयु पचास से साठ साल के मध्य होगी।"

6. (पृष्ठ **46, 47**) :-- नास्त्रेदमस कहता है कि निःसंदेह विश्व में श्रेष्ठ तत्वज्ञाता (ग्रेट शायरन) के विषय में मेरी भविष्यवाणी के शब्दा शब्द को किसी नेताओं पर जोड़ कर तर्क-वितर्क करके देखेगें तो कोई भी खरा नहीं उतरेगा। मैं (नास्त्रेदमस) छाती ठोक कर शब्दा शब्द कह रहा हूं मेरा शायरन का कर्तृत्व और उसका गूढ़-गहरा ज्ञान (तत्वज्ञान) ही सर्व की खाल उतारेगा, बस **2006** साल आने दो। इस विधान का एक-एक शब्द खरा-खरा समर्थन शायरन ही देगा।

7. (पृष्ट **52**) :-- नास्त्रेदमस ने अपनी भविष्यवाणी में कहा है कि **21** वीं सदी के प्रारम्भ में दुनिया के क्षितिज पर 'शायरन' का उदय होगा। जो भी बदलाव होगा वह मेरी (नास्त्रेदमस की) इच्छा से नहीं बल्कि शायरन की आज्ञा से नियती की इच्छा से सारा बदलाव होगा ही होगा। उस में से नया बदलाव मतलब हिन्दुस्तान सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र होगा। कई सदियों से ना देखा ऐसा हिन्दुओं का

सुख साम्राज्य दृष्टिगोचर होगा। उस देश में पैदा हुआ धार्मिक संत ही तत्वदृष्टा तथा जग का तारणहार, जगज्जेता होगा। एशिया खण्डों में रामायण, महाभारत आदि का ज्ञान जो हिन्दुओं में प्रचलित है उससे भी भिन्न आगे का ज्ञान उस तत्वदर्शी संत का होगा। वह सतपुरुष का अनुयाई होगा। वह एक अद्वितीय संत होगा।

8. (पृष्ठ 74) :-- बहुत सारे संत नेता आएगें और जाएगें, सर्व परमात्मा के द्रोही तथा अभिमानी होगें। मुझे (नास्त्रेदमस को) आंतरिक साक्षात्कार उस शायरन का हुआ है। नास्त्रेदमस ने कहा है कि उस महान हिन्दू धार्मिक नेता को न पहचानकर उस पर राष्ट्रद्रोह का भी आरोप लगाया जाएगा। मुझे (नास्त्रेदमस को) दुख है कि वह महान धार्मिक नेता (**CHYREN**) उपेक्षा का पात्र बनाया जाएगा, परंतु वह परम सन्त भारत के जिस प्रान्त में जन्म लेगा, उसका नाम पाँच नदियों के नाम पर होगा अर्थात् ''पंजाब प्रांत'' (सन्त रामपाल दास जी महाराज का जन्म **8** सितम्बर **1951** में हुआ। उस समय हरियाणा तथा पंजाब एक ही प्रांत था। **1** नवम्बर **1966** को हरियाणा प्रांत पंजाब से भिन्न हुआ है।

✯ नास्त्रेदमस ने यहां तक कहा है कि उस महान संत की माता कुल तीन बहनें होंगी। (सन्त रामपाल जी महाराज की माता जी तीन बहनें थी। दो का देहांत हो चुका है। सन्त की माता आज सन् **2013** तक जीवित है।)

✯ नास्त्रेदमस ने यह भी लिखा है कि जहां वह सन्त आश्रम बनाएगा उसके पास से निकले मार्गों को विशाल किया जाएगा।

हिन्दुस्तान का हिन्दू संत आगामी अंधकारी (भक्तिज्ञान के अभाव से अंधे) प्रलयकारी (स्वार्थ वश भाई-भाई को मार रहा है, बेटा-बाप से विमुख है, हिन्दू-हिन्दू का शत्रु, मुस्लमान-मुस्लमान का दुश्मन बना है) धुंधुकारी (माया की दौड़ में बेसब्रे समाज) जगत को नया प्रकाश देने वाला सर्वश्रेष्ठ जगज्जेता धार्मिक विश्व नेता की अपनी उदासी के सिवा कोई अभिलाषा नहीं होगी अर्थात् मानव उद्धार के लिए चिन्ता के अतिरिक्त कुछ भी स्वार्थ नहीं होगा। ना अभिमान होगा, यह मेरी भविष्यवाणी की गौरव की बात होगी की वास्तव में वह तत्वदर्शी संत संसार में अवश्य प्रसिद्ध होगा। उसके द्वारा बताया ज्ञान सदियों तक छाया रहेगा। वह संत आधुनिक वैज्ञानिकों की आँखें चकाचौंध करेगा ऐसे आध्यात्मिक चमत्कार करेगा कि वैज्ञानिक भी आश्चर्य में पड़ जायेंगे। उसका सर्व ज्ञान शास्त्र प्रमाणित होगा। मैं (नास्त्रेदमस) कहता हूँ कि बुद्धिवादी व्यक्ति उसकी उपेक्षा न करें। उसे छोटा ज्ञानदीप न समझें, उस तत्ववेता महामानव (शायरन को) सिहांसनस्थ करके (आसन पर बैठाकर) उसको आराध्य देव मानकर पूजा करें। वह आदि पुरुष (सतपुरुष) का अनुयाई दुनिया का तारणहार होगा।

विशेष :- भविष्यवक्ता नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी को ठीक से न समझकर व्यर्थ की अटकल बाजियाँ लगाई गई हैं। उदाहरण के लिए, नास्त्रेदमस की **भविष्यवाणी** :- Century=10 Quatrain no. 75 . Long awaited he will never return. In

Europe he will appear in Asia. And he will grow over all kings of east. One of the league issued from the great Hermes.

विशेष :- "Hermes" **= हरमेश :- यह युनानी भाषा** (Greek Language) **का शब्द है। जिसका अर्थ है पैगम्बर** (Person sent by God himself)

Century No.1 Quatrain No. 50 . Of the aquatic. Triplicity there will be born. His fame, praise, rule and power will grow. By land and sea a tempest to the east.

Century no. 10 Quatrain no. 96 . The religion of the name of seas will win out.

Century no. 6 Quatrain no. 27. within the isles of five rivers to one.

Century no. 5 Quatrain no. 53 . The law of the sun and of venus in strife.

★ Appropriating the spirit of prophecy. The law of the great messiah will hold through the sun.

Century no. 1 Quatrain no. 76 . With a name so wild will he be brought forth.

★ That the three sisters will have the name for destiny. That he will lead a great people by tongue and deed. More than other will he have fame and renown. Grow over all the kings of the east.

1. वह महान सायरन उस देश में उत्पन्न होगा जो तीन ओर से सागर से घिरा होगा। (भारत ही एक मात्र ऐसा देश हो जो तीन ओर से समुद्र से घिरा है।)

2. उस देश का नाम एक समुद्र के नाम पर होगा। हिन्द महासागर, (हिन्दुस्तान)

3. वह हिन्दुस्तान के उस क्षेत्र में जन्म लेगा जिसमें पाँच नदियाँ (रावी, सतलुज, जेहलम, व्यास, चिनाब) बहती हैं।

विवेचन :- इस आधार से एक सज्जन ने अपना मत व्यक्त किया है कि श्री गुरु नानक जी के विषय में उपरोक्त भविष्यवाणी है। क्योंकि श्री नानक जी का जन्म पंजाब प्रान्त में हुआ था।

विचार करें उस सज्जन को ध्यान नहीं रहा कि श्री नास्त्रेदमस ने यह भविष्यवाणी सन् 1555 में लिखी थी और श्री नानक जी का जीवन काल सन् 1469 से सन् 1539 तक रहा था। यह भविष्यवाणी है, भूतवाणी नहीं है। इसलिए उस सज्जन का तर्क गलत है। सन्त रामपाल दास जी नास्त्रेदमस के उचित पात्र हैं।

4. सैन्चरी नं. 1 प्रश्न नं. 76 में स्पष्ट किया है कि उस महान सायरन की माता जी तीन बहनें होंगी। (संत रामपाल दास जी महाराज की माता जी तीन बहनें तथा तीन भाई थे)

5. उस महान संत के दो पुत्र तथा दो पुत्री होंगी।

(संत रामपाल दास जी महाराज के दो पुत्र तथा दो पुत्री संतान रूप में हैं।)

"नास्त्रेदमस के समर्थन में अन्य भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियाँ"

1. इंग्लैण्ड के ज्योतिषी 'कीरो' ने सन् 1925 में लिखी पुस्तक में भविष्यवाणी की है, बीसवीं सदी अर्थात् सन् 2000 ई. के उत्तरार्द्ध में (सन् 1950 के पश्चात् उत्पन्न सन्त) ही विश्व में 'एक नई सभ्यता' लाएगा जो सम्पूर्ण विश्व में फैल जावेगी। भारत का वह एक व्यक्ति सारे संसार में ज्ञानक्रांति ला देगा।

2. भविष्यवक्ता ''श्री वेजीलेटिन'' के अनुसार 20वीं सदी के उत्तरार्द्ध में, विश्व में आपसी प्रेम का अभाव, मानवता का ह्रास, माया संग्रह की दौड़, लूट व राज नेताओं का अन्यायी हो जाना आदि-२ बहुत से उत्पात देखने को मिलेगें। परन्तु भारत से उत्पन्न हुई शांति भ्रातृत्व भाव पर आधारित नई सभ्यता, संसार में-देश, प्रांत और जाति की सीमायें तोड़कर विश्वभर में अमन व चैन उत्पन्न करेगी।

3. अमेरिका की महिला भविष्यवक्ता ''जीन डिक्सन'' के अनुसार 20वीं सदी के अंत से पहले विश्व में एक घोर हाहाकार तथा मानवता का संहार होगा। वैचारिक युद्ध के बाद आध्यात्मिकता पर आधारित एक नई सभ्यता सम्भवतः भारत के ग्रामीण परिवार के व्यक्ति के नेतृत्व में जमेगी और संसार से युद्ध को सदा-सदा के लिए विदा कर देगी।

4. अमेरिका के ''श्री एण्डरसन'' के अनुसार 20वीं सदी के अन्त से पहले या 21वीं सदी के प्रथम दशक में विश्व में असभ्यता का नंगा तांडव होगा। इस बीच भारत के एक देहात का एक धार्मिक व्यक्ति, एक मानव, एक भाषा और एक झण्डा की रूपरेखा का संविधान बनाकर संसार को सदाचार, उदारता, मानवीय सेवा व प्यार का सबक देगा। यह मसीहा सन् 1999 तक विश्व में आगे आने वाले हजारों वर्षों के लिए धर्म व सुख-शांति भर देगा।

5. हॉलैण्ड के भविष्यदृष्टा ''श्री गेरार्ड क्राइसे'' के अनुसार 20 वीं सदी के अन्त से पहले या 21 वीं सदी के प्रथम दशक में भयंकर युद्ध के कारण कई देशों का अस्तित्व ही मिट जावेगा। परन्तु भारत का एक महापुरूष सम्पूर्ण विश्व को मानवता के एक सूत्र में बांध देगा व हिंसा, फूट-दुराचार, कपट आदि संसार से सदा के लिए मिटा देगा।

6. अमेरिका के भविष्वक्ता ''श्री चार्ल्स क्लार्क'' के अनुसार 20 वीं सदी के अन्त से पहले एक देश विज्ञान की उन्नति में सब देशों को पछाड़ देगा परन्तु भारत की प्रतिष्ठा विशेषकर इसके धर्म और दर्शन से होगी, जिसे पूरा विश्व अपना लेगा, यह धार्मिक क्रांति 21 वीं सदी के प्रथम दशक में सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित करेगी और मानव को आध्यात्मिकता पर विवश कर देगी।

7. हंगरी की महिला ज्योतिषी ''बोरिस्का'' के अनुसार सन् 2000 ई. से पहले-पहले उग्र परिस्थितियों हत्या और लूटमार के बीच ही मानवीय सद्गुणों का विकास एक भारतीय फरिश्ते के द्वारा भौतिकवाद से सफल संघर्ष के फलस्वरूप होगा, जो चिरस्थाई रहेगा, इस आध्यात्मिक व्यक्ति के बड़ी संख्या में छोटे-छोटे

लोग ही अनुयायी बनकर भौतिकवाद को आध्यात्मिकता में बदल देगें।

8. फ्रांस के डॉ. जूलर्वन के अनुसार सन् 1990 के बाद योरोपीय देश भारत की धार्मिक सभ्यता की ओर तेजी से झुकेंगे। सन् 2000 तक विश्व की आबादी 640 करोड़ के आस-पास होगी। भारत से उठी ज्ञान की धार्मिक क्रांति नास्तिकता का नाश करके आँधी तूफान की तरह सम्पूर्ण विश्व को ढक लेगी। उस भारतीय महान आध्यात्मिक व्यक्ति के अनुयाई देखते-देखते एक संस्था के रूप में 'आत्मशक्ति' से सम्पूर्ण विश्व पर प्रभाव जमा लेंगे।

9. फ्रांस के ''नास्त्रेदमस'' के अनुसार विश्व भर में सैनिक क्रांतियों के बाद थोड़े से ही अच्छे लोग संसार को अच्छा बनाऐंगे। जिनका महान् धर्मनिष्ठ विश्वविख्यात नेता 20 वीं सदी के अन्त और 21 वीं सदी की शुरूआत में किसी पूर्वी देश से जन्म लेकर भ्रातृवृत्ति व सौजन्यता द्वारा सारे विश्व को एकता के सूत्र में बांध देगा। (नास्त्रेदमस शतक 1 श्लोक 50 में प्रमाणित कर रहा है) तीन ओर से सागर से घिरे द्वीप में उस महान संत का जन्म होगा। उस समय तत्व ज्ञान के अभाव से अज्ञान अंधेरा होगा। नैतिकता का पतन होकर, हाहाकार मचा होगा। वह शायरन (धार्मिक नेता) गुरुवर अर्थात् गुरुजी को वर (श्रेष्ठ) मान कर अपनी साधना करेगा तथा करवाएगा। वह धार्मिक नेता (तत्वदर्शी सन्त) अपने धर्म बल अर्थात् भक्ति की शक्ति से तथा तत्वज्ञान द्वारा सर्व राष्ट्रों को नतमस्तक करेगा। एशिया में उसे रोकना अर्थात् उस के प्रचार में बाधा करना पागलपन होगा। (शतक 1 श्लोक 50) (सेंचुरी-I, कन्ना-50)

10. इजरायल के प्रो.हरार के अनुसार भारत देश का एक दिव्य महापुरूष मानवतावादी विचारों से सन् 2000 ई. से पहले-पहले आध्यात्मिक क्रांति की जड़े मजबूत कर लेगा व सारे विश्व को उनके विचार सुनने को बाध्य होना पड़ेगा। भारत के अधिकतर राज्यों में राष्ट्रपति शासन होगा, पर बाद में नेतृत्व धर्मनिष्ठ वीर लोगों पर होगा। जो एक धार्मिक संगठन के आश्रित होगें।

11. नार्वे के श्री आनन्दाचार्य की भविष्यवाणी के अनुसार, सन् 1998 के बाद एक शक्तिशाली धार्मिक संस्था भारत में प्रकाश में आवेगी, जिसके स्वामी एक गृहस्थ व्यक्ति की आचार संहिता का पालन सम्पूर्ण विश्व करेगा। धीरे-धीरे भारत औद्योगिक, धार्मिक और आर्थिक दृष्टि से विश्व का नेतृत्व करेगा और उसका विज्ञान (आध्यात्मिक तत्वज्ञान) ही पूरे विश्व को मान्य होगा।

उपरोक्त भविष्यवाणियों के अनुसार ही आज विश्व में घटनाएँ घट रही हैं। युग परिवर्तन प्रकृति का अटल सिद्धांत है। वैदिक दर्शन के अनुसार चार युगों- सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर और कलयुग की व्यवस्था है। जब पृथ्वी पर पापियों का एक छत्र साम्राज्य हो जाता है तब भगवान पृथ्वी पर मानव रूप में प्रकट होता है। मानवता के इस पूर्ण विकास का काम अनादि काल से भारत ही करता आया है। इसी पुण्यभूमि पर अवतारों का अवतरण अनादि काल से होता आ रहा है।

लेकिन कैसी विडम्बना है कि ऋषि-मुनियों महापुरूषों व अवतारों के जीवन

काल में उस समय के शासन व्यवस्था व जनता ने उनकी दिव्य बातों व आदर्शों पर ध्यान नहीं दिया और उनके अन्तर्ध्यान होने पर दूगने उत्साह से उनकी पूजा शुरू कर पूजने लग गये। यह भी एक विडम्बना कि हम जीवंत और समय रहते उनकी नहीं मानते अपितु उनका विरोध व अपमान ही करते रहे हैं। कुछ स्वार्थी तत्व जनता को भ्रमित करके परम सन्त को बदनाम करके बाधक बनते हैं। यह उक्ति हर युग में चरितार्थ होती आई है, और आज भी हो रही है।

जो महापुरूष हजारों कष्टों को सहन कर अपनी तपस्या व सत्य पर अडिग रहता है उनकी बात असत्य नहीं हो सकती। सत्य पर अडिग रहते हुए ईसा मसीह ने अपने शरीर में कीलों की भयंकर पीड़ा को झेला, सुकरात ने जहर का प्याला पिया, श्री राम तथा श्री कृष्ण जी को भी यातनाओं का शिकार होना पड़ा।

ईसा मसीह ने कहा था कि- ''पृथ्वी और आकाश टल सकते हैं, सूर्य का अटल सिद्धांत है उदय-अस्त, वो भी निरस्त हो सकता है, लेकिन मेरी बातें कभी झूठी नहीं हो सकती है।''

सज्जनों ! यदि आज के करोड़ों मानव उस परमतत्व के ज्ञाता सन्त को ढूंढकर, स्वीकार कर, उनके बताए पथानुसार, अपनी जीवन शैली को सुधार लेंगे तो पूरे विश्व में सद्भावना, आपसी भाई-चारा, दया तथा सद्भक्ति का वातावर्ण हो जाएगा। वर्तमान का मानव बुद्धिजीवी है इसलिए उस सन्त के विचारों को अवश्य स्वीकार करेगा तथा धन्य होगा। वह सन्त है जगत् गुरु तत्वदर्शी सन्त रामपाल जी महाराज। कृप्या पढ़ें सन्त रामपाल जी महाराज की संक्षिप्त जीवनी जो सर्व भविष्यवाणियों पर खरी उतर रही है।

"संत रामपाल दास जी महाराज का संक्षिप्त जीवन परिचय"

संत रामपाल जी का जन्म 8 सितम्बर 1951 को गांव धनाना जिला सोनीपत हरियाणा में एक जाट किसान परिवार में हुआ। पढ़ाई पूरी करके हरियाणा प्रांत में सिंचाई विभाग में जूनियर इंजिनियर की पोस्ट पर 18 वर्ष कार्यरत रहे। सन् 1988 में परम संत रामदेवानंद जी से दीक्षा प्राप्त की तथा तन-मन से सक्रिय होकर स्वामी रामदेवानंद जी द्वारा बताए भक्ति मार्ग से साधना की तथा परमात्मा का साक्षात्कार किया।

संत रामपाल जी को नाम दीक्षा 17 फरवरी 1988 को फाल्गुन महीने की अमावस्या को रात्री में प्राप्त हुई। उस समय संत रामपाल जी महाराज की आयु 37 वर्ष थी। उपदेश दिवस (दीक्षा दिवस) को संतमत में उपदेशी भक्त का आध्यात्मिक जन्मदिन माना जाता है।

उपरोक्त विवरण श्री नास्त्रेदमस जी की उस भविष्यवाणी से पूर्ण मेल खाता है जो नास्त्रेदमस द्वारा लिखी पुस्तक के पृष्ठ संख्या 44-45 पर लिखी है। "जिस समय उस तत्वदृष्टा शायरन का आध्यात्मिक जन्म होगा उस दिन अंधेरी अमावस्या होगी। उस समय उस विश्व नेता की आयु 16, 20, 25 वर्ष नहीं होगी,

वह तरुण नहीं होगा, बल्कि वह प्रौढ़ होगा और वह 50 और 60 वर्ष के बीच की उम्र में संसार में प्रसिद्ध होगा। वह सन् 2006 होगा।"

सन् 1993 में स्वामी रामदेवानंद जी महाराज ने आपको सत्संग करने की आज्ञा दी तथा सन् 1994 में नामदान करने की आज्ञा प्रदान की। भक्ति मार्ग में लीन होने के कारण जे.ई. की पोस्ट से त्यागपत्र दे दिया जो हरियाणा सरकार द्वारा 16-5-2000 को पत्र क्रमांक 3492-3500, तिथि 16-5-2000 के तहत स्वीकृत है। सन् 1994 से 1998 तक संत रामपाल जी महाराज ने घर-घर, गांव-गांव, नगर-नगर में जाकर सत्संग किया। बहु संख्या में अनुयाई हो गये। साथ-साथ ज्ञानहीन संतों का विरोध भी बढ़ता गया। सन् 1999 में गांव करौंथा जिला रोहतक (हरियाणा) में सतलोक आश्रम करौंथा की स्थापना की तथा एक जून 1999 से 7 जून 1999 तक परमेश्वर कबीर जी के प्रकट दिवस पर सात दिवसीय विशाल सत्संग का आयोजन करके आश्रम का प्रारम्भ किया तथा महीने की प्रत्येक पूर्णिमा को तीन दिन का सत्संग प्रारम्भ किया। दूर-दूर से श्रद्धालु सत्संग सुनने आने लगे तथा तत्वज्ञान को समझकर बहुसंख्या में अनुयाई बनने लगे। चंद दिनों में संत रामपाल महाराज जी के अनुयाइयों की संख्या लाखों में पहुंच गई। जिन ज्ञानहीन संतों व ऋषियों के अनुयाई संत रामपाल जी के पास आने लगे तथा अनुयाई बनने लगे फिर उन अज्ञानी आचार्यों तथा सन्तों से प्रश्न करने लगे कि आप सर्व ज्ञान अपने सद्ग्रंथों के विपरीत बता रहे हो।

यजुर्वेद अध्याय 8 मंत्र 13 में लिखा है कि पूर्ण परमात्मा अपने भक्त के सर्व अपराध (पाप) नाश (क्षमा) कर देता है। आपकी पुस्तक जो हमने खरीदी है उसमें लिखा है कि ''परमात्मा अपने भक्त के पाप क्षमा (नाश) नहीं करता। आपकी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 7 में लिखा है कि सूर्य पर पृथ्वी की तरह मनुष्य तथा अन्य प्राणी वास करते हैं। इसी प्रकार पृथ्वी की तरह सर्व पदार्थ हैं। बाग, बगीचे, नदी, झरने आदि, क्या यह सम्भव है। पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 1 में लिखा है कि परमात्मा सशरीर है। अग्ने तनुः असि। विष्णवै त्वां सोमस्य तनुर् असि।। इस मंत्र में दो बार गवाही दी है कि परमेश्वर सशरीर है। उस अमर पुरुष परमात्मा का सर्व के पालन करने के लिए शरीर है अर्थात् परमात्मा जब अपने भक्तों को तत्वज्ञान समझाने के लिए कुछ समय अतिथि रूप में इस संसार में आता है तो अपने वास्तविक तेजोमय शरीर पर हल्के तेजपुंज का शरीर ओढ कर आता है। इसलिए उपरोक्त मंत्र में दो बार प्रमाण दिया है। इस तरह के तर्क से निरूत्तर होकर अपने अज्ञान का पर्दा फास होने के भय से उन अंज्ञानी संतों, महंतों व आचार्यो ने सतलोक आश्रम करौंथा के आसपास के गांवों में संत रामपाल जी महाराज को बदनाम करने के लिए दुष्प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया तथा 12-7-2006 को संत रामपाल को जान से मारने तथा आश्रम को नष्ट करने के लिए आप तथा अपने अनुयाइयों से सतलोक आश्रम पर आक्रमण करवाया। पुलिस ने रोकने की कोशिश की जिस कारण से कुछ उपद्रवकारी चोटिल हो

गये। सरकार ने सतलोक आश्रम को अपने आधीन कर लिया तथा संत रामपाल जी महाराज व कुछ अनुयाइयों पर झूठा केस बना कर जेल में डाल दिया। इस प्रकार 2006 में संत रामपाल जी महाराज विख्यात हुए। भले ही अंजानों ने झूठे आरोप लगाकर संत को प्रसिद्ध किया परन्तु संत निर्दोष है। प्रिय पाठको (नास्त्रेदमस) की भविष्यवाणी को पढ़कर सोचेगें कि संत रामपाल जी को इतना बदनाम कर दिया है, कैसे संभव होगा कि विश्व को ज्ञान प्रचार करेगा। उनसे प्रार्थना है कि परमात्मा पल में परिस्थिती बदल सकता है।

कबीर, साहेब से सब होत है, बंदे से कछु नांहि।
राई से पर्वत करे, पर्वत से फिर राई।।

परमेश्वर कबीर जी अपने बच्चों के उद्धार के लिए शीघ्र ही समाज को तत्वज्ञान द्वारा वास्तविकता से परिचित करवाएंगे, फिर पूरा विश्व संत रामपाल जी महाराज के ज्ञान का लोहा मानेगा।

संत रामपाल जी महाराज सन् 2003 से अखबारों व टी वी चैनलों के माध्यम से सत्य ज्ञान का प्रचार कर अन्य धर्म गुरुओं से कह रहे हैं कि आपका ज्ञान शास्त्रविरूद्ध अर्थात् आप भक्त समाज को शास्त्ररहित पूजा करवा रहे हैं और दोषी बन रहे हैं। यदि मैं गलत कह रहा हूँ तो इसका जवाब दो आज तक किसी भी संत ने जवाब देने की हिम्मत नहीं की।

संत रामपाल जी महाराज को ई.सं. (सन्) 2001 में अक्तुबर महीने के प्रथम बृहस्पतिवार को अचानक प्रेरणा हुई कि "सर्व धर्मों के सद्ग्रन्थों का गहराई से अध्ययन कर" इस आधार पर सर्वप्रथम पवित्र श्रीमद् भगवद्गीता जी का अध्ययन किया तथा पुस्तक 'गहरी नजर गीता में' की रचना की तथा उसी आधार पर सर्वप्रथम राजस्थान प्रांत के जोधपुर शहर में मार्च 2002 में सत्संग प्रारंभ किया। इसलिए नास्त्रेदमस जी ने कहा है कि विश्व धार्मिक हिन्दू संत (शायरन) पचास वर्ष की आयु में अर्थात् 2001 ज्ञेय ज्ञाता होकर प्रचार करेगा। संत रामपाल जी महाराज का जन्म पवित्र हिन्दू धर्म में सन् (ई.सं.) 1951 में 8 सितम्बर को गांव धनाना जिला सोनीपत, प्रांत हरियाणा (भारत) में एक जाट किसान परिवार में हुआ। इस प्रकार सन् 2001 में संत रामपाल जी महाराज की आयु पचास वर्ष बनती है, सो नास्त्रेदमस के अनुसार खरी है। इसलिए वह विश्व धार्मिक नेता संत रामपाल जी महाराज ही हैं जिनकी अध्यक्षता में भारतवर्ष पूरे विश्व पर राज्य करेगा। पूरे विश्व में एक ही ज्ञान (भक्ति मार्ग) चलेगा। एक ही कानून होगा, कोई दुःखी नहीं रहेगा, विश्व में पूर्ण शांति होगी। जो विरोध करेंगे अंत में वे भी पश्चाताप करेंगे तथा तत्वज्ञान को स्वीकार करने पर विवश होंगे और सर्व मानव समाज मानव धर्म का पालन करेगा और पूर्ण मोक्ष प्राप्त करके सतलोक जाएंगे।

जिस तत्वज्ञान के विषय में नास्त्रेदमस जी ने अपनी भविष्यवाणी में उल्लेख किया है कि उस विश्व विजेता संत के द्वारा बताए शास्त्र प्रमाणित तत्व ज्ञान के सामने पूर्व के सर्व संत निष्प्रभ (असफल) हो जाएंगे तथा सर्व को नम्र होकर झुकना पड़ेगा। उसी के विषय में परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी ने अपनी अमृत

वाणी में पवित्र 'कबीर सागर' ग्रंथ में (जो संत धर्मदास जी द्वारा लगभग 550 वर्ष पूर्व लीपीबद्ध किया गया है) कहा है कि एक समय आएगा जब पूरे विश्व में मेरा ही ज्ञान चलेगा। पूरा विश्व शांति पूर्वक भक्ति करेगा। आपस में विशेष प्रेम होगा, सतयुग जैसा समय (स्वर्ण युग) होगा। परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ द्वारा बताए ज्ञान को संत रामपाल जी महाराज ने समझा है। इसी ज्ञान के विषय में कबीर साहेब जी ने अपनी वाणी में कहा है कि :-

कबीर, और ज्ञान सब ज्ञानड़ी, कबीर ज्ञान सो ज्ञान।
जैसे गोला तोब का, करता चले मैदान।।

भावार्थ है कि यह तत्वज्ञान इतना प्रबल है कि इसके समक्ष अन्य संतों व ऋषियों का ज्ञान टिक नहीं पाएगा। जैसे तोब यंत्र का गोला जहां भी गिरता है वहां पर सर्व किलों तक को ढहा कर साफ मैदान बना देता है।

यही प्रमाण संत गरीबदास जी (छुड़ानी, जिला झज्जर, हरियाणा वाले) ने दिया है कि सतगुरु (तत्वदर्शी संत परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ का भेजा हुआ) दिल्ली मण्डल में आएगा।

"गरीब, सतगुरु दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरणी सूम जगायसी"

परमात्मा की भक्ति बिना कंजूस हो गए व्यक्तियों को जगाएगा। गांव धनाना, जिला सोनीपत पहले दिल्ली शासित क्षेत्र में पड़ता था। इसलिए संत गरीबदास जी महाराज ने कहा है कि सतगुरु (वास्तविक ज्ञान जानने वाला संत अर्थात् तत्व दृष्टा संत) दिल्ली मण्डल में आएगा फिर कहा है कि :-

"साहेब कबीर तख्त खवासा, दिल्ली मण्डल लीजै वासा"

भावार्थ है कि परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ के तख्त (दरबार) का ख्वास (नौकर) अर्थात् परमेश्वर का नुमायंदा (प्रतिनिधि) दिल्ल मण्डल में वास करेगा अर्थात् वहां उत्पन्न होगा। प्रथम अपने हिन्दू बंधुओं को तत्वज्ञान से परिचित करवाएगा। बुद्धिमान हिन्दू ऐसे जागेंगे जैसे कोई हड़बड़ा कर जागता है अर्थात् उस संत के द्वारा बताए तत्व ज्ञान को समझ कर अविलम्ब उसकी शरण ग्रहण करेंगे। फिर पूरा विश्व उस तत्वदर्शी हिन्दू संत के ज्ञान को स्वीकार करेगा। यह भविष्यवाणी श्री नास्त्रेदमस जी ने भी की है। नास्त्रेदमस जी ने यह भी लिखा है कि मुझे दुःख इस बात का है कि उससे परिचित न होने के कारण मेरा शायरन (तत्वदृष्टा संत) उपेक्षा का पात्र बना है। हे बुद्धिमान मानव ! उसकी उपेक्षा ना करो। वह तो सिंहासनस्थ करके (आसन पर बैठा कर) अराध्य देव (इष्टदेव) रूप में मान करने योग्य है। वह हिन्दू धार्मिक संत शायरन आदि पुरुष (पूर्ण परमात्मा) का अनुयाई जगत् का तारणहार है।

नास्त्रेदमस जी भविष्य वक्ता ने पुस्तक पृष्ठ 41-42 पर तीन शब्द का उल्लेख किया है। कहा है कि वह विश्व विजेता तत्वदृष्टा संत क्रुरचन्द्र अर्थात् काल की दुःखदाई भूमि से छुड़ा कर अपने आदि अनादि पूर्वजों के साथ वारिस बनाएगा तथा मुक्ति दिलाएगा। यहां पर उपदेश मंत्र की ओर संकेत है कि वह

शायरन केवल तीन शब्द (ओम्-तत्-सत्) ही मंत्र जाप देगा। इन तीन शब्दों के साथ मुक्ति का कोई अन्य शब्द न चिपकाएगा। यही प्रमाण पवित्र ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 90 मंत्र 16 में, सामवेद श्लोक संख्या 822 तथा श्रीमद् भगवत् गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में है कि पूर्ण संत (तत्वदर्शी संत) तीन मंत्र (ओम्-तत्-सत् जिनमें तत् तथा सत् सांकेतिक हैं) दे कर पूर्ण परमात्मा (आदि पुरुष) की भक्ति करवा कर जीव को काल-जाल से मुक्त करवाता है। फिर वह साधक की भक्ति कमाई के बल से वहां चला जाता है जहां आदि सृष्टी के अच्छे प्राणी रहते हैं। जहां से यह जीव अपने पूर्वजों को छोड़ कर क्रुरचन्द्र (काल प्रभु) के साथ आकर इस दुःखदाई लोक में फंस कर कष्ट पर कष्ट उठा रहा है। नास्त्रेदमस जी ने यह भी स्पष्ट किया है कि मध्य काल अर्थात् बिचली पीढ़ी हिन्दू धर्म का आदर्श जीवन जीएंगे। शायरन (तत्वदृष्टा संत) अपने ज्ञान से दैदिप्यमान उतंग ऊँचा स्वरूप अर्थात् सर्व श्रेष्ठ शास्त्रानुकूल भक्ति विधान फिर से बिना शर्त उजागर करवाएगा ओर मानवी संस्कृति अर्थात् मानव धर्म के लक्षण निर्धोक (निष्कपट भाव से) संवारेगा। (मधल्या कालात हिन्दू धर्मांचे व हिन्दुच्या आदर्शवत् झालेल - यह मराठी भाषा में पृष्ठ 42 पर लिखा है कि उपरोक्त भावार्थ है कि बिचली पीढ़ी का उद्धार शायरन करेगा। यह उल्लेख पृष्ठ 42 की हिन्दी लिखना रह गया था इसलिए यहां लिख दिया है तथा स्पष्टीकरण भी दिया है। यही प्रमाण स्वयं पूर्ण परमात्मा कबीर जी ने कहा है कि

धर्मदास तोहे लाख दुहाई, सारज्ञान व सारशब्द कहीं बाहर न जाई।
सारनाम बाहर जो परही, बिचली पीढ़ी हंस नहीं तर ही।।
सारज्ञान तब तक छुपाई, जब तक द्वादस पंथ न मिट जाई)।

जैसे ई.सं.(सन्) 1947 में भारतवर्ष अंग्रेजों से मुक्त हुआ। उससे पहले हिन्दुस्तान में शिक्षा नहीं थी। सन् 1951 में संत रामपाल जी महाराज को परमेश्वर जी ने पृथ्वी पर भेजा। सन् 1947 से पहले कलियुग की प्रथम पीढ़ी जानें तथा 1947 से बिचली पीढ़ी प्रारम्भ हुई है। यह एक हजार वर्ष तक सत्य भक्ति करेगी। इस दौरान जो पूर्ण निश्चय के साथ भक्ति करेगा वह सतलोक चला जाएगा। जो सतलोक नहीं जा सके तथा कभी भक्ति की, कभी छोड़ दी, परंतु गुरु द्रोही नहीं हुए वे फिर हजारों मनुष्य जन्म इसी कलियुग में प्राप्त करेंगे क्योंकि यह उनकी शास्त्रविधि अनुसार साधना का परिणाम होगा। इस प्रकार कई हजारों वर्षों तक कलियुग का समय वर्तमान से भी अच्छा चलेगा। फिर अंत की पीढ़ी भक्ति रहित उत्पन्न होगी क्योंकि शुभ कमाई जो भक्ति युग में की है वह बार-२ जन्म प्राप्त करके खर्च (समाप्त) कर दी होगी। इस प्रकार कलियुग के अंत की पीढ़ी कृतघनी होगी। वे भक्ति नहीं कर सकेंगी। इसलिए कहा है कि अब कलियुग की बिचली पीढ़ी चल रही है (1947 से)। सन् 2006 से वह शायरन सर्व के समक्ष प्रकट हो चुका है, वह है "संत रामपाल जी महाराज"।

उपरोक्त ज्ञान जो बिचली पीढ़ी व प्रथम तथा अंतिम पीढ़ी वाला संत रामपाल जी महाराज अपने प्रवचनों में वर्षों से बताते आ रहे हैं जो अब नास्त्रेदमस जी की भविष्यवाणी ने भी स्पष्ट कर दिया। इसलिए संत गरीबदास जी महाराज ने कहा है कि - कबीर परमेश्वर की भक्ति पूर्ण संत से उपदेश लेकर करो नहीं तो यह अवसर फिर हाथ नहीं आएगा।

गरीब, समझा है तो सिर धर पांव, बहुर नहीं रे ऐसा दाव।।

भावार्थ है कि यदि आप तत्वज्ञान को समझ गए हैं तो सिर पर पैर रख अर्थात् अतिशिघ्रता से तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से उपदेश लेकर अपना कल्याण करवाओ। यह सुअवसर फिर प्राप्त नहीं होगा। जैसे यह बिचली पीढ़ी (मध्य काल) वाला समय और आपका मानव शरीर तथा तत्वदृष्टा संत प्रकट है। यदि अब भी भक्ति मार्ग पर नहीं लगोगे तो उसके विषय में कहा है कि --

यह संसार समझदा नांही, कहंदा श्याम दुपहरे नूं।
गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे नूं।।

भावार्थ है कि संत गरीबदास जी महाराज कह रहे हैं कि यह भोला संसार शास्त्रविधि रहित साधना कर रहा है जो अति दुःखदाई है, इसी को सुखदाई कह रहा है। जैसे जून मास दोपहर (दिन के बारह बजे) में धूप में खड़ा-२ जल रहा है उसी को सांय बता रहा है। जैसे कोई शराबी व्यक्ति शराब पीकर सड़क पर पड़ा है और उससे कोई कहे कि आप दोपहर की धूप में क्यों जल रहे हो, छांया में चलो। वह शराब के नशे में कहता है कि नहीं सांय है, कौन कहता है कि दोपहर है ? इसी प्रकार जो साधक शास्त्रविधि त्याग कर मनमाना आचरण कर रहे हैं वे अपना जीवन नष्ट कर रहे हैं। उसे त्यागना नहीं चाहते अपितु उसी को सर्व श्रेष्ठ मानकर काल के लोक की आग में जल रहे हैं। संत गरीबदास जी महाराज कह रहे हैं कि इतने प्रमाण मिलने के पश्चात् भी सतसाधना पूर्ण संत के बताए अनुसार नहीं करोगे तो यह अनमोल मानव शरीर तथा बिचली पीढ़ी का भक्ति युग हाथ से निकल जाएगा फिर इस समय को याद करके रोवोगे, बहुत पश्चाताप करोगे। फिर कुछ नहीं बनेगा। परमेश्वर कबीर जी बन्दी छोड़ ने कहा है कि -

आच्छे दिन पाछै गए, सतगुरु से किया ना हेत।
अब पछतावा क्या करे, जब चिड़िया चुग गई खेत।।

सर्व मानव समाज से प्रार्थना करते हैं कि पूर्ण संत रामपाल जी महाराज को पहचानों तथा अपना व अपने परिवार का कल्याण करवाओ। अपने रिश्तेदारों तथा दोस्तों को भी बताओ तथा पूर्ण मोक्ष पाओ। स्वर्ण युग प्रारम्भ हो चुका है। लाखों पुण्य आत्मांए संत रामपाल जी तत्वदर्शी संत को पहचान कर सत्य भक्ति कर रहे हैं, वे अति सुखी हो गए हैं। सर्व विकार छोड़ कर निर्मल जीवन जी रहे हैं।